तरुण छत्तीसगढ़

आम आदमी का अपना दैनिक अखबार

E-mail:
tarunpressraipur@gmail.com
tarun_press@yahoo.co.in

Web:
www.tarunchhattisgarh.in
facebook.TarunChhattisgarh
phone: 0771-2543112

■ रायपुर,बुधवार 12 अगस्त 2026 ■ श्रावण कृष्ण पक्ष-14 ■ वर्ष -42 ■ अंक-135 ■ पृष्ठ 8 ■ डाक संस्करण 13 अगस्त 2026 ■ मूल्य-2.00 रुपये

हवा में फेल हुआ इंडिगो का इंजन

चेन्नई, 12 अगस्त। कोलकाता से आ रही इंडिगो फ्लाइट का मंगलवार रात को इंजन फेल हो गया जिसके बाद विमान की इमरजेंसी लैंडिंग कराई गई। इसके बाद चेन्नई एयरपोर्ट पर फुल इमरजेंसी घोषित कर दी गई। बताया गया कि फ्लाइट के लैंडिंग से ठीक पहले बाएं इंजन में खराबी आ गई थी। एयरपोर्ट्स अथॉरिटी ऑफ इंडिया के अधिकारियों के मुताबिक, कोलकाता से चेन्नई आ रही इंडिगो फ्लाइट 6E-723 (जिसमें 224 लोग सवार थे) ने 11 अगस्त की रात 11:29 बजे फुल इमरजेंसी घोषित की। फ्लाइट को रात 11:30 बजे पहुंचना था, लेकिन लैंडिंग की तैयारी के दौरान पायलट को पता चला कि बायां इंजन खराब हो गया है। इसके बाद एयर ट्रैफिक कंट्रोल को इसकी सूचना दी गई और एयरपोर्ट अधिकारियों ने विमान की सुरक्षित लैंडिंग के लिए इमरजेंसी रिस्पॉन्स उपाय शुरू कर दिए। विमान रात 11.37 बजे रनवे 25 पर सुरक्षित उतरा, जिसमें सवार सभी 224 लोग सुरक्षित थे। रात 11.47 बजे फुल इमरजेंसी हटा ली गई। एयरपोर्ट अधिकारियों ने बताया कि इस घटना के बाद सभी कामकाज सामान्य रहे।

सदन चलने दो, जवाब देने को तैयार हूं: शाह

नई दिल्ली,12 अगस्त। केंद्रीय गृहमंत्री अमित शाह ने संसद में हो रहे गतिरोध को लेकर जवाब दिया है। अमित शाह ने बुधवार को कहा कि सरकार हर मुद्दे पर तैयार है लेकिन विपक्ष सदन को चलने दे। आज 3 बजे से चर्चा शुरू करें। मैं सदन में बैठूंगा, सुनूंगा और कल 3 बजे सबको जवाब दूंगा। अमित शाह का बयान ऐसे समय में आया है जब विपक्ष लगातार राम मंदिर चढ़ावा चोरी और जंतर-मंतर पर पुलिस एक्शन को लेकर संसद में शाह के बयान पर अड़ा था।

ट्रिब्यूनल के काम-काज को लेकर चुनाव आयोग से सुको ने विस्तृत रिपोर्ट मांगी

नई दिल्ली,12 अगस्त। पश्चिम बंगाल में एसआईआर की प्रक्रिया के दौरान मतदाता सूची से जिन लोगों के नाम हटाए गए थे उन्होंने अपील दायर की है। इसकी सुनवाई स्थानीय ट्रिब्यूनल में हो रही है। इस बीच सुप्रीम कोर्ट ने धीमी सुनवाई के लिए फटकार लगाई है। ट्रिब्यूनल के काम-काज को लेकर चुनाव आयोग से विस्तृत रिपोर्ट भी मांगी है। शीर्ष अदालत ने चुनाव आयोग को निर्देश दिया है कि वह ट्रिब्यूनल द्वारा निपटाए गए मामलों का पूरा ब्योरा पेश करे। भारत के मुख्य न्यायाधीश सूर्यकांत, न्यायमूर्ति जॉयमाल्या बागची और न्यायमूर्ति वी मोहना की पीठ ने कांग्रेस नेता अधीर रंजन चौधरी की याचिका पर सुनवाई करते हुए यह निर्देश दिया है। सुनवाई के दौरान सीजेआई सूर्यकांत ने कहा, "मामलों के निपटारे की प्रक्रिया इतनी धीमी नहीं हो सकती है। अभी तो इस गति से सुनवाई हो रही है कि अपीलों पर निर्णय आने से पहले अगले विधानसभा चुनाव की नौबत ना आ जाए।" आपको बता दें कि अधीर रंजन चौधरी ने अपनी याचिका में मांग की थी कि पश्चिम बंगाल के प्रत्येक ब्लॉक स्तर पर SIR ट्रिब्यूनल का गठन किया जाए ताकि प्रभावित लोग आसानी से अपनी अपील दर्ज करा सकें.

जेन-जी को शार्टकट से बचने मोदी की सलाह

युवा लंबा और ज्यादा सार्थक रास्ता चुनें

नईदिल्ली,12 अगस्त। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी का भारत की 'जेन जी' पीढ़ी के लिए एक संदेश है: रील्स, इन्फ्लुएंसर्स और तुरंत संतुष्टि पाने की चाहत वाले इस दौर में शॉर्टकट से सावधान रहें। रेलवे स्टेशनों पर दी जाने वाली एक जानी-पहचानी चेतावनी का ज़िक्र करते हुए, पीएम मोदी ने युवाओं से लंबा और ज़्यादा सार्थक रास्ता चुनने का आग्रह किया। उन्होंने याद दिलाया कि कैसे कुछ लोग फुटब्रिज का इस्तेमाल करने के बजाय रेलवे ट्रैक पार करते हैं, क्योंकि उन्हें यह रास्ता ज़्यादा जल्दी वाला लगता है। उन्होंने कहा कि ऐसी क्रॉसिंग पर लिखी चेतावनी एक बड़ी सीख देती है। उन्होंने कहा शॉर्टकट आपकी ज़िंदगी छोटी कर सकता है। साथ ही, उन्होंने युवाओं को उन इन्फ्लुएंसर्स से सावधान रहने की सलाह दी जो अक्सर उन्हें अलग-अलग दिशाओं में ले जाते हैं। प्रधानमंत्री ने बुधवार को दिल्ली में पूर्व राष्ट्रपति राम नाथ कोविंद की आत्मकथा 'ट्रायम्फ ऑफ़ द इंडियन रिपब्लिक माय लाइफ़, माय स्ट्रगल्स' के लॉन्च के मौके पर ये बातें कहीं। युवाओं से उनकी यह अपील ऐसे

समय में आई है जब उस पीढ़ी से जुड़ने की कोशिश की जा रही है जो हर समय ऑनलाइन रहती है। पीएम मोदी ने कहा अगर आप आगे बढ़ने का कोई रास्ता खोजना चाहते हैं, तो मैं युवाओं से कहूंगा: आप जिसे भी अपना आदर्श मानते हैं, उनकी आत्मकथा ज़रूर पढ़ें।

पिछले महीने 'कॉकरोच जनता पार्टी' नाम के व्यंग्यात्मक प्लेटफ़ॉर्म के नेतृत्व में हुए छात्रों के विरोध-प्रदर्शन के बाद, प्रधानमंत्री का जेन-जी तक पहुंचने का यह एक और प्रयास है। उनकी सोशल मीडिया रणनीति में युवा यूज़र्स के बीच लोकप्रिय भाषा और फ़ॉर्मेट का इस्तेमाल तेज़ी से बढ़ा है। पीएम मोदी ने अब ज़्यादा सेल्फ़ी-स्टाइल वीडियो पोस्ट करना शुरू कर दिया है। उन्होंने दर्शकों का अनौपचारिक अंदाज़ में "हाय, दोस्तों" कहकर स्वागत किया है, "मेरे परिवार में पहला" जैसे वायरल ट्रेंड का इस्तेमाल किया है और सोशल मीडिया पर पारंपरिक भारतीय कपड़ों को दिखाने के लिए GRWM (मेरे साथ तैयार हों) फ़ॉर्मेट को अपनाया है। यह बदलाव नीट-यूजी पेपर लीक को लेकर छात्रों और नौकरी चाहने वालों के देशव्यापी विरोध प्रदर्शनों के बाद आया। ये प्रदर्शन सरकार के लिए एक बड़ी राजनीतिक चुनौती बन गए और आख़िरकार शिक्षा मंत्री धर्मेंद्र प्रधान को इस्तीफ़ा देना पड़ा।

नया कानून आए या नहीं, ध्वनि प्रदूषण पर कार्रवाई जारी रहेगी

रायपुर, 12 अगस्त। छत्तीसगढ़ में ध्वनि प्रदूषण को लेकर हाईकोर्ट ने सरकार और प्रशासन को साफ संदेश दिया है। कोर्ट ने कहा है कि नया कोलाहल नियंत्रण कानून बनने तक मौजूदा नियमों के तहत कार्रवाई में कोई ढिलाई नहीं होनी चाहिए। राज्य सरकार छत्तीसगढ़ कोलाहल नियंत्रण विधेयक, 2026 का मसौदा तैयार कर चुकी है और इसे आगे मंत्रिपरिषद व विधानसभा की प्रक्रिया से गुजरना है। लेकिन जब तक नया कानून लागू नहीं होता, मौजूदा कानून और सरकारी निर्देश पूरी तरह प्रभावी रहेंगे।

मुख्यमंत्री निवास में हरेली पर्व की धूम

रायपुर, 12 अगस्त. छत्तीसगढ़ की लोक परंपराओं, कृषि संस्कृति और ग्रामीण जीवन की आत्मा माने जाने वाले प्रथम पर्व हरेली का भव्य और सांस्कृतिक गरिमा से भरपूर आयोजन नया रायपुर स्थित मुख्यमंत्री निवास में उत्साहपूर्वक किया गया। आयोजन ने राजधानी में छत्तीसगढ़ के गांवों की सोंधी खुशबू और पारंपरिक जीवन शैली को साकार कर दिया। मुख्यमंत्री निवास परिसर को नीम और आम के पत्तों, गेंदे के फूलों तथा पारंपरिक ग्रामीण सजावट से विशेष रूप से सजाया गया था। प्रवेश द्वार से लेकर मुख्य परिसर तक छत्तीसगढ़ी संस्कृति की झलक दिखाई दे रही थी। हरियाली, प्राकृतिक सजावट और लोक अलंकरण ने पूरे वातावरण को उत्सवमय बना दिया। हरेली पर्व के अवसर पर छत्तीसगढ़ के पारंपरिक खेलों का विशेष आकर्षण देखने को मिला। गेड़ी दौड़ ने लोगों में रोमांच और उत्साह भर दिया, वहीं बिल्लस, गोटी और बाटी जैसे ग्रामीण खेलों ने बच्चों, युवाओं और बुजुर्गों सभी को अपनी ओर आकर्षित किया। इन खेलों के माध्यम से नई पीढ़ी को छत्तीसगढ़ की पारंपरिक खेल संस्कृति से परिचित कराने का संदेश भी दिया गया। आयोजन में छत्तीसगढ़ के पारंपरिक व्यंजनों की सुगंध चारों ओर फैल रही थी। ठेरही, खुरमी, बड़ा सहित अनेक पारंपरिक पकवानों का स्वाद लोगों ने उत्साहपूर्वक लिया। ग्रामीण अंचलों में विशेष अवसरों पर बनाए जाने वाले इन व्यंजनों ने लोगों को अपने गांव और पारिवारिक उत्सवों की याद दिला दी। लोक कलाकारों ने छत्तीसगढ़ी लोकगीत और लोकनृत्य की मनमोहक प्रस्तुतियां देकर पूरे आयोजन को जीवंत बना दिया। मांदर, ढोलक और पारंपरिक वाद्ययंत्रों की थाप पर कलाकार झूमते नजर आए। लोकधुनों पर उपस्थित जनसमूह भी तालियां बजाते और उत्साह से सहभागी बनते दिखाई दिए। आयोजन में छत्तीसगढ़ की सांस्कृतिक विविधता और लोक कला की समृद्ध परंपरा का प्रभावशाली प्रदर्शन हुआ। कार्यक्रम का एक विशेष आकर्षण रहचुली रहा, जिसका आनंद बच्चों से लेकर बड़ों तक सभी ने लिया। ग्रामीण मेलों और पारंपरिक उत्सवों की पहचान मानी जाने वाली रहचुली ने आयोजन में गांव के मेले जैसा आनंदमय वातावरण बना दिया। हरेली पर्व मूलतः कृषि और प्रकृति से जुड़ा उत्सव है। इस दिन किसान अपने कृषि औजारों की पूजा कर अच्छी फसल और समृद्धि की कामना करते हैं।

कंगना रनौत ने नसीरुद्दीन शाह को कहा लोमड़ी

नईदिल्ली,12 अगस्त। दिल्ली में छात्रों के विरोध-प्रदर्शन के दौरान बॉलीवुड सेलेब्रिटीज की चुप्पी पर नसीरुद्दीन शाह की टिप्पणी से शुरू हुई बयानबाजी के बीच, एक्टर और बीजेपी सांसद कंगना रनौत ने अनुभवी एक्टर पीयूष मिश्रा द्वारा नसीरुद्दीन शाह की आलोचना का समर्थन किया है। रनौत ने अपनी इंस्टाग्राम स्टोरीज पर मिश्रा के हालिया बयानों वाली एक समाचार रिपोर्ट साझा की और सीधे नसीरुद्दीन शाह को संबोधित किया। शाह द्वारा कुछ मशहूर हस्तियों की तुलना "मुंह में हड्डी वाला कुत्ता जो भौंक नहीं सकता" से की गई तुलना का ज़िक्र करते हुए, रनौत ने लिखा कि सच तो ये है हर कोई

किसी ना किसी का कुत्ता है, लेकिन मुझे इस बात का गर्व है कि मैं जिस घर (देश) की रोटी खाती हूं उसकी रखवाली करती हूं/उसके लिए लड़की हूं। नासिर साहब खाते तो इस देश का हैं लेकिन लड़ते पड़ोसी देश के लिए हैं। उन्होंने आगे कुत्ते से तुलना का बचाव करते हुए कहा कि आज के समय में इंसानों को कुत्ता कहलाना एक तारीफ़ है क्योंकि वफादारी और क्यूटनेस बहुत दुर्लभ है। मैं नसीरुद्दीन की तरह लोमड़ी के बजाय एक कुत्ता बनना पसंद करूंगी। ये टिप्पणियाँ झारखंड लोक सेवा आयोग के पेपर लीक को लेकर छात्रों के विरोध-प्रदर्शन के दौरान शाह की आलोचना करने वाले मिश्रा के बयानों के बाद आई हैं। मिश्रा ने छात्रों के प्रदर्शनों पर बॉलीवुड की चुप्पी के बारे में शाह की पिछली बातों को चुनौती दी और झारखंड में छात्रों के जारी विरोध-प्रदर्शनों की ओर ध्यान दिलाया।

11 अगस्त को, कंगना रनौत ने संसद में विपक्ष के नेता राहुल गांधी के खिलाफ सीधे तौर पर विरोध जताया और "राहुल गांधी जवाब दो" लिखा हुआ बैनर दिखाया। उन्होंने झारखंड में भर्ती परीक्षाओं में गड़बड़ियों के खिलाफ प्रदर्शन कर रहे छात्रों पर पुलिस द्वारा किए गए लाठीचार्ज के मामले में गांधी से जवाबदेही की मांग की; झारखंड में कांग्रेस पार्टी की सहयोगी सरकार है। रनौत ने गांधी पर आरोप लगाया कि गृह मंत्री अमित शाह के जवाब देने के लिए तैयार होने के बावजूद, उन्होंने छात्र विरोध-प्रदर्शनों पर एक व्यवस्थित बहस से किनारा किया।

जतमई-घटारानी, राजिमधाम में नागपुर चोर गैंग सक्रिय

गरियाबंद/महासमुंद, 12 अगस्त। सावन में जतमई, घटारानी, राजिम धाम पहुंचने वाले श्रद्धालुओं को निशाना बनाने वाली नागपुर की महिला चोर गैंग को पुलिस ने पकड़ने में कामयाबी पाई है। पकड़ी गई महिलाएं कार में घूमकर पहले रेकी किया करती थीं। दरअसल, 9 अगस्त को जतमई धाम में आरंग निवासी नीलम चक्रधर के गले से 2 तोले की सोने की चेन पार कर दी गई थी। चेन की कीमत करीब 3 लाख रुपये बताई जा रही है। महिला ने तत्काल पुलिस को सूचना दी। CCTV फुटेज और कार नंबर के आधार पर पुलिस ने महासमुंद के पास नाकेबंदी की। इस दौरान कार क्रमांक MP 49 SB 2471 को रोका गया। तलाशी में कार से चोरी का सामान बरामद हुआ। कार में सवार 7 संदिग्ध महिलाओं को हिरासत में लिया गया।

पकड़ी गई 7 महिलाएं, कार में घूमकर करती थीं रेकी

पूछताछ में पता चला कि सभी 7 महिलाएं महाराष्ट्र के नागपुर और आसपास की रहने वाली हैं। इनके नाम – रोनक पातनकर 30, सीमा पात्रे 40, विद्या उफाड़े 30, मुस्कान पात्रे 26, मीना खवड़े 35, नंदिनी पात्रे 30 और छाया उफाड़े 50 हैं। पुलिस के अनुसार ये महिलाएं कार से धार्मिक स्थलों की रेकी करती थीं। भीड़ का फायदा उठाकर महिलाओं के गले, कान से गहने और पर्स पार कर देती थीं। पुलिस को आशंका है कि ये किसी बड़े अंतरराज्यीय गिरोह से जुड़ी हो सकती हैं। घटना के बाद जतमई धाम में श्रद्धालुओं में डर का माहौल है। कई महिलाएं अब आर्टिफिशियल गहने पहनकर दर्शन करने आ रही हैं। पुलिस ने सभी प्रमुख मंदिरों के आसपास सुरक्षा बढ़ाते हुए सादी वर्दी में पुलिस जवानों को तैनात कर रही है।

खाताधारकों से करोड़ों की ठगी,पोस्ट ऑफिस एजेंट गिरफ्तार

जांजगीर-चांपा, 12 अगस्त। जांजगीर-चांपा जिले से करोड़ों रुपये की धोखाधड़ी का बड़ा मामला सामने आया है। चांपा पुलिस ने पोस्ट ऑफिस एजेंट को गिरफ्तार कर 150 से अधिक खाताधारकों से की गई ठगी का खुलासा किया है। आरोपी लोगों से RD खाते में रकम जमा कराने के नाम पर पैसे वसूलता था, लेकिन राशि पोस्ट ऑफिस में जमा नहीं करता था। शुरुआती जांच में एक करोड़ रुपये से अधिक की धोखाधड़ी सामने आने के बाद पुलिस ने मामले की जांच शुरू कर दी है।

टाटा संस के चेयरमैन एन चंद्रशेखरन का इस्तीफा

मुंबई,12 अगस्त। टाटा ग्रुप की होल्डिंग कपंनी टाटा संस के चेयरमैन एन चंद्रशेखरन ने इस्तीफा दे दिया है। चंद्रशेखरन का यह फैसला 18 अगस्त को होने वाली टाटा संस की एजीएम से ठीक पहले आया है हालांकि वे तुरंत इस पद नहीं छोड़ेंगे। उनका मौजूदा कार्यकाल फरवरी 2027 तक है। तब तक चेयरमैन के पद पर बने रहेंगे। 63 साल के चंद्रशेखरन ने अपने इस फैसले की जानकारी टाटा सन्स के बोर्ड को दे दी है। एन चंद्रशेखरन ने अ प ना इस्तीफा टाटा ट्रस्ट्स के चे य र मै न नोएल टाटा से मतभेद के बाद दिया है। नोएल टाटा एन चंद्रशेखरन के के कार्यकाल के विस्तार के खिलाफ थे। इसके बाद उन्होंने इस्तीफा दे दिया है।

महिला बाइक राइडर की सड़क हादसे में मौत

मुंबई से जा रही थी बस्तर

धमतरी,12 अगस्त। मुंबई से बस्तर तक जा रही महिला बाइक राइडर्स ग्रुप के सफर में बड़ा हादसा हो गया है. धमतरी जिले के मरकाटोला के पास राइडर रिद्धि उक्कर (24 साल) हादसे का शिकार हो गई. ट्रेलर से टकराने के बाद वह गंभीर रूप से घायल हो गई. इलाज के दौरान उसकी मौत हो गई. जानकारी के मुताबिक, 23 महिला राइडर्स का समूह महाराष्ट्र के मुंबई से बस्तर की ओर निकला था. इसी दौरान ग्रुप में शामिल महिला राइडर रिद्धि की बाइक धमतरी के मरकाटोला में ट्रेलर से जा टकराई. हादसे में वह गंभीर रूप से घायल हो गई. घायल रिद्धि को अस्पताल में भर्ती कराया गया. जहां इलाज के दौरान उसकी मौत हो गई. घटना के बाद पुलिस मौके पर पहुंची और शव को पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया. वहीं परिजनों को सूचना दे दी गई है. मामले में आगे की कार्रवाई जारी है.

बाल गृहों से किशोरों के फरार होने पर हाईकोर्ट सख्त

156 गार्डों की तैनाती पर केंद्र से मांगा जवाब

बिलासपुर,12 अगस्त। छत्तीसगढ़ में बाल देखभाल संस्थाओं से किशोरों के भागने की घटनाओं को लेकर हाई कोर्ट सख्त है। मुख्य न्यायाधीश रमेश सिन्हा और न्यायमूर्ति रविंद्र कुमार अग्रवाल की डिवीजन बेंच ने मामले की सुनवाई के दौरान केंद्र सरकार को आवश्यक पक्षकार बनाते हुए केंद्रीय गृह मंत्रालय से वित्तीय सहायता पर जवाब मांगा है. दरअसल, महासमुंद के सरकारी आब्जर्वेशन होम से आठ किशोरों के भागने और बिलासपुर की संस्था से चार किशोरों के फरार होने के मामलों में राज्य सरकार ने सुरक्षा व्यवस्था मजबूत करने के लिए 156 सिक्योरिटी गार्ड की मांग की है. इसके लिए केंद्र सरकार से वित्तीय सहायता मांगी गई है. राज्य सरकार ने 8 अगस्त को केंद्रीय महिला एवं बाल विकास मंत्रालय को पत्र भेजकर 26 बाल देखभाल संस्थाओं में 156 सिक्योरिटी गार्ड तैनात करने के लिए सालाना करीब 4.68 करोड़ रुपये के बजट की मांग की है.

रूस ने पूर्व सीजेआई चंद्रचूड़ को आर्बिट्रेटर नियुक्त किया

नई दिल्ली,12 अगस्त। रूस ने यूक्रेन के सरकारी बैंक 'ओशादबैंक' की ओर से इन्वेस्टमेंट ट्रीटी (निवेश संधि) विवाद में भारत के पूर्व चीफ जस्टिस सीजेआई डीवाई चंद्रचूड़ को अपना आर्बिट्रेटर नियुक्त किया है। बार एंड बेंच के अनुसार, यह विवाद रूस की सैन्य कार्रवाई से प्रभावित यूक्रेनी इलाकों में बैंक की संपत्ति और कामकाज से जुड़े दावों से संबंधित है। यह आर्बिट्रेशन यूक्रेन और रूस के बीच 1998 की द्विपक्षीय निवेश संधि के तहत किया जा रहा है। तीन सदस्यों वाले इस ट्रिब्यूनल की अध्यक्षता कोस्टा रिका की आर्बिट्रेटर और पूर्व ट्रेड मिनिस्टर दयाला जिमेनेज करेंगी, जिन्हें रूस और ओशादबैंक ने संयुक्त रूप से चुना था। रिपोर्ट के अनुसार, ग्रीक आर्बिट्रेटर और नेशनल यूनिवर्सिटी ऑफ़ सिंगापुर के प्रोफ़ेसर स्टावरोस ब्रेकोउलाकिस को ओशादबैंक ने ट्रिब्यूनल के तीसरे सदस्य के तौर पर नियुक्त किया है। ओशचादबैंक ने यूक्रेन में अपनी संपत्तियों के नुकसान का दावा किया है। ओशचादबैंक का यह दावा डोनेट्स्क, लुहान्स्क, खेरसॉन और ज़ापोरिज्जिया में मौजूद संपत्तियों और बिज़नेस ऑपरेशन्स से जुड़ा है। यूक्रेनी बैंक का कहना है कि रूस की सैन्य कार्रवाई, और खासकर 2022 में यूक्रेन पर बड़े पैमाने पर हुए हमले के कारण

उसे ये नुकसान उठाना पड़ा। माना जा रहा है कि इस दावे की कीमत करोड़ों डॉलर है। जुलाई 2025 में ओशचादबैंक द्वारा रूस को विवाद का नोटिस भेजे जाने के बाद मध्यस्थता (आर्बिट्रेशन) की प्रक्रिया शुरू हुई थी। रूस द्वारा कथित तौर पर नोटिस का कोई जवाब न दिए जाने के बाद बैंक ने आगे की प्रक्रिया शुरू की। यह मामला दोनों देशों के बीच इन्वेस्टमेंट ट्रीटी (निवेश संधि) के तहत सुना जा रहा है, जो निवेशकों को निवेश से जुड़े कुछ विवादों पर आर्बिट्रेशन (मध्यस्थता) की मांग करने की इजाजत देता है। चंद्रचूड़ ने पहले रूस के प्रस्तावों को ठुकरा दिया था।

यह नियुक्ति इसलिए भी अहम है क्योंकि चंद्रचूड़ ने पहले रूस के उन प्रस्तावों को ठुकरा दिया था जिनमें उन्हें जर्मन एनर्जी कंपनी विंटरशाल डेया और यूक्रेनी एनर्जी कंपनी उक्रेनेर्गो से जुड़े अलग-अलग संधि विवादों में आर्बिट्रेटर (मध्यस्थ) के तौर पर काम करने के लिए कहा गया था। रिपोर्ट के मुताबिक, ये प्रस्ताव उसी दिन दिए गए थे जब परमानेंट कोर्ट ऑफ़ आर्बिट्रेशन ने विंटरशाल मामले की कार्यवाही में चंद्रचूड़ को नियुक्ति करने वाला अधिकारी (अपॉइंटिंग अथॉरिटी) नामित किया था। बाद में, रूस से हुई बातचीत का खुलासा करने के बाद चंद्रचूड़ उस भूमिका से हट गए थे। मौजूदा विवाद में अब वह तीन सदस्यों वाले ट्रिब्यूनल में रूस के नॉमिनी (नामित सदस्य) के तौर पर काम करने के लिए सहमत हो गए हैं। ओशैडबैंक का प्रतिनिधित्व क्विन इमैनुएल उर्कहार्ट एंड सुलिवन के पार्टनर एपामिनोंटास ट्रियांटाफिली और एलेक्स गेबी, तथा एस्टर्स के पार्टनर ओलेक्सी डिडकोव्स्की, एंड्री पोझिदायेव और ओक्साना लेग्का कर रहे हैं। रूस का प्रतिनिधित्व पिना गोल्डबर्ग के पार्टनर एंड्रिया पिना, वकील प्रत्यूष पंजवानी और सीनियर एसोसिएट दिमित्रियोस पापाजॉर्जियो कर रहे हैं।

बेकाबू कार ने गायों को रौंदा, 4 की मौत

रायपुर, 12 अगस्त। छत्तीसगढ़ की राजधानी रायपुर का वीआईपी इलाका अपनी चमक-धमक और शांत माहौल के लिए जाना जाता है, लेकिन बीती रात यहां की रफ्तार ने एक बार फिर खौफनाक मंजर पैदा कर दिया। रात के सन्नाटे को चीरती हुई बेकाबू कार इतनी तेजी से आई कि वहां मौजूद बेजुबान मवेशियों को संभलने का मौका तक नहीं मिला। यह पूरा मामला शहर के व्यस्त और पॉश इलाके तेलीबांधा थाना क्षेत्र का है, जहां देर रात तेज रफ्तार का कहर देखने को मिला।प्रत्यक्षदर्शियों के अनुसार, कार की गति इतनी अधिक थी कि चालक उस पर से अपना नियंत्रण पूरी तरह खो बैठा था।

नदी, पहाड़, और घने जंगल को पार करते हुए नई ऊर्जा के साथ आगे बढ़ रहीं विधायक

■ तरुण छत्तीसगढ़ संवाददाता

कवर्धा, 12 अगस्त। सावन मास की पवित्रता और भगवान भोलेनाथ की भक्ति के साथ पंडरिया विधायक भावना बोहरा द्वारा माँ नर्मदा मंदिर, अमरकंटक से भोरमदेव मंदिर तक निकाली जा रही 151 किलोमीटर की कांवड़ पदयात्रा दूसरे दिन भी पूरे उत्साह और आस्था के साथ जारी रही। यात्रा के दूसरे दिन ग्राम लमनी से वन ग्राम महामाई (खुड़िया) तक कांवड़ियों के साथ पदयात्रा करते हुए भावना बोहरा ने छत्तीसगढ़ की सुख-समृद्धि, शांति, खुशहाली एवं सर्वमंगल की कामना की। यात्रा के दौरान नदी, पहाड़ों, पथरीले रास्तों और घने जंगलों जैसे कठिन मार्गों को पार करते हुए कांवड़ियों के कदम लगातार आगे

बढ़ते रहे। 'बोल बम' और 'हर हर महादेव' के जयघोष से पूरा मार्ग शिवमय नजर आया। कठिन परिस्थितियों के बावजूद कांवड़ियों में उत्साह और उमंग कम होने के बजाय और अधिक बढ़ता गया। 10 अगस्त से 16 अगस्त तक इस कांवड़ पदयात्रा के प्रथम दिन माँ नर्मदा मंदिर अमरकंटक से ग्राम लमनी तक विधायक भावना बोहरा के साथ लगभग 600 कांवड़ियों ने यात्रा पूरी की और आज दूसरे दिन प्रातः ही कांवड़ की पूजा कर यात्रा वन ग्राम महामाई (खुड़िया) में संपन्न हुई।इस अवसर पर विधायक भावना बोहरा ने कहा कि यह यात्रा मेरे लिए केवल 151 किलोमीटर की पदयात्रा नहीं, बल्कि आस्था, संकल्प, साधना और जनकल्याण की भावना से जुड़ी एक आध्यात्मिक यात्रा है। माँ नर्मदा के पावन उद्गम स्थल से भोरमदेव धाम तक का यह मार्ग हमें प्रकृति, संस्कृति और सनातन आस्था से जोड़ रहा है।÷पहाड़ हों, पथरीले रास्ते हों या घने जंगल, महादेव की भक्ति में उठाया गया हर कदम हमें आगे बढ़ने की शक्ति देता है। यात्रा के कठिन रास्तों ने हमारे शरीर की परीक्षा जरूर ली है, लेकिन हर पड़ाव के साथ हमारा उत्साह दोगुना और विश्वास और अधिक प्रबल हुआ है। कांवड़ियों के साथ मिल रहा जनस्नेह और 'बोल बम' का जयघोष हमारी ऊर्जा को लगातार बढ़ा रहा है। सावन के इस पवित्र अवसर पर भगवान भोलेनाथ और माँ नर्मदा से पूरे छत्तीसगढ़ की सुख-समृद्धि, किसानों की खुशहाली, युवाओं के उज्ज्वल भविष्य, माताओं-बहनों के सम्मान और प्रत्येक परिवार के मंगलमय जीवन की प्रार्थना करते हुए हमारी यात्रा निरंतर आगे बढ़ रही है।

स्वतंत्रता दिवस को लेकर महापुरुषों की प्रतिमाओं की कराई जा रही धुलाई

भिलाई, 12 अगस्त। स्वतंत्रता दिवस के राष्ट्रीय पर्व को देखते हुए नगर निगम द्वारा शहर में विशेष साफ-सफाई अभियान चलाया जा रहा है। अभियान के तहत शहर में स्थापित महापुरुषों की प्रतिमाओं की साफ-सफाई एवं धुलाई कराई जा रही है, ताकि 15 अगस्त के अवसर पर प्रतिमाएं स्वच्छ एवं आकर्षक नजर आएं। इसके साथ ही शहर के प्रमुख चौक-चौराहों, सार्वजनिक स्थलों और उनके आसपास के क्षेत्रों में भी विशेष सफाई कराई जा रही है। निगम के सफाई कर्मचारियों द्वारा सड़कों, चौक-चौराहों एवं सार्वजनिक स्थानों से कचरा हटाने के साथ नियमित सफाई व्यवस्था को बेहतर बनाया जा रहा है। स्वतंत्रता दिवस को ध्यान में रखते हुए निगम प्रशासन द्वारा शहर की स्वच्छता एवं सौंदर्य व्यवस्था को बेहतर बनाने के लिए आवश्यक तैयारियां की जा रही हैं।

समाचार संक्षेप

तिरंगा रैली में दिया गया हर घर तिरंगा अभियान का संदेश

■ तरुण छत्तीसगढ़ संवाददाता

भिलाई, 12 अगस्त। हर घर तिरंगा, घर-घर तिरंगा अभियान के प्रचार-प्रसार और नागरिकों में राष्ट्रीय ध्वज के प्रति सम्मान एवं जागरूकता बढ़ाने के उद्देश्य से नगर पालिक निगम भिलाई द्वारा मंगलवार को भव्य तिरंगा रैली निकाली गई। रैली की शुरुआत पावर हाउस चौक से हुई। नंदिनी रोड होते हुए रैली शहर के प्रमुख चौक-चौराहों से गुजरी और पुनः पावर हाउस चौक पहुंचकर संपन्न हुई। रैली में अधिकारी-कर्मचारियों के साथ बड़ी संख्या में स्वच्छता दीदियों ने हाथों में तिरंगा लेकर सहभागिता की। रैली के दौरान पूरे मार्ग पर देशभक्ति का माहौल नजर आया। प्रतिभागियों ने उत्साहपूर्वक 'भारत माता की जय' के जयघोष लगाए। साथ ही नागरिकों को राष्ट्रीय ध्वज की गरिमा एवं सम्मान बनाए रखने तथा 'हर घर तिरंगा' अभियान से जुड़ने के लिए प्रेरित किया गया। नगर निगम के मुख्य कार्यालय एवं विभिन्न जोन कार्यालयों के अधिकारी-कर्मचारियों सहित स्वच्छता दीदियों की उल्लेखनीय भागीदारी रही।

एचएमएस के एचएस मिश्रा अध्यक्ष और डीके सिंह महासचिव निर्वाचित

भिलाई, 12 अगस्त। भिलाई श्रमिक सभा एचएमएस यूनियन की चुनाव प्रक्रिया को निष्पक्ष एवं पारदर्शी तरीके से संपन्न कराने के लिए सहायक श्रमायुक्त दुर्ग पायल शर्मा उपस्थित रहीं। उनके सहयोगी के रूप में पाल एवं वसंत वर्मा भी मौजूद रहे। अध्यक्ष पद के लिए सर्वसम्मति बनने पर चुनाव अधिकारी ने एचएस मिश्रा को निर्विरोध अध्यक्ष निर्वाचित घोषित किया। महासचिव पद के लिए डीके सिंह को महासचिव निर्वाचित घोषित किया गया। शेष पदाधिकारियों के चुनाव के लिए विनोद कुमार ने नवनिर्वाचित अध्यक्ष एवं महासचिव को अधिकृत करने का प्रस्ताव रखा, जिसका सदन ने समर्थन किया। नवनिर्वाचित अध्यक्ष एचएस मिश्रा ने आमसभा को संबोधित करते हुए प्रदेश में ठेका श्रमिकों की स्थिति पर प्रकाश डाला। कार्यक्रम के अंत में नवनिर्वाचित महासचिव डीके सिंह ने धन्यवाद ज्ञापित किया। उन्होंने सदन को आश्वस्त किया कि यूनियन को मजबूत करने तथा श्रमिकों के हित में आवश्यक सभी कदम उठाए जाएंगे।

कल्याण महाविद्यालय के एनसीसी कैडेटों ने निकाली हर घर तिरंगा रैली

भिलाई, 12 अगस्त। 37 छत्तीसगढ़ बटालियन एनसीसी दुर्ग के कमान अधिकारी के आदेश एवं एडम अफसर के निर्देश तथा प्राचार्य की प्रेरणा से कल्याण स्नातकोत्तर महाविद्यालय, भिलाईनगर के एनसीसी कैडेटों एवं अधिकारियों ने सोमवार को हर घर तिरंगा रैली निकाली। रैली से पूर्व महाविद्यालय में तिरंगे के महत्व पर संक्षिप्त व्याख्यान आयोजित किया गया। मुख्य अतिथि प्राचार्य डॉ. विनय शर्मा ने अपने उद्बोधन में तिरंगे को देश की आन, बान और शान बताते हुए कहा कि हर घर तिरंगा अभियान का उद्देश्य लोगों को स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर अपने घरों में राष्ट्रीय ध्वज फहराने के लिए प्रेरित करना है। उन्होंने कहा कि इस पहल के माध्यम से लोगों के हृदय में देशभक्ति की भावना जागृत करने तथा राष्ट्रीय ध्वज के प्रति जागरूकता बढ़ाने का प्रयास किया जा रहा है। विशेष अतिथि डॉ. ईश्वर सिंह बरगाह, संकाय अध्यक्ष, शिक्षा ने हर घर तिरंगा अभियान को तिरंगे के साथ व्यक्तिगत एवं आत्मीय संबंध स्थापित करने का माध्यम बताया। वहीं विशेष अतिथि डॉ. जयंत कुमार धुरंधर, प्रोफेसर, कल्याण विधि महाविद्यालय ने राष्ट्रीय ध्वज के निर्माण, रखने और फहराने से संबंधित नियमों की जानकारी दी।एनसीसी अधिकारी लेफ्टिनेंट डॉ. हरीश कुमार कश्यप ने बताया कि हर घर तिरंगा अभियान वंदे मातरम् के 150 वर्षों की भावना को समर्पित है। उन्होंने कहा कि यह अभियान राष्ट्रीय गीत में निहित देशभक्ति, तिरंगे के प्रति गर्व और मातृभूमि के प्रति अगाध प्रेम की भावना को जन-जन तक पहुंचाने का अवसर है। प्राचार्य डॉ. विनय शर्मा ने हरी झंडी दिखाकर रैली को रवाना किया।

सेक्टर-9 हॉस्पिटल में स्तनपान एवं लैक्टेशन प्रबंधन कार्यशाला आयोजित

भिलाई, 12 अगस्त। जेएलएनएचआरसी ने स्पर्श मल्टीस्पेशलिटी अस्पताल के सहयोग से राज्य स्तरीय स्तनपान एवं लैक्टेशन प्रबंधन कार्यशाला आयोजित की। इसमें करीब 100 नर्सिंग विद्यार्थियों एवं स्टाफ को स्तनपान की वैज्ञानिक तकनीक, सही लैचिंग और माताओं को प्रभावी परामर्श देने का प्रशिक्षण दिया गया। मुख्य अतिथि डॉ. उदय कुमार ने कहा कि प्रशिक्षित स्वास्थ्यकर्मी स्तनपान संबंधी भ्रांतियां दूर करने और शिशु स्वास्थ्य बेहतर बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं। डॉ. माला चौधरी ने बेबी-फ्रेंडली हॉस्पिटल इनिशिएटिव एवं सफल स्तनपान के 10 कदमों की जानकारी दी। डॉ. अरविंद पी. सावंत एवं डॉ. संजय गोयल ने व्यावहारिक प्रशिक्षण दिया। कार्यशाला में विशेषज्ञ व्याख्यान, केस डिस्कशन, पोस्टर प्रतियोगिता एवं क्विज आयोजित किए गए। विशेषज्ञों ने बताया कि छत्तीसगढ़ में केवल 49 प्रतिशत नवजातों को जन्म के एक घंटे के भीतर स्तनपान और 25 प्रतिशत शिशुओं को छह माह तक विशेष स्तनपान मिल पाता है। कार्यशाला का उद्देश्य नर्सिंग कर्मियों की दक्षता बढ़ाकर माताओं और नवजातों को बेहतर स्तनपान सहयोग उपलब्ध कराना रहा।

सिंटर प्लांट-3 में सुरक्षित आवागमन और धूल नियंत्रण की नई सुविधाओं का शुभारंभ

भिलाई, 12 अगस्त। सेल-भिलाई इस्पात संयंत्र के सिंटर प्लांट-3 में कार्यस्थल की सुरक्षा और स्वच्छता को बेहतर बनाने के लिए दो नई सुविधाओं का शुभारंभ किया गया। पूर्व महाप्रबंधक आई. वी. रमणा ने आरडीएफ-1 एवं आरडीएफ-2 के बीच नवनिर्मित ग्राउंड-लेवल वॉकवे तथा एम-105 एवं जेड16 ए सी-1 व सी-2 पर नई डिडस्टिंग लाइनों का उद्घाटन किया। नवीन वॉकवे से संचालन एवं अनुरक्षण कार्यों के दौरान कर्मचारियों का आवागमन अधिक सुरक्षित और सुगम होगा। वहीं नई डिडस्टिंग लाइनों से संबंधित क्षेत्रों में धूल नियंत्रण प्रभावी होने के साथ कार्यस्थल की स्वच्छता, पर्यावरणीय परिस्थितियों और उपकरणों की विश्वसनीयता में सुधार होगा। इस अवसर पर महाप्रबंधक प्रभारी राहुल बिजुरकर, महाप्रबंधक प्रभारी ए.के. बेडेकर सहित यांत्रिक, विद्युत एवं संचालन विभाग के अधिकारी-कर्मचारी उपस्थित रहे।

एक नजर

धोखाधड़ी का आरोपी गिरफ्तार

भिलाई, 12 अगस्त (तछसं.)। भिलाई फर्जी नियुक्ति प्रमाण पत्र देकर वन विभाग में रेंजर की नौकरी लगाने के नाम पर 8 लाख रुपए की धोखाधड़ी करने वाले तीन आरोपियों को भट्ठी थाने पुलिस ने. गिरफ्तार किया है भट्ठी टीआई दिलेश्वर चंद्रवंशी ने बताया कि प्रार्थी दिनेश कुमार निवासी सेक्टर-02ने थाना भिलाई भट्ठी में रिपोर्ट दर्ज कराया कि वर्ष 2023 में उसके बेटे को वन विभाग में रेंजर के पद पर नौकरी लगाने का झांसा देकर आरोपियों ने कुल 8 लाख रुपए प्राप्त किए थे आरोपियों ने मंत्रालय से जारी नियुक्ति प्रमाण पत्र बताकर फर्जी नियुक्ति प्रमाण पत्र भी दिया था नौकरी नहीं लगने पर प्रार्थी द्वारा रकम वापस मांगे जाने पर आरोपियों ने लगातार टालमटोल की प्रार्थी की रिपोर्ट पर प्रकरण की विवेचना के दौरान पुलिस टीम ने आरोपियों भारतेन्दु मेश्राम (36 साल) निवासी मकान नं. 167/एन-6, एकता नगर, ठेलका बोर्ड, पोस्ट गोविंदपुर, थाना एवं जिला कांकेर, हनी श्रेष्ठ (42 साल?) निवासी कृष्णा ग्रैण्ड सिटी, के-21, आर्य नगर, कोहका व भोजेन्द्र कुमार (32 साल) निवासी ग्राम टिकरी अर्जुनी थाना अर्जुन्दा जिला बालोद के संभावित ठिकानों पर दबिश देकर उन्हें हिरासत में लिया ।

सामान,2500 रुपए छीनने वाले गिरफ्तार

भिलाई, 12 अगस्त (तछसं.)। भिलाई छावनी प्रभारी रामनारायण ध्रुव ने बताया कि प्रार्थी उमाशंकर प्रसाद श्रीवास्तव ने थाना छावनी में रिपोर्ट दर्ज कराया कि वह पावर हाउस से सामान खरीदकर ऑटो से कैलाश नगर जामुल स्थित अपने घर जा रहे थे। इसी दौरान महाराणा प्रताप बरदाना दुकान के पास ऑटो चालक ने ऑटो रोक दिया तथा उसके साथी के साथ मिलकर प्रार्थी की जेब से 2,500 छीनकर दोनों आरोपी मौके से भागने लगे। रिपोर्ट पर थाना छावनी में धारा 304(2), 3(5) बीएनएस के तहत अपराध पंजीबद्ध कर विवेचना में लिया गया छावनी थाने पुलिस टीम विवेचना के दौरान दोनों आरोपियों सुलेन्दर सिंह उर्फ मोना (42 साल) निवासी सुभाष चौक कैम्प-01 और आरिफ खान (44 साल) निवासी सुभाष चौक कैम्प-01 को हिरासत में लेकर पूछताछ करने पर उन्होंने प्रार्थी की जेब से 2,500 छीनकर ले जाना स्वीकार किया अपराध में संलिप्तता पाए जाने पर दोनों आरोपियों को गिरफ्तार किया है ।

गांजा बेचने के आरोप में युवक गिरफ्तार

भिलाई, 12 अगस्त (तछसं.)। भिलाई

खुर्सीपार टीआई लक्ष्मण केवट ने बताया कि मुखबिर से सूचना मिली कि मिनी स्टेडियम, सुलभ शौचालय के पास खुर्सीपार में एक महिला अवैध रूप से मादक पदार्थ गांजा की बिक्री की जा रही है। सूचना पर पुलिस टीम मौके पर पहुंचकर घेराबंदी की खुर्सीपार थाने पुलिस टीम को देखकर संदिग्ध महिला के. अंजली सोनी (24 साल) निवासी तेलहा नाला खुर्सीपार मौके से भागने का प्रयास किया उसे पुलिस टीम ने पकड़ लिया गया महिला की तलाशी एवं कार्रवाई के दौरान उसके कब्जे से लगभग 1.500 किलोग्राम गांजा, बिक्री रकम 250 रुपये एवं एक मोबाइल फोन बरामद किया है।

सट्टा खेला रहा युवक गिरफ्तार

भिलाई, 12 अगस्त (तछसं.)। भिलाई सुपेला टीआई एस एन सिंह ने बताया कि पुलिस को मुखबिर से सूचना मिली कि गदा चौक सुपेला में एक व्यक्ति लोगों से रुपये-पैसे लेकर अंकों के सामने दांव लगवाकर सट्टा संचालित कर रहा है सूचना पर पुलिस टीम घेराबंदी एवं रेड कार्रवाई की मौके पर आरोपी छोटे लाल चौहान को लोगों से रुपये लेकर अंकों के सामने रुपये-पैसे का दांव लगवाते हुए सट्टा-पट्टी के माध्यम से सट्टा संचालित करते पकड़ा गया सुपेला थाने पुलिस ने आरोपी के कब्जे से सट्टा संचालन से संबंधित सामग्री एवं नगदी रकम जब्त किया आरोपी का कृत्य छत्तीसगढ़ जुआ प्रतिषेध अधिनियम 2022 की धारा 06 के अंतर्गत पाए जाने पर अपराध पंजीबद्ध कर वैधानिक कार्रवाई की। आरोपी को गिरफ्तार कर न्यायालय के समक्ष प्रस्तुत किया गया, जहां से उसे न्यायिक रिमाण्ड पर भेजा गया है ।

विशेषज्ञों ने निर्माण अपशिष्ट के वैज्ञानिक प्रबंधन पर दिया जोर

■ तरुण छत्तीसगढ़ संवाददाता

भिलाई, 12 अगस्त। द इंस्टीट्यूशन ऑफ इंजीनियर्स (इंडिया), छत्तीसगढ़ राज्य केंद्र एवं जीईसी-एनआईटी एलुमनी एसोसिएशन के संयुक्त तत्वावधान में निर्माण अपशिष्ट का पुनर्चक्रण ~ एक सतत भविष्य की ओर विषय पर पैनल चर्चा आयोजित की गई। पैनल चर्चा में एनआईटी रायपुर के निदेशक डॉ. एन. वी. रमना राव, सी. वी. रमन विश्वविद्यालय बिलासपुर के उपकुलपति डॉ. प्रदीप कुमार घोष तथा नगर निगम रायपुर के कार्यपालन अभियंता योगेश कुमार कडु विषय विशेषज्ञ के रूप में शामिल हुए। डॉ. समीर बाजपेयी, प्राध्यापक, एनआईटी रायपुर ने मॉडरेटर की भूमिका निभाई। शुरुआत द इंस्टीट्यूशन ऑफ इंजीनियर्स (इंडिया), छत्तीसगढ़ शाखा के अध्यक्ष पुनीत चौबे के स्वागत उद्बोधन से हुई। उन्होंने संस्था की गतिविधियों एवं

उद्देश्यों की जानकारी देते हुए कहा कि कंस्ट्रक्शन वेस्ट केवल भारत की समस्या नहीं है, बल्कि पूरी दुनिया में इसके वैज्ञानिक निष्पादन और पुनः उपयोग को लेकर गंभीर प्रयास किए जा रहे हैं। एलुमनी एसोसिएशन के अध्यक्ष उमेश चितलांगिया ने महत्वपूर्ण विषय पर पैनल चर्चा आयोजित करने के लिए संस्था को बधाई दी। एनआईटी रायपुर के निदेशक डॉ. एन. वी. रमना राव ने निर्माण एवं ध्वस्तीकरण अपशिष्ट के पुनर्चक्रण पर जोर देते हुए कहा कि इसके माध्यम से उपयोगी सामग्री की रिकवरी कर उसे दोबारा निर्माण कार्यों में इस्तेमाल किया जा सकता है। मॉडरेटर डॉ. समीर बाजपेयी ने निर्माण अपशिष्ट की बढ़ती मात्रा और उसके व्यवस्थित प्रबंधन की आवश्यकता पर प्रकाश डाला। डॉ. प्रदीप कुमार घोष ने बताया कि देश में प्रतिवर्ष लगभग 15 करोड़ से 50 करोड़ टन निर्माण अपशिष्ट उत्पन्न हो रहा है, जबकि इसका केवल 2 से 3 प्रतिशत हिस्सा ही वैज्ञानिक तरीके से प्रबंधित हो पा रहा है। उन्होंने नई दिल्ली के बुराड़ी क्षेत्र में संचालित देश की बड़ी कंस्ट्रक्शन एवं डेमोलिशन वेस्ट प्रसंस्करण सुविधा के बारे में जानकारी साझा की। नगर निगम रायपुर के कार्यपालन अभियंता योगेश कुमार कडु ने केंद्रीय प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड द्वारा वर्ष 2016 एवं 2025 में निर्माण एवं ध्वस्तीकरण अपशिष्ट के संबंध में जारी अधिसूचनाओं की जानकारी दी। उन्होंने रायपुर नगर निगम द्वारा निर्माण अपशिष्ट के पुनर्चक्रण के लिए किए जा रहे प्रयासों और वेस्ट मैनेजमेंट में सामने आने वाली चुनौतियों पर भी प्रकाश डाला। एनआईटी रायपुर के केमिकल इंजीनियरिंग विभाग के स्नातकोत्तर शोध छात्रों अनिकेत चौबे एवं आर्यंश पाण्डेय ने भी कंस्ट्रक्शन एंड डेमोलिशन वेस्ट मैनेजमेंट विषय पर प्रस्तुति दी। अध्यक्ष पुनीत चौबे ने पैनल सदस्यों को स्मृति चिन्ह भेंट किए। कार्यसमिति सदस्य डॉ. के. के. घोष ने धन्यवाद प्रस्ताव रखा। कार्यक्रम का संचालन एनआईटी रायपुर के छात्र आयुष एवं मंजरी ने किया। कार्यक्रम में नालको के पूर्व निदेशक अरुण शर्मा, भिलाई इस्पात संयंत्र के पूर्व कार्यपालक निदेशक योगेश डेगन, छत्तीसगढ़ बिजली बोर्ड के पूर्व मुख्य अभियंता वी. के. कासू आदि उपस्थित रहे।

आयुक्त सुरुचि सिंह की अगुवाई में कुरूद गौठान में विशेष पौधारोपण

■ तरुण छत्तीसगढ़ संवाददाता

भिलाई, 12 अगस्त। पर्यावरण संरक्षण और शहर में हरित क्षेत्र के विस्तार को बढ़ावा देने के उद्देश्य से नगर निगम एवं जनकल्याण सेवा समिति के संयुक्त तत्वावधान में कुरूद गौठान में विशेष पौधारोपण कार्यक्रम आयोजित किया गया। कार्यक्रम में नगर निगम आयुक्त सुरुचि सिंह ने स्वयं पौधा रोपकर अभियान की शुरुआत की और पर्यावरण संरक्षण को सामूहिक जिम्मेदारी बताते हुए पौधों की नियमित देखभाल एवं संरक्षण पर विशेष जोर दिया। आयुक्त सुरुचि सिंह ने कहा कि केवल पौधारोपण करना ही पर्याप्त नहीं है, बल्कि लगाए गए पौधों का संरक्षण और उनका उचित विकास सुनिश्चित करना भी उतना ही महत्वपूर्ण है। उन्होंने कहा कि शहर में हरित क्षेत्र बढ़ाने के लिए निरंतर पौधारोपण के साथ उनकी नियमित निगरानी और देखभाल आवश्यक है। कुरूद गौठान परिसर में विभिन्न प्रजातियों के पौधों का रोपण कर इसे और हरा-भरा बनाने की दिशा में पहल की गई। कार्यक्रम के दौरान निगम अधिकारियों एवं जनकल्याण सेवा समिति के सदस्यों ने भी पौधारोपण किया। इस अवसर पर पर्यावरण संरक्षण के प्रति नागरिकों को जागरूक करने तथा अधिक से अधिक लोगों को पौधरोपण अभियान से जोड़ने पर भी जोर दिया गया। कार्यक्रम में समाजसेवी नीतू पांडेय, पार्षद प्रतिनिधि अजय साहू, दामिनी साहू, कार्यपालन अभियंता अरविंद शर्मा, श्वेता वर्मा, शंकर सुवन मरकाम, गोसेवक दीपक यादव सहित नगर निगम के अधिकारी-कर्मचारी एवं जनकल्याण सेवा समिति के सदस्य उपस्थित रहे। आयुक्त सुरुचि सिंह ने कहा कि पर्यावरण संरक्षण की दिशा में छोटे-छोटे प्रयास भविष्य में शहर को स्वच्छ, सुंदर और हरा-भरा बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएंगे। उन्होंने पौधरोपण के साथ उसके संरक्षण को अभियान का अभिन्न हिस्सा बनाने की आवश्यकता पर बल दिया।

ईडन गार्डन्स का नाम शहीद खुदीराम बोस के नाम पर करने की मांग

भिलाई, 12 अगस्त। शहीद खुदीराम बोस के

बलिदान दिवस के अवसर पर सामाजिक कार्यकर्ता एवं छत्तीसगढ़ बंगाली मित्र समाज के प्रदेश अध्यक्ष सुमन शील ने वर्षों पुरानी मांग को एक बार फिर उठाया है। उन्होंने पश्चिम बंगाल के मुख्यमंत्री को पत्र भेजकर कोलकाता के प्रसिद्ध ईडन गार्डन्स क्रिकेट स्टेडियम का नाम शहीद खुदीराम बोस के नाम पर करने की मांग की है। सुमन शील ने कहा कि विश्व प्रसिद्ध ईडन गार्डन्स जैसे क्रिकेट स्टेडियम का नाम शहीद खुदीराम बोस के नाम पर रखा जाना पूरे बंगाल के लिए गौरव और सम्मान की बात होगी। इससे देश और दुनिया में खुदीराम बोस की पहचान और मजबूत होगी तथा क्रिकेट के माध्यम से लाखों लोग उनके नाम और महान बलिदान से परिचित हो सकेंगे। उन्होंने कहा कि महज 19 वर्ष की आयु में देश की आजादी के लिए अपने प्राणों का बलिदान देने वाले खुदीराम बोस का साहस, देशभक्ति और त्याग आज भी युवाओं के लिए प्रेरणास्रोत है। ईडन गार्डन्स के नाम के साथ उनका नाम जुड़ना केवल नाम परिवर्तन नहीं, बल्कि बंगाल के महान क्रांतिकारी को स्थायी सम्मान देने का प्रतीक होगा।

पाटन में 13 व गाड़ाडीह में 14 अगस्त को लगेगा निःशुल्क कैंसर जांच शिविर

■ तरुण छत्तीसगढ़ संवाददाता

उतई, 12 अगस्त। स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण विभाग, जिला स्वास्थ्य समिति दुर्ग एवं बालको मेडिकल सेंटर के संयुक्त तत्वावधान में सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र पाटन में 13ब प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र गाड़ाडीह में 14 अगस्त को निःशुल्क कैंसर जांच एवं परामर्श शिविर आयोजित किया जा रहा है। शिविर का उद्देश्य ग्रामीण एवं आसपास के क्षेत्र के लोगों में कैंसर की समय पर पहचान, जांच, परामर्श एवं आवश्यकतानुसार आगे के उपचार के लिए मार्गदर्शन उपलब्ध कराना है।

खंड चिकित्सा अधिकारी पाटन डॉ. बी. कठौतिया ने बताया कि कैंसर का समय पर पता लगने पर उपचार के बेहतर परिणाम प्राप्त किए जा सकते हैं। इसी उद्देश्य से शिविर में विभिन्न प्रकार के कैंसर की प्रारंभिक जांच के साथ विशेषज्ञ चिकित्सक द्वारा परामर्श की सुविधा उपलब्ध कराई जा रही है। उन्होंने क्षेत्र के नागरिकों से अपील की कि किसी भी प्रकार के संदिग्ध लक्षण होने पर जांच को टालें नहीं और शिविर में पहुंचकर निःशुल्क जांच एवं परामर्श का लाभ लें।

शिविर में उपलब्ध प्रमुख सुविधाएं

शिविर में बालको मेडिकल सेंटर की मोबाइल कैंसर स्क्रीनिंग वैन के माध्यम से विभिन्न जांच एवं स्वास्थ्य परीक्षण किए जाएंगे। इनमें–स्तन कैंसर की जांच - मैमोग्राफी द्वारा,मुख एवं मुंह के कैंसर की जांच - ब्रश साइटोलॉजी द्वारा,बच्चों के मुंह की कैंसर संबंधी जांच,बीपी की जांच,ब्लड शुगर की जांच, बीएमआई की जांचकैंसर रोग विशेषज्ञ द्वारा विशेषज्ञ परामर्शसंदिग्ध पाए जाने वाले मरीजों को आगे की जांच एवं उपचार के लिए उचित मार्गदर्शनशिविर में कैंसर रोग विशेषज्ञ डॉ. यामिनी पद्माकर बाविस्कर एमडी रेडिएशन ऑन्कोलॉजी, द्वारा मरीजों को परामर्श प्रदान किया जाएगा।इन लक्षणों को नजरअंदाज न करेंस्वास्थ्य विभाग पाटन बीएमओ डॉ बी कठौतिया द्वारा बताया गया कि निम्न में से कोई लक्षण लगातार बना रहने पर चिकित्सकीय जांच कराना आवश्यक है- स्तन में गांठ या असामान्य बदलाव,असामान्य रक्तस्राव,मुंह में लंबे समय से कोई घाव/छाला,मुंह में सफेद या लाल चकत्ता,मुंह खोलने या निगलने में परेशानी,आवाज में लगातार भारीपन,लंबे समय से लगातार खांसी,बिना स्पष्ट कारण वजन कम होना,भूख में लगातार कमी,बार-बार बुखार या संक्रमणशरीर के किसी हिस्से में असामान्य गांठ या सूजन,मल या मूत्र त्याग की आदतों में बदलाव,महिलाओं में मासिक धर्म चक्र में असामान्य बदलाव अथवा असामान्य रक्तस्राव।डॉ. कठौतिया ने कहा कि इन लक्षणों का होना कैंसर की पुष्टि नहीं करता, लेकिन ऐसे लक्षणों की समय पर चिकित्सकीय जांच आवश्यक है। उन्होंने विशेष रूप से महिलाओं, पुरुषों एवं अभिभावकों से अपील की कि संदिग्ध लक्षणों को नजरअंदाज न करें।

नकली नोट बनाने और खपाने वाले गिरोह का कबीरधाम पुलिस ने किया पर्दाफाश

■ तरुण छत्तीसगढ़ संवाददाता

कवर्धा, 12 अगस्त। कबीरधाम पुलिस को जिले में धोखाधड़ी जालसाजी एवं नकली मुद्रा के अवैध कारोबार में संलिप्त व्यक्तियों को गिरफ्तार करने में महत्वपूर्ण सफलता प्राप्त हुई है। थाना बोडला अंतर्गत चौकी पोंडी क्षेत्र में नकली नोटों की डिलीवरी के मामले मे तीन आरोपियों को गिरफ्तार किया गया है।पुलिस अधीक्षक कबीरधाम श्री जितेंद्र कुमार यादव ;भाण्पुण्सेण्द्ध के निर्देशन मेंए अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक श्री हेमसागर सिदार एवं अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक श्री अमित पटेल के मार्गदर्शन तथा पुलिस अनुविभागीय अधिकारी बोडला श्री अखिलेश कौशिक के पर्यवेक्षण में चौकी पोंडी पुलिस एवं साइबर टीम कबीरधाम द्वारा त्वरित कार्रवाई करते हुए नकली नोट तैयार करने एवं खपाने वाले आरोपियों को पकड़कर वैधानिक कार्यवाही की गई है । 3.75 लाख रुपये की उधारी लौटाने के नाम पर नकली नोटों की डिलीवरी'प्रकरण में प्रार्थी दिनेश कुमार यादवए निवासी ग्राम कमराखोलए थाना कुकदुरए जिला कबीरधाम द्वारा चौकी पोंडी में रिपोर्ट दर्ज कराया गया कि उसके द्वारा अप्रैल 2026 में घुरवा राम को 3.5.000

रुपये उधार दिए गए थेए जिसके संबंध में एग्रीमेंट भी कराया गया था।उधारी की रकम वापस मांगने पर घुरवा राम द्वारा प्रार्थी को रकम वापस करने का आश्वासन दिया गया। दिनांक 9.8.2026 को घुरवा राम ने प्रार्थी को बताया कि वह सतीश कुमार के माध्यम से रकम भिजवा रहा है तथा ग्राम पोंडी स्थित शराब भट्ठी के आगे रकम लेने के लिए बुलाया।प्रार्थी दिनेश कुमार यादव अपने परिचित कैलाश चंद्रवंशी के साथ रात्रि लगभग 9 बजे ग्राम पोंडी शराब भट्ठी के आगे पहुंचा। वहां सतीश कुमार एवं उसके एक अन्य साथी द्वारा काले रंग के बैग में रकम दी गई।रकम की जांच करने पर नोट संदिग्ध पाए गए। बैग खोलकर देखने पर उसमें 500.500 रुपये के कुल 4.50.000 रूपये नकली नोट मिले। इस संबंध में प्रार्थी द्वारा दिनांक 10.08.2026 को पुलिस चौकी पोंडी में लिखित रिपोर्ट प्रस्तुत की गई जिस पर प्रथम सूचना पंजीबद्ध कर आरोपियों को पकड़ा गया।पूछताछ में आरोपी सतीश कुमार द्वारा रामप्रसाद उर्फ रमऊए निवासी तालपुर तथा घुरवा राम निवासी कान्हाभैरा के साथ मिलकर नकली नोट तैयार करने एवं खपाने की जानकारी दी गई।सतीश कुमार से प्राप्त जानकारी के आधार पर पुलिस टीम द्वारा तत्काल कार्रवाई करते हुए रामप्रसाद उर्फ रमऊ एवं घुरवा राम को भी पकड़ा गया।जुलाई 2026 से प्रिंटर के माध्यम से तैयार कर रहे थे नकली नोटआरोपियों से पूछताछ एवं तस्दीक में यह तथ्य सामने आया कि तीनों आरोपी जुलाई 2026 से मिलकर कलर प्रिंटर के माध्यम से नये बस स्टैंड के पास एक किराये के रूम मे नकली नोट तैयार कर रहे थेपूछताछ में यह भी सामने आया कि आरोपियों द्वारा तैयार किए गए नकली नोटों को वास्तविक रकम के रूप में चलाने की योजना के तहत उधारी की रकम वापस करने के नाम पर प्रार्थी दिनेश कुमार एवं उसके सहयोगी कैलाश को नकली नोटों की डिलीवरी की गई।पुलिस द्वारा आरोपियों के पास से बड़ी मात्रा में तैयार नकली नोट तथा नकली नोट तैयार करने में प्रयुक्त प्रिंटर बरामद किए गए हैं । तीनों आरोपियों से कब्जे कुल 8 लाख रुपये के नकली नोट बरामद प्रार्थी को दिए।

स्वतंत्रता दिवस पर निगम मुख्यालय में महापौर करेंगे ध्वजारोहण

भिलाई, 12 अगस्त। स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर 15 अगस्त को नगर निगम के मुख्य कार्यालय में महापौर नीरज पाल द्वारा प्रातः 8 बजे ध्वजारोहण किया जाएगा। इस अवसर पर निगम आयुक्त सुरुचि सिंह सहित निगम के सभी अधिकारी एवं कर्मचारी उपस्थित रहेंगे। ध्वजारोहण के बाद महापौर द्वारा शहर के विभिन्न स्थानों पर भी राष्ट्रीय ध्वज फहराया जाएगा। निर्धारित कार्यक्रम के अनुसार प्रातः 8.30 बजे यूनियन कार्यालय, 9.30 बजे नेहरू नगर चौक, 10 बजे श्रीराम वाटिका खुर्सीपार तथा 10.30 बजे शहीद उद्यान, सेक्टर-5 में ध्वजारोहण किया जाएगा। इधर, नगर निगम के विभिन्न जोन कार्यालयों में भी स्वतंत्रता दिवस समारोह आयोजित किया जाएगा।

जोन कार्यालयों में प्रातः 7.30 बजे जोन समिति के अध्यक्ष द्वारा ध्वजारोहण किया जाएगा। इसके पश्चात जोन समिति के अध्यक्ष एवं संबंधित अधिकारी-कर्मचारी निगम के मुख्य कार्यालय में आयोजित ध्वजारोहण कार्यक्रम में शामिल होंगे।

एक नजर

गौशाला कमेटी का शासकीय भूमि पर अतिक्रमण करना अनुचितः तुलसी मिश्रा

डोंगरगढ 12 अगस्त। (तरुण छत्तीसगढ़ संवाददाता)। भाजपा के वरिष्ठ कार्यकर्ता व पूर्व पार्षद तुलसी मिश्रा द्वारा डोंगरगढ गौशाला पिंजरापोल समिति द्वारा वन विभाग सहित राजस्व की भूमि पर बड़े पैमाने में अतिक्रमण कर निर्माण कार्य पर तत्काल रोक लगाने की मांग करते हुए मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय, राजस्व मंत्री सहित जिला कलेक्टर व अनुविभागीय अधिकारी राजस्व को ज्ञापन सौंप कर उच्च स्तरीय जांच कर कार्यवाही की मांग की गई है। श्री मिश्रा द्वारा ज्ञापन के माध्यम से अवगत कराया गया कि डोंगरगढ़ नगरपालिका सीमा क्षेत्र में वार्ड क्रमांक 11 में स्थित श्री कृष्ण गौशाला (पिंजरापोल) डोंगरगढ़ द्वारा बहुत बड़े शासकीय भूमि मे अवैध निर्माण कार्य किया जा रहा है। जो कि पूर्णतः अनुचित है। गौशाला कमेटी द्वारा वनविभाग के एवं राजस्व विभाग के बहुत बड़े भाग में अतिक्रमण किया जा रहा है। उक्त स्थान में एक राजस्व की भूमि को तालाब का आकार देने की कोशिश दी जा रही है। उक्त गौशाला सर्व हिन्दु समाज का न होकर समाज विशेष का हो गया है। गौशाला कमेटी द्वारा सर्व हिन्दु समाज से दान तो लिया जाता है लेकिन सर्व हिन्दु समाज के नागरिक इस गौशाला कमेटी के सदस्य नहीं बन सकते। गौशाला कमेटी के नियमो के अनुसार सिर्फ अग्रवाल,माहेश्वरी,जैन ही कमेटी के सदस्य बन सकते है। इस तरह यह गौशाला कमेटी समाज विशेष की संपत्ति बनकर रह गई है। माननीय उच्चत्तम न्यायालय के दिशा निर्देश के अनुसार कोई भी शासकीय भूमि का धार्मिक न्यास के लिये उपयोग नही किया जा सकता। मेरी मांग है कि वर्तमान में निर्माणाधीन सभी कार्य तत्काल प्रतिबंधित किया जाये और जांच कर उचित कार्यवाही किया जावे।

विधानसभा अध्यक्ष, सांसद एवं महापौर ने दी हरेली तिहार की बधाई

राजनांदगांव 12 अगस्त। (तरुण छत्तीसगढ़ संवाददाता)। विधानसभा अध्यक्ष व विधायक डॉ. रमन सिंह, सांसद श्री संतोष पाण्डे एवं महापौर श्री मधुसूदन यादव ने नागरिको को छत्तीसगढ़ के पहली तिहार हरेली पर्व की अन्नय शुभकामनाएं दी है। उन्होने बधाई देते हुये कहा कि छत्तीसगढ़ में त्यौहारों की शुरवात हरेली त्यौहार से होती है, जिसे सावन मास के अमावस्या के दिन मनाया जाता है, इसलिये इसे हरियाली अमावस्या भी कहते है। विधायक डॉ. सिंह, सांसद श्री पाण्डे व महापौर श्री यादव ने कहा कि हरेली के दिन किसान अपने हल एवं कृषि औजारों की पूजा करते है और भगवान से अच्छी फसल की कामना करते है। त्यौहार में छत्तीसगढ़ के पारंपरिक व्यंजन चिला, फरा आदि बनाकर खाया एवं खिलाया जाता है। इस दिन बास से बने गेडी चढकर तथा ग्रामीण परिवेश के खेल खो, कबड्डी, फुगड़ी आदि खेल कर त्यौहार का आनंद उठाया जाता है। उन्होंनें हरेली तिहार की पुनः बधाई देते हुये खेतो में अच्छी फसल की कामना की है, जिससे किसान खुशी से अपना जीवन यापन कर सके।

कृषि मंत्री नेताम ने दी हरेली तिहार की बधाई

रायपुर, 12 अगस्त। कृषि विकास एवं किसान कल्याण तथा जैव प्रोद्योगिकी मंत्री श्री राम विचार नेताम ने 12 अगस्त को मनाये जा रहे छत्तीसगढ़ के पारंपरिक पर्व हरेली तिहार के अवसर पर प्रदेशवासियों को अपनी बधाई एवं शुभकामनाएं दी है। उन्होंने कहा है कि छत्तीसगढ़ एक कृषि प्रधान राज्य है। हरियाली अमावस्या को मनाई जानी वाली हरेली त्यौहार का छत्तीसगढ़ के जनजीवन में व्यापक प्रभाव देखा जा सकता है। इस दिन किसान भाई नांगर (हल) एवं कृषि औजार की पूजा करते हैं, जो हमारे कृषि प्रधान संस्कृति का अभिन्न हिस्सा है। वहीं दूसरी ओर देखा जाए तो हरेली पर्व का महत्व धरती को हरा-भरा बनाये रखने के लिए पेड़-पौधे की महत्ता को भी प्रदर्शित करता है। इस अवसर पर कृषि मंत्री श्री नेताम ने नागरिकों एवं किसानों की खुशहाली की कामना की है।

इको-टूरिज्म और वन्यजीव संरक्षण को मिलेगा बढ़ावा : वन मंत्री केदार कश्यप

रायपुर, 12 अगस्त। बस्तर के दरभा क्षेत्र में तीन दिवसीय हरेली बर्ड फेस्टिवल का भव्य शुभारंभ वन एवं जलवायु परिवर्तन मंत्री श्री केदार कश्यप के मुख्य आतिथ्य में हुआ। उन्होंने कहा कि बस्तर अपनी प्राकृतिक सुंदरता और समृद्ध जैव विविधता के कारण देश के प्रमुख इको-टूरिज्म स्थलों में शामिल होने की क्षमता रखता है। वन मंत्री श्री केदार कश्यप ने कहा कि यह आयोजन पक्षी संरक्षण, पर्यावरण जागरूकता और स्थानीय समुदाय की भागीदारी को बढ़ावा देगा। उन्होंने बताया कि बस्तर के वनों में कई दुर्लभ पक्षी प्रजातियां पाई जाती हैं और उनका संरक्षण सभी की सामूहिक जिम्मेदारी है। उन्होंने कहा कि हरेली बर्ड फेस्टिवल से इको-टूरिज्म को नई गति मिलेगी। इससे स्थानीय युवाओं को बर्ड गाइड, होम-स्टे, पर्यटन सेवाओं और प्रकृति आधारित आजीविका के क्षेत्र में रोजगार के अवसर मिलेंगे। उन्होंने ग्रामीणों से वनों और वन्यजीवों की सुरक्षा में वन विभाग का सहयोग करने की अपील की। कार्यक्रम के दौरान वन्यजीव संरक्षण से जुड़ी कई महत्वपूर्ण पहल की गईं। हरेली बर्ड फेस्टिवल का आधिकारिक लोगो जारी किया गया और मानव-हाथी द्वंद्व को कम करने के उद्देश्य से 'गज संकेत' मोबाइल ऐप लॉन्च किया गया। साथ ही बस्तर की प्राकृतिक विरासत पर आधारित एक कॉफी टेबल बुक और अन्य प्रकाशनों का विमोचन भी किया गया। कार्यक्रम में छत्तीसगढ़ के राजकीय पक्षी बस्तर पहाड़ी मैना के संरक्षण पर विशेष प्रस्तुति दी गई। इस अवसर पर राज मोहिनी देवी सामाजिक सुरक्षा योजना के अंतर्गत जून 2026 तक 1,233 हितग्राहियों को 17 करोड़ 9 लाख रुपये की सहायता राशि के वितरण की शुरुआत की गई। कार्यक्रम के दौरान वन्यजीव संरक्षण में उल्लेखनीय योगदान देने वाले हाथी मित्र दल, मैना मित्र दल और गिद्ध मित्र दल के सदस्यों को सम्मानित भी किया गया।

अदाणी फाउंडेशन समर्थित मयूर क्लब के 14 खिलाड़ियों का संभाग स्तरीय वॉलीबॉल प्रतियोगिता के लिए चयन

- ग्रामीण क्षेत्र के खिलाड़ियों को मिल रहा प्रशिक्षण और प्रतिस्पर्धी मंच

■ तरुण छत्तीसगढ़ संवाददाता

तिल्दा नेवरा 12 अगस्त। ग्रामीण क्षेत्रों की खेल प्रतिभाओं को बेहतर अवसर और प्रशिक्षण उपलब्ध कराने के उद्देश्य से अदाणी फाउंडेशन द्वारा संचालित खेल प्रोत्साहन गतिविधियों का सकारात्मक प्रभाव अब स्पष्ट रूप से दिखाई देने लगा है। अदाणी फाउंडेशन के सहयोग से संचालित मयूर क्लब, खम्हारिया के 14 खिलाड़ियों ने हाल ही में आयोजित चयन प्रतियोगिता में उत्कृष्ट प्रदर्शन करते हुए विभिन्न आयु वर्गों की संभाग स्तरीय वॉलीबॉल प्रतियोगिता में अपनी जगह बनाई है। खिलाड़ियों की इस उपलब्धि से गांव, क्लब, अभिभावकों और खेल प्रेमियों में खुशी का माहौल है।

चयन प्रतियोगिता में 17 वर्ष बालिका वर्ग से रुचिका, युक्ति, रेशमी और नेहा का चयन हुआ है। वहीं 19 वर्ष बालिका वर्ग में वसुंधरा और पायल ने शानदार प्रदर्शन करते हुए संभाग स्तर तक पहुंचने का गौरव हासिल किया है। इन खिलाड़ियों ने चयन प्रक्रिया के दौरान बेहतर खेल कौशल, अनुशासन और टीम भावना का परिचय दिया। ग्रामीण क्षेत्र की बालिकाओं का यह प्रदर्शन खेलों में उनकी बढ़ती भागीदारी और क्षमता को दर्शाता है। बालक वर्ग में भी खिलाड़ियों ने उल्लेखनीय प्रदर्शन किया। 14 वर्ष बालक वर्ग में भीमा, लक्की पाल और लोकेश वर्मा का चयन हुआ है, जबकि 17 वर्ष बालक वर्ग में जितेश वर्मा, अनुराग वर्मा, लोकेश पाल और विक्रम पाल ने संभाग स्तरीय प्रतियोगिता के लिए स्थान बनाया है। खिलाड़ियों का यह चयन बताता है कि नियमित अभ्यास, सही मार्गदर्शन और आवश्यक संसाधन मिलने पर ग्रामीण क्षेत्रों के युवा खिलाड़ी भी बड़े मंचों पर अपनी प्रतिभा का प्रदर्शन कर सकते हैं।

अदाणी फाउंडेशन द्वारा मयूर क्लब के माध्यम से क्षेत्र के बच्चों और युवाओं को नियमित खेल प्रशिक्षण, खेल सामग्री, प्रतियोगिताओं में भागीदारी के अवसर और अनुभवी प्रशिक्षकों का मार्गदर्शन उपलब्ध कराया जा रहा है। इस पहल का उद्देश्य युवाओं को खेलों से जोड़ने के साथ-साथ उनमें आत्मविश्वास, नेतृत्व क्षमता, अनुशासन और स्वस्थ जीवनशैली को बढ़ावा देना है। इन प्रयासों का ही परिणाम है कि मयूर क्लब के खिलाड़ी लगातार जिला और संभाग स्तर की प्रतियोगिताओं में अपनी पहचान बना रहे हैं। मयूर क्लब के प्रशिक्षकों ने बताया कि चयनित खिलाड़ी लंबे समय से नियमित अभ्यास कर रहे थे और उनकी मेहनत अब सफलता के रूप में सामने आई है। उन्होंने विश्वास व्यक्त किया कि आने वाले समय में ये खिलाड़ी राज्य और राष्ट्रीय स्तर की प्रतियोगिताओं में भी बेहतर प्रदर्शन करते हुए क्षेत्र का नाम रोशन करेंगे। खिलाड़ियों की इस उपलब्धि पर अभिभावकों, ग्रामीणों और खेल प्रेमियों ने प्रसन्नता व्यक्त करते हुए सभी चयनित खिलाड़ियों को शुभकामनाएं दी हैं। मयूर क्लब के खिलाड़ियों की सफलता क्षेत्र के अन्य बच्चों और युवाओं को भी खेलों में आगे बढ़ने के लिए प्रेरित कर रही है। ग्रामीण खेल प्रतिभाओं को आगे बढ़ाने की दिशा में अदाणी फाउंडेशन की यह पहल युवाओं को अपने सपनों को साकार करने का अवसर प्रदान कर रही है। आने वाले समय में इन खिलाड़ियों से जिला, राज्य और राष्ट्रीय स्तर की प्रतियोगिताओं में बेहतर प्रदर्शन की उम्मीद की जा रही है, जिससे क्षेत्र और संभाग का नाम और अधिक गौरवान्वित हो सके।

1500 मीटर लंबे तिरंगे के साथ गूंजा 'वंदे मातरम्'

तिरंगा यात्रा में स्काउट-गाइड ने दिया देशभक्ति,एकता का संदेश

रायपुर, 12 अगस्त। वंदे मातरम् के 150 वर्ष पूर्ण होने के उपलक्ष्य में राजधानी रायपुर में आयोजित भव्य तिरंगा यात्रा देशभक्ति के रंग में सराबोर नजर आई। बलबीर सिंह जुनेजा इंडोर स्टेडियम से सुभाष स्टेडियम तक निकाली गई इस ऐतिहासिक तिरंगा यात्रा में मुख्यमंत्री श्री विष्णु देव साय के नेतृत्व में मंत्रिमंडल के सदस्य, सांसद, विधायक, निगम-मंडल-आयोग के पदाधिकारी, जनप्रतिनिधि, बड़ी संख्या में स्काउट-गाइड, स्कूली छात्र-छात्राएं, एनसीसी स्वयंसेवक एवं नागरिक उत्साहपूर्वक शामिल हुए। लगभग 1500 मीटर लंबे तिरंगे के साथ निकली इस यात्रा ने राजधानी के वातावरण को राष्ट्रभक्ति और एकता के भाव से भर दिया। तिरंगा यात्रा में भारत स्काउट्स एवं गाइड्स छत्तीसगढ़ के स्काउट-गाइड, रोवर-रेंजर एवं पदाधिकारियों ने उत्साहपूर्वक सहभागिता निभाई। राज्य मुख्य आयुक्त श्री इंदरजीत सिंह खालसा के निर्देशन में स्काउट-गाइड दल ने 1500 मीटर लंबे तिरंगे की अगुवाई करते हुए अनुशासन, समर्पण और राष्ट्रभक्ति की भावना के साथ कदम से कदम मिलाया। स्काउट-गाइड एवं रोवर-रेंजर की अनुशासित और उत्साहपूर्ण सहभागिता ने तिरंगा यात्रा की गरिमा को और बढ़ाया।

यात्रा के दौरान 'भारत माता की जय' और 'वंदे मातरम्' के जयघोष से पूरा वातावरण देशभक्ति से गूंज उठा। हाथों में तिरंगा और मन में राष्ट्रप्रेम का भाव लिए स्काउट-गाइड, रोवर-रेंजर एवं पदाधिकारियों की सहभागिता ने नागरिकों में राष्ट्रीय एकता, अनुशासन और देश के प्रति समर्पण की भावना को और मजबूत किया। भारत स्काउट्स एवं गाइड्स छत्तीसगढ़ की इस सहभागिता ने युवाओं को राष्ट्रप्रेम, अनुशासन, सेवा और राष्ट्रीय ध्वज के प्रति सम्मान का संदेश दिया। 1500 मीटर लंबे तिरंगे के साथ निकली यह भव्य तिरंगा यात्रा प्रदेशवासियों के लिए अविस्मरणीय और ऐतिहासिक पल रही। यह यात्रा केवल राष्ट्रीय ध्वज के सम्मान का आयोजन नहीं, बल्कि देशभक्ति के जज्बे, एकता और राष्ट्रीय गौरव की सामूहिक अभिव्यक्ति बनी। जिस तरह तिरंगा हजारों हाथों में शान से लहरा रहा था, उसी तरह लोगों के हृदय में देशभक्ति का ज्वार उमड़ता दिखाई दिया।

छत्तीसगढ़ की पहली महिला सांसद मिनीमाता को पुण्यतिथि पर किया नमन

■ तरुण छत्तीसगढ़ संवाददाता

तिल्दा नेवर 12 अगस्त। तिल्दा नेवरा ब्लाक कांग्रेस ग्रामीण अध्यक्ष बलदाऊ साहू ने छत्तीसगढ़ की प्रथम महिला सांसद मिनीमाता की पुण्यतिथि पर उन्हें याद किया। उन्होंने कहा, छत्तीसगढ़ की प्रथम महिला सांसद एवं छत्तीसगढ़ राज्य की स्वप्नदृष्टा, कर्मठ समाज सेविका मिनी माता जी की पुण्यतिथि पर हम सब सादर नमन करते हैं।

समाज में व्याप्त छुआछूत, गरीबी, अशिक्षा तथा पिछड़ापन दूर करने के लिए मिनीमाता ने अपना सम्पूर्ण जीवन समर्पित कर दिया। नारी शिक्षा, मजदूरों के उत्थान के लिए काम करने के साथ साथ उन्होंने बाल-विवाह और दहेज प्रथा जैसी समाजिक बुराईयों के खिलाफ समाज से संसद तक अपनी आवाज को बुलंद किया।

छत्तीसगढ़ में कृषि तथा सिंचाई के लिए हसदेव बांध परियोजना भी उन्हीं की दूर-दृष्टि का परिणाम है। भिलाई इस्पात संयंत्र में स्थानीय निवासियों को

रोजगार और औद्योगिक प्रशिक्षण के अवसर उपलब्ध कराने की दिशा में आज भी उन्हें याद किया जाता है। हम सब ऐसे व्यक्तित्व पर गर्व करते हैं।

मिनीमाता ने पूरा जीवन समर्पित कर दिया- हरी मारखण्डे : ब्लॉक कांग्रेस ग्रामीण मंडल अध्यक्ष हरी मारखण्डे ने छत्तीसगढ़ की प्रथम महिला सांसद मिनीमाता की पुण्यतिथि पर उन्हें नमन किया है. उन्होंने कहा कि मिनीमाता ने समाज के निचले तबके के कल्याण और पिछड़ेपन को दूर करने के लिए अपना पूरा जीवन समर्पित कर दिया. उन्होंने नारी शिक्षा के लिए उल्लेखनीय कार्य किए. उनका जीवन हम सबके लिए अनुकरणीय है.

सिमगा पुलिस ने अंतर जिला शातिर वाहन चोर गिरोह का पर्दाफाश किया

बलौदाबाजार 12 अगस्त। (तरुण छत्तीसगढ़ संवाददाता)। जिला बलौदाबाजार-भाटापारा में संपत्ति संबंधी अपराधों एवं वाहन चोरी की घटनाओं पर नकेल कसने हेतु पुलिस अधीक्षक श्री गौरव राय के कुशल निर्देशन में चलाए जा रहे विशेष अभियान के तहत थाना सिमगा पुलिस को अंतरज़िला वाहन चोर गिरोह का पर्दाफाश करने में बड़ी सफलता मिली है। पुलिस ने गिरोह के कब्जे से कुल 13 चोरी की गाड़ियां बरामद करते हुए 03 शातिर आरोपियों को गिरफ्तार किया है। सब्जी मार्केट से स्कूटी चोरी की रिपोर्ट पर CCTV से मिला सुरागः- प्रार्थीया टेमप्रिया सोनवानी द्वारा दिनांक 05.08.2026 को थाना सिमगा में रिपोर्ट दर्ज कराई गई कि दिनांक 04.08.2026 को सब्जी मार्केट सिमगा से उनकी स्कूटी अज्ञात चोर द्वारा पार कर दी गई है। थाना सिमगा में अपराध पंजीबद्ध कर विवेचना में लिया गया। पुलिस अधीक्षक श्री गौरव राय के मार्गदर्शन में गठित पुलिस टीम

द्वारा कस्बे में लगे CCTV सर्विलांस कैमरों के फुटेज खंगाले गए, जिसमें संदेही चोरी की स्कूटी को पैदल ले जाता हुआ दिखाई दिया। इस दौरान पुलिस टीम द्वारा सिमगा से भाटापारा, हथबंद, सुहेला सड़क मार्ग में लगे सैकड़ों की संख्या में सीसीटीवी फुटेज का गहन अवलोकन किया गया, जिसके आधार पर तथा मुखबिर एवं तकनीकी साक्ष्यों की मदद से संदेहियों को घेराबंदी कर पकड़ा गया। विधि विरोधी किशोर का इस्तेमाल एवं चोरी का तरीकाः- ?हिरासत में लेकर कड़ाई से पूछताछ करने पर आरोपियों ने चौंकाने वाले खुलासे किए। आरोपियों द्वारा विधि विरोधी किशोर का इस्तेमाल कर मार्केट/बाजार क्षेत्रों से गाड़ियों की रेकी कर चोरी करवाई जाती थी। इसके बाद चोरी की मोटरसाइकिलों, पार्ट्स और वाहनों को आपस में खपाया जाता था। ?गिरोह द्वारा मुख्य रूप से बलौदाबाजार-भाटापारा, रायपुर, बिलासपुर एवं जांजगीर-चांपा के भीड़भाड़ वाले बाजार इलाकों को निशाना बनाया जाता था। आरोपियों के विरुद्ध अकेले बलौदाबाजार-भाटापारा जिले में 06 आपराधिक प्रकरण दर्ज हैं, वहीं पड़ोसी जिलों में भी मोटरसाइकिल चोरी के कई मामले पंजीकृत हैं। मामले की जांच एवं विवेचना क्रम में आरोपियों के विरुद्ध अपराध क्र. 326/2026 धारा 303(2), 317(2),340,95,112 BNS, किशोर न्याय अधिनियम 2015 की धारा 83(2), एम.वी. एक्ट की धारा 39, 142(ख)(4) पंजीबद्ध किया गया है तथा सभी आरोपियों को आज दिनांक 09.08.2026 को विधिवत गिरफ्तार कर माननीय न्यायालय के समक्ष प्रस्तुत करते की प्रक्रिया की जा रही है।

प्रभारी मंत्री राजेश अग्रवाल ने ली विभागीय समीक्षा बैठक

रायपुर 12 अगस्त। गौरेला पेन्ड्रा मरवाही जिले के प्रभारी मंत्री एवं पर्यटन, संस्कृति, धार्मिक न्यास एवं धर्मस्व मंत्री श्री राजेश अग्रवाल ने आज कलेक्ट्रेट स्थित अरपा सभा कक्ष में जिला अधिकारियों की बैठक लेकर विभिन्न विभागों की योजनाओं के क्रियान्वयन, लक्ष्य एवं उपलब्धियों की विस्तार से समीक्षा की। उन्होंने अधिकारियों को शासन की जनकल्याणकारी योजनाओं का प्रभावी क्रियान्वयन सुनिश्चित करते हुए उनका लाभ समाज के अंतिम छोर तक पहुंचाने के निर्देश दिए। उन्होंने कहा कि विकास कार्यों का वास्तविक उद्देश्य तभी पूरा होगा, जब शासन की योजनाओं और सुविधाओं का लाभ पात्र हितग्राहियों तक समय पर पहुंचे। बैठक में विधायक श्री प्रणव कुमार मरपची, जिला पंचायत अध्यक्ष सुश्री समीरा पैकरा, उपाध्यक्ष राजा उपेन्द्र बहादुर सिंह, कलेक्टर श्री विजय दयाराम के, पुलिस अधीक्षक श्री मनोज खिलारी, जिला पंचायत के मुख्य कार्यपालन अधिकारी श्री मुकेश रावटे सहित विभिन्न विभागों के अधिकारी उपस्थित थे।

नशामुक्ति अभियान के बीच तिल्दा-नेवरा में नशे का कारोबार, युवाओं को बचाने की चुनौती

■ तरुण छत्तीसगढ़ संवाददाता

तिल्दा नेवर 12 अगस्त। नगर में नशे के खिलाफ जागरूकता अभियान और नशामुक्ति कार्यक्रम लगातार आयोजित किए जा रहे हैं। इसके बावजूद नशे के अवैध कारोबार को लेकर सामने आ रही शिकायतें गंभीर चिंता का विषय बनी हुई हैं। गांजा, शराब और नशीली गोलियों की अवैध बिक्री पर पुलिस एवं प्रशासन द्वारा समय-समय पर कार्रवाई भी की जा रही है, लेकिन सवाल यह है कि आखिर नशे का कारोबार पूरी तरह खत्म क्यों नहीं हो पा रहा है? नगरवासियों का कहना है कि नशे का असर सबसे अधिक युवा वर्ग पर पड़ रहा है। यदि युवाओं तक नशीले पदार्थ आसानी से पहुंच रहे हैं तो केवल जागरूकता कार्यक्रम आयोजित करना पर्याप्त नहीं होगा। नशे की मांग के साथ-साथ उसकी आपूर्ति पर प्रभावी रोक लगाना भी जरूरी है।

हर दिन कार्रवाई, फिर भी कारोबार पर पूरी तरह अंकुश क्यों नहीं: स्थानीय प्रशासन और पुलिस द्वारा नशे के खिलाफ कार्रवाई किए जाने की खबरें सामने आती रहती हैं। इसके बावजूद यदि अवैध बिक्री की शिकायतें लगातार बनी हुई हैं, तो कार्रवाई के साथ नशे की सप्लाई के स्रोत और पूरे नेटवर्क तक पहुंचने की जरूरत है।

जागरूकता के साथ रोजगार और सकारात्मक माहौल भी जरूरी: युवाओं को नशे से दूर रखने के लिए परिवार और समाज की भूमिका महत्वपूर्ण है। खेल, शिक्षा, रोजगार, कौशल विकास और सामाजिक गतिविधियों से युवाओं को जोड़ने के साथ नशे की गिरफ्त में आ चुके लोगों के लिए परामर्श एवं पुनर्वास की व्यवस्था भी मजबूत करनी होगी। तिल्दा-नेवरा को नशामुक्त बनाने के लिए अब केवल कार्यक्रम नहीं, बल्कि जागरूकता के साथ लगातार निगरानी, अवैध नशा पर प्रभावी कार्रवाई और युवाओं के भविष्य के लिए ठोस पहल की जरूरत है। बड़ा सवाल यही है–नशामुक्ति के आयोजन बढ़ेंगे या नशे के कारोबार की जड़ तक पहुंचकर उसे रोकने की ठोस रणनीति बनेगी?

शह-मात के खेल में सालिक नवाज और परिधि लिल्हारे ने मारी बाजी

■ तरुण छत्तीसगढ़ संवाददाता

डोंगरगढ 12 अगस्त। न्यू राजनांदगांव चैस एसोसिएशन , एलिगेंट कॉलेज वा दिग्विजय स्टेडियम समिति के संयुक्त तत्वाधान में दो दिवसीय क्लासिकल अंडर 19 जूनियर बालक बालिका शतरंज स्पर्धा का आयोजन 8 -9 अगस्त को किया गया.इस स्पर्धा का समापन समारोह 9 अगस्त को छ.ग.प्रदेश के पूर्व मुख्यमंत्री आदरणीय श्री डॉ.रमन सिंह जी, राजनांदगांव जिले के सांसद श्री संतोष पाण्डेय जी,छ.ग.के उप.मुख्यमंत्री श्री माननीय अरुण सॉव जी ,जिला भाजपा के अध्यक्ष श्री कोमल सिंह राजपूत,स्टेडियम समिति के सचिव रमेश पटेल जी, जिला क्रिकेट एसोसिएशन के सचिव योगेश बागड़ी जी की उपस्थिति में हुआ.कार्यक्रम का शुभारंभ अतिथियो के द्वारा नन्हे प्रतिभागियों के साथ शतरंज़ खेल की चाल चल कर किया गया .जिससे सभी प्रतिभागियों में एक अलग उत्साह देखने को मिला ततपश्चात पुरस्कार वितरण समारोह हुआ. जिसमे प्रथम स्थान पर राजनानदगाव के सालिक नवाज़ मनिहार,वा बालिका वर्ग में दुर्ग जिले की कु.परिधि लिल्हारे ने शय मात के खेल में बाज़ी मारी,द्वितीय स्थान पर साहिल पटेल,तृतीय स्थान पर प्रवीण कुमार साहू,रहे बालिका वर्ग में द्वितीय स्थान पर प्रकृति सूर्यवंशी,तृतीय स्थान पर अर्निका पारख, छुरिया की राहत कुरैशी नेअपनी आयु वर्ग में श्रेष्ठ प्रदर्शन किया वा पुरस्कार प्राप्त किया,इनके अतिरिक्त प्रतिभास्थली ज्ञानोदय विद्यापीठ स्कूल की वर्तिका जैन,आर्या जैनमाही जैन,आर्या जैन,दिवी जैन.चहक गजेन्द्र, ने अपनी आयु वर्ग में श्रेष्ठ प्रदर्शन किया वही सात साल के नन्हे बालक लबद्ध परमार ने अंडर 19 में भाग ले कर विशेष पुरस्कार जीता.इनके श्रेष्ठ प्रदर्शन के लिए ट्रॉफी प्रदान की गई है. इसके अतिरिक्त अपनी अपनी आयु में प्रथम द्वितीय तृतीय स्थान प्राप्त शतरंज खिलाड़ियों को ट्रॉफी,सर्टिफिकेट मंचस्त आतिथियो के द्वारा दिया गया है..टूर्नामेंट के निर्णायक मिथलेश बंजारे जी थे,कार्यक्रम का सफल मंच संचालन कु.फराह अंजुम द्वारा किया गया.उक्त जानकारी संस्था के अध्यक्ष मो.अज़हर नवाज़ ने दी हैं.वा सभी प्रतिभागियों के उज्वल भविष्य की कामना की है।

आदिवासी धुव्र गोंड़ समाज विश्व आदिवासी दिवस मनाया

सिमगा12 अगस्त। विश्व आदिवासी दिवस के अवसर पर सिमगा में आदिवासी ध्रुव गोंड़ समाज की ओर से विशाल रैली निकाली गई। जुलूस में सैकड़ो की संख्या में युवा शामिल हुए। आदिवासी वेशभूषा में सजे युवाओं ने पारंपरिक अंदाज में शामिल होकर अपनी संस्कृति और एकता का संदेश दिया। रैली में बड़ी संख्या में आदिवासी समाज के युवा पारंपरिक वेशभूषा में नजर आए। हाथों में झंडे और पारंपरिक वाद्ययंत्र लेकर युवाओं ने उत्साह के साथ रैली में हिस्सा लिया। आयोजन के दौरान आदिवासी संस्कृति, परंपरा और समाज की एकजुटता का संदेश दिया गया। जिसमे समाज के लोगों ने अपनी संस्कृति परंपरा के हिसाब से पूजा अर्चना किए मनीराम ने कहा –यह दिवस आदिवासी समुदायों के हक–अधिकार, जल, जंगल और जमीन के संरक्षण के साथ उनकी रीति–रिवाज और परंपराओं को सम्मान देने का अवसर है । कार्यक्रम में प्रमुख रूप सेमुख्य अतिथि मानी राम, शंकरलाल, रामकुमार, अध्यक्ष मनीराम मराई ,प्रदेश सहसचिव कृष्णा कुंजाम, .केशवराम ध्रुव –उपाध्यक्ष ,छेदू राम ध्रुव –दिवान , पवन कुमार ध्रुव –कोषाध्यक्ष बिसंभु ध्रुव –महामंत्री चंदूलाल ध्रुव –सचिव खेमराज शोरी सचिव, शंकर लाल मराई –प्रभारी .रामकुमार ध्रुव.गणेश नेताम, डोमार ध्रुव, खेलावन ध्रुव, शिकेश ध्रुव लोकेश ध्रुव मिथिले ध्रुव, डोमार ध्रुव, रोहितकुमार ध्रुव, परस ध्रुव, परस कुंजाम, महेश ध्रुव, टोप्पो ,रामरतन ध्रुव कोर्राम ध्रुव, सुरेश ध्रुव,कीर्तन ध्रुव,कर्मचारी प्रकोष्ठ झिरिया परिक्षेत्र सिमगा का युवाओं बुर्जुग महिलाएं बच्चे भी बहुत ही संख्या में उपस्थित रहे।

देशभक्ति की भावना पैदा करना तो अच्छी बात है...

जिस देश में हम रहते हैं, उस देश के प्रति भक्ति की भावना तो हर नागरिक में होनी चाहिए। देश का नागरिक होने के नाते तो हर आदमी के भीतर देशभक्ति की भावना होनी चाहिए।हम आजाद देश में रहते हैं,यह आजादी हमें देशभक्तों ने दिलाई है। इसलिए हर राष्ट्रीय पर्व १५ अगस्त व २६ जनवरी को लोगों में देशभक्ति की भावना पैदा करने वाले,देशभक्ति की भावना को मजबूत करने वाले कार्यक्रम हर राज्य में राज्य सरकार तो करती है, गैर सरकारी संगठन व संस्थाएं भी करती है ताकि लोगों को पता रहे कि देश को आजादी यूं ही नहीं मिल गई है, लाखों लोगों के बलिदान से मिली है और देश के लिए बलिदान वही लोग कर सकते हैं जिनके मन में देशभक्ति की भावना होती है यानी देश के लिए कुछ करने का जज्बा होता है। देशभक्त लोग देश में जितने ज्यादा होते है, उससे देश उतना मजबूत होता है।देश मजबूत रहे और मजबूत हो इसलिए देशभक्ति की भावना को जब भी बढ़ावा कोई भी देता है तो उसका स्वागत होना चाहिए। उससे प्रेरणा लेनी चाहिए और हर किसी को देशभक्ति बढ़ाने वाला कार्यक्रम करना चाहिए या ऐसे कार्यक्रम में उत्साह से शामिल होना चाहिए।

देश का स्वतंत्रता दिवस १५ अगस्त को मनाया जाता है,भाजपा ने हर साल की तरह स्वंतत्रता दिवस के पहले १० से १७ अगस्त तक तिरंगा यात्रा पूरे देश में निकालने का फैसला किया और निकाला तो यह तो अच्छी बात है। इसका तो स्वागत किया जाना चाहिए कि भाजपा देश के लोगों में स्वतंत्रता दिवस के मौके पर लोगों में देश की आजादी के प्रतीक तिरंगा यात्रा निकाल रही है,लोगों में देशभक्ति की भावना पैदा कर रही है, उसे मजबूत कर रही है।इस मौके पर तो किसी संगठन को कहने की जरूरत नहीं होती कि उसे क्या करना चाहिए।सभी सरकारी व गैरसरकारी संगठन ऐसे मौको पर कई तरह का आयोजन करते हैं,देश की आजादी के लिए बलिदान करने वालों को याद करते हैं।उनके बलिदान को नमन करते हैं क्योंकि आज हम आजाद भारत में है तो देशभक्ति की भावना से भरे हुए लाखों लोगों के बलिदान के कारण है। इसका तो किसी तरह से किसी को विरोध नहीं करना चाहिए। ऐसे राष्ट्रीय पर्व के दौरान तो राजनीति बिलकुल नहीं होना चाहिए. सभी राजनीतिक दलों को अपने राजनीतिक मतभेद भूलकर राष्ट्रीय पर्व को मिलजुलकर मनाना चाहिए। यह मौका नहीं होता है किसी को कहने का कि आप तिरंगा यात्रा निकाल सकते, आप तिरंगा यात्रा निकालने योग्य नहीं है। राजधानी में तिरंगा यात्रा का शुभारंभ इंडोर स्टेडियम से हुआ और इसमें सभी वर्ग के लोगों ने उत्साह से हिस्सा लिया। इस यात्रा के दौरान हाथों में लहराते तिरंगे,भारत माता के जयघोष,देशभक्ति के गीतों से हजारों लोगों में अजब उत्साह रहा और इसे देखने वालों को लोगों को यह यात्रा अच्छी लगी और उनमें देशप्रेम की भावना पैदा हुई। ऐसे आयोजनों का मकसद ही देश के लोगों में देशप्रेम की भावना जगाना होता है,उनको एहसास दिलाना होता है कि देश तुम्हारे लिए क्या कुछ नहीं करता है, तुमको ऐसे देश से प्रेम करना चाहिए. उसके प्रति कृतज्ञता का भाव होना चाहिए।इस मौके पर सीएम साय ने यह कहकर कि तिरंगा हमारी आन,बान और शान है,यह केवल हमारा राष्ट्रीय ध्वज नहीं है,बल्कि भारत की एकता,अखंडता स्वाभिमान व असंख्य बलिदानों का प्रतीक है।देश मे देश के लोगों को बांधने की अद्भुत शक्ति है।अलग अलग भाषाओं संस्कृतियों,परंपराओं और क्षेत्रों की विविधता के बाद भी तिरंगा हम सभी को भारतीय होने के साझा गौरव से जोड़ता है।तिरंगा लहराता है तो हर भारतीय के मन में स्वाभाविक रूप से देश के प्रति गौरव व सम्मान का भाव जागृत करता है,तिरंगा झंडे का सम्मान किया है।सीएम साय ने सच कहा है कि तिरंगा हमें भारतीय होने का एहसास दिलाता है और एकजुट करता है। १५ अगस्त के पहले के कुछ दिन कम से कम राजनीतिक दलों को राजनीति नहीं करनी चाहिए, कोई राजनीतिक बयान नहीं देना चाहिए लेकिन अफसोस ऐसा होता नहीं है,कांग्रेस अध्यक्ष दीपक बैज को यह बयान देने की जरूरत नहीं थी कि भाजपा तिरंगा यात्रा निकाल रही है, वह लोग तिरंगा यात्रा निकाल रहे है जो तिरंगे के तीन रंगों को अपशगुन बताते थे,जो साल आजादी के बाद ५२ सालों तक अपने मुख्यालय में तिरंगा नहीं फहराते थे,जो लोग आजादी की लड़ाई के समय अंग्रेजों की दलाली कर रहे थे,जो लोग अंग्रेजों से वजीफे लेते थे।कांग्रेस भूल रही है कि इस देश में तिरंगा यात्रा निकालने का अधिकार आज सबको है। वह किसी को नहीं रोक सकती वह सिर्फ आलोचना कर सकती है, इससे उसका कद ऊंचा नहीं होता है, इससे तो उसका कद और कम होता है कि वह खुद को तिरंगा यात्रा नहीं निकाल रही है और भाजपा निकाल रही है उसकी आलोचना कर रही है। कांग्रेस भूल रही है कि जो सत्ता में होता है उसे १५ अगस्त पर कई तरह के कार्यक्रमो का आयोजन पूरे देश और पूरे राज्य में करना होता है। कांग्रेस सत्ता में रहती तो यह उसका काम होता,कांग्रेस को जनता ने इस काम के लायक नहीं समझा तो कांग्रेस को न तो निराश होना चाहिए और न ही खीझना चाहिए कि यह काम भाजपा क्यों कर रही है, लोकतंत्र में जनता सर्वोपरि है,उसके आदेश का सम्मान करना चाहिए।संविधान में नहीं लिखा है कि देश में तिरंगा फहराने का अधिकार सिर्फ कांग्रेस को है, कांग्रेस के अलावा किसी को तिरंगा फहराने का अधिकार नहीं है।यह कांग्रेस की गलतफहमी है और कांग्रेस को अपनी यह गलतफहमी दूर कर लेनी चाहिए साथ ही कांग्रेस को यह गलतफहमी भी दूर करे लेनी चाहिए कि उसके पास देशभक्ति का प्रमाणपत्र देने का अधिकार है जिसे वह कहेगी वही देशभक्त होना और जिसे वह देशभक्त नहीं कहेगी वह देशभक्त नहीं होगा ।

विशेष लेख

विजन 2047 की ओर बढ़ता छत्तीसगढ़ : उद्योगों से आत्मनिर्भर और समृद्ध भविष्य की नई पहल

छगन लाल लोन्हारे,(संयुक्त संचालक, जनसंपर्क)

छत्तीसगढ़ आज औद्योगिक विकास के ऐसे दौर से गुजर रहा है, जहां विकास का उद्देश्य केवल नए उद्योग स्थापित करना नहीं, बल्कि रोजगार, निवेश, आधुनिक तकनीक और क्षेत्रीय संतुलन के माध्यम से प्रदेश को आत्मनिर्भर बनाना है। मुख्यमंत्री विष्णु देव साय के नेतृत्व में राज्य सरकार ने उद्योगों के लिए पारदर्शी, निवेश-अनुकूल और रोजगारोन्मुख वातावरण तैयार किया है। वहीं वाणिज्य एवं उद्योग मंत्री श्री लखन लाल देवांगन के मार्गदर्शन में नई औद्योगिक नीतियों ने निवेशकों का विश्वास मजबूत किया है और छत्तीसगढ़ को देश के प्रमुख औद्योगिक राज्यों की कतार में खड़ा करने की दिशा में ठोस कदम बढ़ाए हैं।

25 जून 2026 में टेक्सटाइल पार्क की पहली यूनिट का किया भूमिपूजन-वाणिज्य एवं उद्योग मंत्री श्री लखन लाल देवांगन तथा आवास एवं पर्यावरण मंत्री श्री ओ.पी. चौधरी ने 25 जून 2026 में टेक्सटाइल पार्क की पहली यूनिट का भूमिपूजन किया। तमिलनाडु की स्विफ्ट टेक्सटाइल्स प्राइवेट लिमिटेड 235 करोड़ रुपए के निवेश से यहां गारमेंट मैन्युफैक्चरिंग यूनिट लगा रही है। इस यूनिट से 4650 लोगों को रोजगार मिलेगा। टेक्सटाइल और गारमेंट मैन्युफैक्चरिंग के क्षेत्र में छत्तीसगढ़ को देश-विदेश में नई पहचान दिलाने यह अहम कदम है।

प्रदेश में 3,009 नई औद्योगिक इकाइयां स्थापित हुईं, जिनसे 50,807 लोगों को प्रत्यक्ष रोजगार-बीते ढाई वर्षों में राज्य को 264 औद्योगिक परियोजनाओं से लगभग 8.22 लाख करोड़ रुपये के निवेश प्रस्ताव प्राप्त हुए, जिनसे 1.72 लाख से अधिक रोजगार सृजन की संभावना है। इनमें से 154 परियोजनाएं निर्माण, भूमि आवंटन अथवा उत्पादन के चरण तक पहुंच चुकी हैं, जबकि कई इकाइयां पहले ही उत्पादन प्रारंभ कर चुकी हैं। इसी अवधि में प्रदेश में 3,009 नई औद्योगिक इकाइयां स्थापित हुईं, जिनसे 50,807 लोगों को प्रत्यक्ष रोजगार मिला। यह दर्शाता है कि सरकार की औद्योगिक नीतियां केवल कागज़ों तक सीमित नहीं हैं, बल्कि धरातल पर परिणाम दे रही हैं।

विनिर्माण इकाइयों को 100 प्रतिशत तथा सेवा क्षेत्र को 150 प्रतिशत तक वित्तीय प्रोत्साहन-राज्य सरकार द्वारा लागू औद्योगिक विकास नीति 2024-30 ने उद्योगों के लिए नई संभावनाओं के द्वार खोले हैं। विनिर्माण इकाइयों को 100 प्रतिशत तथा सेवा क्षेत्र को 150 प्रतिशत तक वित्तीय प्रोत्साहन, एमएसएमई और सेवा उद्योगों को पहली बार विशेष लाभ, टेक्सटाइल, लॉजिस्टिक्स, आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस और फार्मा जैसे भविष्य के क्षेत्रों के लिए विशेष पैकेज तथा स्थानीय युवाओं के रोजगार को बढ़ावा देने वाले प्रावधान इस नीति की प्रमुख विशेषताएं हैं। यही कारण है कि नवा रायपुर में देश का पहला एआई डेटा सेंटर एसईजेड और सेमीकंडक्टर क्षेत्र में निवेश जैसी बड़ी पहलें आकार ले रही हैं।

ईज़ ऑफ डूइंग बिज़नेस को सर्वोच्च प्राथमिकता-मुख्यमंत्री विष्णु देव साय की सरकार ने ईज़ ऑफ डूइंग बिज़नेस को सर्वोच्च प्राथमिकता दी है। 150 से अधिक सेवाओं वाला नया सिंगल विंडो सिस्टम, निवेशकों के लिए एआई आधारित वाणी प्रणाली, 500 से अधिक प्रशासनिक सुधार तथा प्रक्रियाओं का सरलीकरण निवेशकों के लिए बेहतर माहौल तैयार कर रहा है। औद्योगिक विकास का लाभ प्रदेश के प्रत्येक क्षेत्र तक पहुंचे, इसके लिए राज्य में 23 नए औद्योगिक क्षेत्र विकसित किए गए तथा 15 जिलों में 26 नए औद्योगिक कार्य स्वीकृत किए गए हैं। सरोरा में प्लास्टिक पार्क और नवा रायपुर में टेक्सटाइल, फार्मा एवं रेडीमेड गारमेंट पार्क जैसे प्रयास औद्योगिक आधार को और मजबूत बना रहे हैं।

सरकार का लक्ष्य अधिक से अधिक रोजगार सृजित करना और निवेश को तेजी से धरातल पर उतारना-हाल ही में विजन 2047 औद्योगिक विकास की संभावनाएं विषयक चर्चा में उद्योगमंत्री लखन लाल देवांगन ने स्पष्ट किया कि सरकार का लक्ष्य अधिक से अधिक रोजगार सृजित करना और निवेश को तेजी से धरातल पर उतारना है, ताकि स्थानीय युवाओं को अधिकतम अवसर मिल सकें। आने वाले वर्षों के लिए सरकार निर्यात नीति, स्टार्टअप एवं नवाचार नीति, कौशल विकास, इंटर्नशिप, एमएसएमई सशक्तिकरण और बस्तर-सरगुजा जैसे क्षेत्रों में औद्योगिक विस्तार पर विशेष ध्यान दे रही है। राज्य सरकार का उद्देश्य स्पष्ट है, प्रदेश के युवाओं को रोजगार मांगने वाला नहीं, बल्कि रोजगार देने वाला उद्यमी बनाना है।

छत्तीसगढ़ के इंडस्ट्रियल इकोसिस्टम और बिज़नेस-फ्रेंडली माहौल में निवेशकों के बढ़ते भरोसे-राज्य में नई औद्योगिक नीति लागू होने के बाद पिछले 18 महीनों में 8 लाख करोड़ रुपए से ज्यादा के निवेश का वादा मिला है, जिससे अलग-अलग सेक्टर में 1.6 लाख से ज़्यादा रोज़गार के अवसर पैदा होने की संभावना है। टेक्सटाइल और कपड़ों के अलावा, राज्य ने डेटा सेंटर, आईटी, फार्मास्यूटिकल्स, सेमीकंडक्टर और इलेक्ट्रिकल व इलेक्ट्रॉनिक्स मैन्युफैक्चरिंग में भी बड़े निवेश आकर्षित किए हैं। यह छत्तीसगढ़ के इंडस्ट्रियल इकोसिस्टम और बिज़नेस-फ्रेंडली माहौल में निवेशकों के बढ़ते भरोसे को दिखाता है।

नवा रायपुर में आधुनिक टेक्सटाइल पार्क की स्थापना-राज्य में वस्त्र एवं परिधान उद्योग को प्रोत्साहित करने नवा रायपुर में आधुनिक टेक्सटाइल पार्क की स्थापना की जा रही है। इसके 81 एकड़ क्षेत्र में 2758 वर्गमीटर से लेकर 38 हजार 180 वर्गमीटर आकार के भूखंड उपलब्ध हैं। टेक्सटाइल, गारमेंट एवं परिधान उद्योग, तकनीकी वस्त्र (ज्मबीदपबंस ज्मगजपसमे) तथा इनके सहायक एवं पूरक उद्योगों की स्थापना के लिए निवेशकों को यहां सुविधाएं उपलब्ध कराई जा रही हैं।

प्रदेश आज उद्योगों की नई उड़ान भरने के लिए पूरी तरह तैयार-विजन 2047 की दिशा में छत्तीसगढ़ का यह औद्योगिक अभियान केवल आर्थिक विकास की कहानी नहीं, बल्कि एक ऐसे भविष्य का निर्माण है जहां निवेश, नवाचार, रोजगार और समावेशी विकास मिलकर आत्मनिर्भर, विकसित और समृद्ध छत्तीसगढ़ की मजबूत नींव रख रहे हैं। मुख्यमंत्री विष्णु देव साय के नेतृत्व और उद्योग मंत्री श्री लखन लाल देवांगन के प्रयासों से प्रदेश आज उद्योगों की नई उड़ान भरने के लिए पूरी तरह तैयार है।

मेष राशि आज का दिन आपके लिए परेशानियां लेकर आ सकता है। लेकिन कार्यक्षेत्र में आज मेहनत का स्तर भी बढ़ेगा। आप अपने लक्ष्यों को पूरा करने के लिए पूरी लगन से जुटे रहेंगे। अधूरे काम पूरे करने पर आपको मानसिक संतुष्टि मिलेगी।

वृषभ राशि वृषभ राशि वालों को छोटी-सी लापरवाही भी बड़ा नुकसान करा सकती है। काम को लेकर आप अलर्ट मोड में रहें और कोई बड़ा फैसला लेने की बजाय अपने वर्तमान कार्यों पर ध्यान देना आपके लिए बेहतर रहेगा।

मिथुन राशि आज का दिन नई उम्मीदों से भरा हो सकता है। दिन नए अवसरों की शुरुआत का संकेत दे रहा है। मेहनत का अच्छा परिणाम मिलने की संभावना है। हालांकि, व्यापार में सोच-समझकर ही कोई निर्णय लें।

कर्क राशि आज का दिन आपके लिए खास रहेगा। छात्रों को विशेष लाभ संभव है। विद्यार्थी नई चीजें सीखने और अपने कौशल को निखारने के लिए उत्साहित रहेंगे। निवेश से जुड़े मामलों में किसी की सलाह पर आंख मूंदकर भरोसा करने से बचें।

सिंह राशि सिंह राशि वालों को सावधानी रखनी होगी। किसी भी काम में जल्दबाजी करने से बचें। प्रेम संबंधों में विश्वास और समझदारी बनाए रखेंगे तो रिश्ते और मजबूत होंगे। आज सही दिशा में की गई मेहनत आपको सफलता दिला सकती है।

कन्या राशि कन्या राशि वालों को सावधानी रखनी होगी। किसी अनजान व्यक्ति की बातों में आकर कोई बड़ा फैसला लेने से बचें। आत्मविश्वास बनाए रखें और अपने लक्ष्य पर पूरा ध्यान केंद्रित करें। संतान की संगति और गतिविधियों पर थोड़ा ध्यान देना जरूरी होगा।

तुला राशि आज अपनी पसंद और आराम से जुड़ी चीजों पर खर्च बढ़ सकता है। परिवार में विवाह या किसी मांगलिक कार्य से जुड़ी खुशखबरी मिल सकती है, जिससे पूरे घर का माहौल खुशनुमा रहेगा। करियर के क्षेत्र में आगे बढ़ने के नए अवसर मिल सकते हैं।

वृश्चिक राशि आज का दिन आपके लिए सामान्य रहेगा। अपनी ऊर्जा को सही दिशा में लगाएं। किसी महत्वपूर्ण काम के पूरा होने से मन को सुकून मिलेगा और आप खुद को तनावमुक्त महसूस करेंगे। करियर-कारोबार में सफलता मिल सकती है।

धनु राशि धनु राशि वालों के लिए दिन भागदौड़ भरा रहेगा, जो आपको थोड़ा थका सकती है। आज किए गए प्रयास भविष्य में आपके लिए बेहद लाभदायक साबित हो सकते हैं। नौकरी पाने के लिए भी अतिरिक्त मेहनत कर सकते हैं। कारोबार में सफलता मिल सकती है।

मकर राशि विद्यार्थियों को शिक्षकों का पूरा सहयोग मिलेगा, जिससे कठिन विषय भी आसान लगने लगेंगे। समाज में मान-सम्मान में वृद्धि और आर्थिक स्थिति में मजबूती आएगी। खास बात यह है कि मेहनत के अच्छे परिणाम प्राप्त हो सकते हैं।

कुंभ राशि कुंभ राशि वालों को सावधानी रखनी होगी। कोई बड़ा काम बनते-बनते अटक सकता है, जिससे तनाव होगा। किसी अनजान व्यक्ति पर जरूरत से ज्यादा भरोसा करना नुकसानदायक हो सकता है। जरूरी मामलों में सोच-समझकर कदम उठाएं।

मीन राशि मीन राशि वालों को सावधानी रखनी होगी। आत्मविश्वास में कमी इस समय आप महसूस करेंगे। माना जा रहा है कि विरोधियों की बातों या अफवाहों पर ध्यान देने की बजाय अपने लक्ष्य पर फोकस रखें। दोस्तों के साथ आपकी अनबन हो सकती है।

(वैश्विक विश्लेषण)

रूस ने परमाणु युद्ध का खोला मोर्चा

संजीव ठाकुर,वरिष्ठ पत्रकार, लेकक चिंतक, स्तंभकार, रायपुर

रूस और यूक्रेन के बीच चल रहा युद्ध अब केवल दो देशों के बीच सीमित संघर्ष नहीं रह गया है। यह युद्ध जितना लंबा खिंचता जा रहा है, उतना ही उसका अंतरराष्ट्रीय चरित्र गहरा होता जा रहा है। अमेरिका और यूरोप की ओर से यूक्रेन को हथियार तथा सैन्य सहायता मिलने के बीच रूस को उत्तर कोरिया से मिल रही सैन्य सहायता ने विश्व राजनीति के समीकरणों को नई दिशा दी है। विशेष चिंता इस बात को लेकर है कि उत्तर कोरिया अपनी सैन्य भागीदारी को और बढ़ा सकता है और बड़ी संख्या में सैनिक रूस भेज सकता है। रूस और उत्तर कोरिया दोनों परमाणु शक्ति संपन्न देश हैं और यूक्रेन के विरुद्ध रूस के प्रधानमंत्री व्लादिमीर पुतिन परमाणु हथियार तैनात कर दिए हैं जिससे रूस यूक्रेन युद्ध का संकट और गहराने लगा है। हाल के दिनों में यूक्रेनी राष्ट्रपति वोलोदिमिर जेलेंस्की ने दावा किया है कि रूस उत्तर कोरिया से बड़ी संख्या में सैनिकों की सहायता लेने की तैयारी कर रहा है। कुछ आकलनों में यह संख्या 30 से 50 हजार तक बताई गई है, सैनिकों तक की संभावित तैनाती की खबरों ने अंतरराष्ट्रीय चिंता बढ़ा दी है। हालांकि 50 हजार सैनिक भेजे जाने की संख्या को फिलहाल पुष्ट तथ्य के बजाय संभावित योजना या आकलन के रूप में देखना अधिक उचित होगा। रॉयटर्स के अनुसार अगस्त 2026 तक लगभग 14–15 हजार उत्तर कोरियाई सैनिकों की पहले की तैनाती की पुष्टि विभिन्न खुफिया आकलनों से हुई थी।

युद्ध में उत्तर कोरिया का प्रवेश उत्तर कोरिया और रूस के संबंधों में निर्णायक परिवर्तन वर्ष 2024 में आया, जब दोनों देशों ने व्यापक रणनीतिक साझेदारी और पारस्परिक सहायता की संधि की। इसके बाद उत्तर कोरिया ने रूस को युद्ध सामग्री उपलब्ध करानी शुरू की और उसके सैनिक रूस के कुर्स्क क्षेत्र में यूक्रेनी सेना के विरुद्ध रूसी सैनिकों के साथ दिखाई दिए।

शुरुआत में रूस और उत्तर कोरिया दोनों ने सैनिकों की मौजूदगी पर सार्वजनिक रूप से स्पष्ट जानकारी नहीं दी। लेकिन अप्रैल 2025 में दोनों देशों ने पहली बार स्वीकार किया कि उत्तर कोरियाई सैनिक रूस की ओर से युद्ध में शामिल हुए थे।

दक्षिण कोरिया के आकलन के अनुसार लगभग 15 हजार उत्तर कोरियाई सैनिक रूस भेजे गए थे। इनमें बड़ी संख्या में सैनिकों के हताहत होने की भी रिपोर्ट सामने आई। अप्रैल 2025 में दक्षिण कोरिया की राष्ट्रीय खुफिया सेवा ने लगभग 4,700 हताहतों का अनुमान दिया था, जिनमें करीब 600 सैनिकों के मारे जाने की बात कही गई थी।

उत्तर कोरिया की भूमिका केवल सैनिक भेजने तक सीमित नहीं है। वह रूस को भारी मात्रा में गोला-बारूद, तोपखाने और बैलिस्टिक मिसाइलों की आपूर्ति करता रहा है। Reuters की एक विस्तृत जांच के अनुसार उत्तर कोरिया ने रूस को लाखों तोपों के गोले उपलब्ध कराए हैं और कुछ समय में रूसी मोर्चे पर इस्तेमाल होने वाले गोला-बारूद में उत्तर कोरियाई आपूर्ति का हिस्सा अत्यंत महत्वपूर्ण रहा।

दक्षिण कोरिया ने भी उत्तर कोरिया द्वारा रूस को कम दूरी की बैलिस्टिक मिसाइलें, 170 मिमी स्वचालित तोपें और 240 मिमी रॉकेट लांचर उपलब्ध कराने का आकलन किया था।

अगस्त 2026 में स्थिति और गंभीर दिखाई देती है। न्यूज़ एजेंसी रायटर्स के अनुसार उत्तर कोरिया की लगभग 90 कर्मियों वाली एक मिसाइल इकाई, 120 तक बैलिस्टिक मिसाइलों और छह लॉन्चरों के साथ रूस के वोरोनेझ क्षेत्र में तैनात की जा रही है। इनमें से कम-से-कम 40 मिसाइलों की आपूर्ति होने तथा कुछ के यूक्रेन पर हमलों में इस्तेमाल होने की रिपोर्ट है।यदि वास्तव में उत्तर कोरिया बड़ी संख्या में अतिरिक्त सैनिक रूस भेजता है तो इसका प्रभाव केवल सैनिकों की संख्या बढ़ने तक सीमित नहीं होगा। इससे रूस को अपने सैनिकों को दूसरे मोर्चों पर पुनः व्यवस्थित करने की अतिरिक्त क्षमता मिल सकती है।

युद्ध में सैनिकों की संख्या का महत्व विशेष रूप से उस समय बढ़ जाता है जब संघर्ष लंबा और थकाऊ हो चुका हो। रूस यदि उत्तर कोरियाई सैनिकों को कुछ जिम्मेदारियों में इस्तेमाल करता है तो उसके अपने सैनिकों को अन्य क्षेत्रों में केंद्रित किया जा सकता है। यही कारण है कि यूक्रेन और उसके सहयोगी उत्तर कोरिया की बढ़ती भागीदारी को गंभीरता से देख रहे हैं।

हालांकि यह भी ध्यान रखना होगा कि उत्तर कोरियाई सैनिकों के लिए यूक्रेन का युद्ध एक बिल्कुल अलग प्रकार का युद्ध है। आधुनिक युद्ध में ड्रोन, इलेक्ट्रॉनिक युद्ध, उपग्रह निगरानी और सटीक हथियारों का महत्व अत्यधिक बढ़ गया है। उत्तर कोरियाई सैनिकों को शुरुआती चरण में आधुनिक ड्रोन युद्ध और युद्धक्षेत्र की परिस्थितियों से तालमेल बैठाने में कठिनाइयों का सामना करना पड़ा था, हालांकि बाद में उनके अनुकूलन की भी रिपोर्ट सामने आई। यह साझेदारी एकतरफा नहीं है। रूस को उत्तर कोरिया से सैनिक और युद्ध सामग्री मिल रही है, तो बदले में प्योंगयांग को सैन्य तथा तकनीकी लाभ मिलने की आशंका है।

दक्षिण कोरिया के आकलनों में कहा गया था कि उत्तर कोरिया को रूस से उपग्रह, ड्रोन, इलेक्ट्रॉनिक युद्ध और वायु रक्षा जैसी सैन्य तकनीकों में सहायता मिल सकती है। यही सबसे अधिक चिंताजनक है। यदि उत्तर कोरिया रूस से आधुनिक सैन्य तकनीक और युद्ध का व्यावहारिक अनुभव प्राप्त करता है तो इसका प्रभाव केवल रूस–यूक्रेन युद्ध तक सीमित नहीं रहेगा। इसका असर कोरियाई प्रायद्वीप की सुरक्षा व्यवस्था और पूर्वी एशिया के सामरिक संतुलन पर भी पड़ सकता है।

वैश्विक शक्ति-संतुलन के लिए खतरे की घंटी-उत्तर कोरिया पहले से ही परमाणु और मिसाइल क्षमता वाला देश है। रूस के साथ उसका गहरा होता सैन्य संबंध अमेरिका, दक्षिण कोरिया, जापान और यूरोपीय देशों के लिए नई रणनीतिक चुनौती पैदा करता है।

रूस को युद्ध में लगातार बाहरी सैन्य सहायता मिलना इस बात का संकेत भी है कि आधुनिक युद्ध अब केवल युद्धभूमि पर सैनिकों की क्षमता से तय नहीं होते। आर्थिक प्रतिबंधों के बावजूद यदि कोई देश वैकल्पिक आपूर्ति श्रृंखला बना लेता है तो लंबा युद्ध जारी रखने की उसकी क्षमता बढ़ सकती है।

दूसरी ओर, उत्तर कोरिया के लिए रूस के साथ संबंध आर्थिक और सैन्य दोनों दृष्टियों से महत्वपूर्ण हैं। अंतरराष्ट्रीय प्रतिबंधों से घिरे प्योंगयांग के लिए रूस के साथ बढ़ते संबंध उसे राजनीतिक और रणनीतिक सहारा प्रदान करते हैं।

उत्तर कोरिया की बढ़ती सैन्य भागीदारी निश्चित रूप से युद्ध को समाप्त करने की दिशा में सरल रास्ता नहीं बनाती। इसके विपरीत, यदि अतिरिक्त सैनिक, मिसाइल और गोला-बारूद युद्ध में लगातार आते रहे तो संघर्ष की तीव्रता और अवधि दोनों बढ़ सकती हैं। अगस्त 2026 में यूक्रेन में उत्तर कोरियाई निर्मित बैलिस्टिक मिसाइलों के इस्तेमाल की रिपोर्ट इस बदलते स्वरूप का उदाहरण है। हालिया रूसी हमलों में ऐसी मिसाइलों के इस्तेमाल का यूक्रेनी पक्ष ने दावा किया है।

इसका अर्थ यह है कि रूस–यूक्रेन युद्ध अब केवल यूरोपीय सुरक्षा का प्रश्न नहीं रहा। एशिया की सैन्य शक्तियां, पश्चिमी देश और रूस के सहयोगी—सभी किसी न किसी रूप में इस संघर्ष से जुड़े हैं।

भारत के लिए इस बदलते समीकरण को अत्यंत संतुलित दृष्टि से देखने की आवश्यकता है। भारत के रूस के साथ पुराने और महत्वपूर्ण सामरिक संबंध हैं, वहीं यूरोप, अमेरिका तथा इंडो-पैसिफिक देशों के साथ भी भारत की रणनीतिक साझेदारी लगातार मजबूत हुई है।

ऐसे वातावरण में भारत की पारंपरिक नीति—राष्ट्रीय हित सर्वोपरि रखते हुए सभी प्रमुख शक्तियों के साथ संवाद—और भी महत्वपूर्ण हो जाती है। भारत का हित युद्ध के विस्तार में नहीं बल्कि संवाद, कूटनीति और स्थायी शांति में है।

रूस–उत्तर कोरिया की सैन्य निकटता भारत के लिए एक और संदेश देती है कि विश्व व्यवस्था तेजी से बहुध्रुवीय हो रही है। आने वाले वर्षों में सैन्य गठबंधन, तकनीकी साझेदारी, ड्रोन, मिसाइल और कृत्रिम बुद्धिमत्ता जैसी क्षमताएं वैश्विक शक्ति-संतुलन को गहराई से प्रभावित करेंगी।

रूस–यूक्रेन युद्ध में उत्तर कोरिया की भूमिका आज एक छोटे सहयोगी की भूमिका से आगे बढ़ती दिखाई दे रही है। सैनिकों की तैनाती, लाखों गोला-बारूद की आपूर्ति और बैलिस्टिक मिसाइलों की उपलब्धता ने इस साझेदारी को वास्तविक सैन्य आयाम दे दिया है। 50 हजार सैनिकों की संभावित तैनाती की खबर यदि भविष्य में वास्तविकता बनती है तो युद्ध के समीकरण पर उसका महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ सकता है; लेकिन वर्तमान में इसे पुष्ट संख्या मानना जल्दबाजी होगी।

सबसे बड़ी चिंता यह है कि जिस युद्ध को समाप्त करने के लिए दुनिया कूटनीतिक रास्ते तलाश रही है, उसमें नए देश और नई सैन्य शक्तियां प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से जुड़ती जा रही हैं। इतिहास बताता है कि युद्ध शुरू करना जितना आसान दिखाई देता है, उसे समाप्त करना उतना ही कठिन होता है।

आज आवश्यकता इस बात की है कि रूस, यूक्रेन और उनके सहयोगी देशों के साथ-साथ उत्तर कोरिया जैसे नए सैन्य भागीदारों की भूमिका को भी अंतरराष्ट्रीय समुदाय गंभीरता से समझे। क्योंकि यदि युद्ध की आग को बुझाने के बजाय उसमें लगातार नया ईंधन डाला जाता रहा, तो उसकी लपटें केवल यूरोप तक सीमित नहीं रहेंगी—वे विश्व शांति और वैश्विक सुरक्षा की पूरी संरचना को प्रभावित कर सकती हैं।

दक्षिण बस्तर अंचल के ग्रामीण क्षेत्र में मनाया गया हरेली का तिहार

किसानों ने खेतों में खूंटा गाड़कर देवी-देवताओं की पूजा-अर्चना की

■ तरुण छत्तीसगढ़ संवाददाता

दंतेवाड़ा 12 अगस्त । दक्षिण बस्तर अंचल के ग्रामीण क्षेत्रों में बुधवार को हरियाली का पर्व हरेली अमूस त्यौहार पारंपरिक रीति रिवाज के साथ मनाया गया। अल सुबह खेतों में तेंदू-खूंटा गाड़ने के बाद किसानों ने देवी-देवताओं व कृषि औजारों तथा मवेशियों की विधि विधान से पूजा अर्चना कर सुख-समृद्धि की कामना की।

छत्तीसगढ़ संस्कृति की पहचान बन चुकी लोकपर्व हरेली त्यौहार श्रावण मास के कृष्ण पक्ष के अमावस्या के दिन प्रतिवर्ष मनाया जाता है। हरियाली का पर्व किसानों के लिए खासा महत्व का होता है। इस दिन कृषि कार्य बंद रहते हैं। कृषक अल सुबह उठकर नहा धोकर खेतों की ओर निकल पड़ते हैं और अपने अपने खेतों में अमूस खूंटा गाड़ते हैं। अमूस खूंटा तेंदू पेड़ के डण्डे से बनाया जाता है इसके ऊपरी भाग को भेलवां पत्ते में जड़ी बूटी जैसे की शतावर व

रचना पौधे के जड़ कंद को लपेटकर बांधा जाता है और इस अमूस खूंटे को खेतों के बीचों बीच गाड़ दिया जाता है। इसका तात्पर्य यह कि इससे खेतों में कीट का प्रकोप नहीं लगता और खेत में अच्छी फसल होती है। अमूस खूंटा गाड़ने के बाद कृषक घर लौट जाते हैं और अपने अपने देव-देवी की विधि विधान से पूजा अर्चना करते हैं। इस दिन किसान अपने कृषि कार्य में प्रयुक्त कुदाली, फावड़ा, नांगर, बसुला, बिंधना, हल एवं अन्य उपकरणों को धो-पोछकर घर के आंगन में दर्रा मिट्टी के उपर रखकर पूजा करते है। हरेली के दिन सुबह बैलों को नहलाकर लोंदी खिलाया जाता है। घरों में अच्छे अच्छे पकवान बनाए जाते हैं। बालुद के किसान शुभुनाथ ठाकुर ने बताया कि हरेली आमुस के दिन हम सभी किसान अपने कुल देवी देवताओं से यह प्रार्थना करते हैं कि हमारे खेतों के लगे फसल अच्छी हो, पशु निरोग रहें, लोगों को किसी प्रकार की विपत्ति का सामना करना पड़े। इस दिन सभी ग्रामीण गऊ माता की पूजा करते हैं। हरेली पर्व में गेडी का बहुत अधिक महत्व होता है। बच्चे इस दिन गेडी चढ़कर इसका भरपुर आनंद लेते हैं। कई जगहों में गेडी दौड़ प्रतियोगिता भी आयोजित की जाती है। हरेली अमावस्या पर्व छत्तीसगढ़ का प्रमुख पर्व है इस लिहाज से सरकार ने पर्व के मद्देनजर आज पूरे प्रदेश में सरकारी अवकाश भी घोषित किया है।

हरियाली अमावस्या पर मांईजी मंदिर में हुई अमूस पूजा

दंतेवाड़ा 12 अगस्त। छत्तीसगढ़ का प्रमुख लोकपर्व हरियाली अमावस्या पर्व से एक दिन पूर्व ही मां दंतेश्वरी देवी के मंदिर में अमूस तिहार की पूजा संपन्न हुई।गौरतलब है कि धर्म नगरी दंतेवाड़ा के दंतेश्वरी मंदिर में कोई भी तीज त्यौहार तिथि से एक दिन पूर्व ही मनाए जाने की रियासतकालीन परंपरा रही है जिसे आज भी निभाई जा रही है। बस्तर के आदिवासी मां दंतेश्वरी को अपनी आराध्य कुल देवी मानते हैं। मंगलवार को दंतेश्वरी मंदिर में अमूस तिहार पूजा विधि विधान से संपन्न किया गया। मंदिर के पुजारी परमेश्वर जिया ने बताया कि मांईजी मंदिर में परंपरानुसार एक दिन पूर्व ही हरेली अमूस तिहार पूजा संपन्न किया गया। सुबह से ही मंदिर के सेवादारों द्वारा पूरे मंदिर परिसर की धुलाई सफाई किया गया तदोपरांत मंदिर के अंदर विराजे पत्थर से निर्मित सभी देवी देवताओं की प्रतिमाओं को तिल के तेल से पुछाई की गई। जिसके उपरांत मांईजी की विशेष पूजा

आरती सपंन्न हुई। अमूस तिहार पूजा उपरांत मांईजी को गुड से बने चिला एवं उड़द दाल से बनाए गए बड़ा का भोग लगाया गया।

एक नजर

जय श्रीराम के जयघोष के साथ अयोध्या रवाना हुआ बीजापुर का श्रद्धालु जत्था

बीजापुर, 12 अगस्त (तछसं.)। अयोध्या धाम में प्रभु श्रीराम के दर्शन के लिए बीजापुर जिले के श्रद्धालुओं का जत्था मंगलवार को रामलला दर्शन रथ से रवाना हुआ। रथ रवाना होने के दौरान 'जय श्रीराम' के जयघोष से माहौल भक्तिमय हो गया।जनपद सदस्य श्रीमती धनेश्वरी बाकड़े, एसडीएम जागेश्वर और नोडल अधिकारी मुकेश देवांगन ने हरी झंडी दिखाकर रथ को रवाना किया। इस दौरान वरिष्ठ नागरिक संजय लुंकड, अशोक रावत सहित अन्य गणमान्य नागरिक और श्रद्धालु मौजूद रहे अयोध्या में रामलला के दर्शन को लेकर श्रद्धालुओं में खासा उत्साह नजर आया। श्रद्धालुओं ने इसे अपने जीवन की महत्वपूर्ण और यादगार धार्मिक यात्रा बताया। अधिकारियों और जनप्रतिनिधियों ने सभी श्रद्धालुओं को सुखद, मंगलमय और सुरक्षित यात्रा की शुभकामनाएं दीं।

वन मंत्री केदार कश्यप ने तेंदूपत्ता संग्राहक परिवारों को दिया सामाजिक सुरक्षा का संबल

जगदलपुर, 12 अगस्त। छत्तीसगढ़ के वन एवं जलवायु परिवर्तन, परिवहन, सहकारिता तथा संसदीय कार्य मंत्री केदार कश्यप ने आज दरभा, बस्तर वनमंडल में आयोजित कार्यक्रम में राजमोहिनी देवी तेंदूपत्ता संग्राहक सामाजिक सुरक्षा योजना के अंतर्गत हितग्राहियों को सहायता राशि वितरित की। कार्यक्रम हरेली बर्ड फेस्टिवल एवं विश्व हाथी दिवस 2026 के अवसर पर आयोजित किया गया, जिसमें जनप्रतिनिधियों, प्रशासनिक अधिकारियों तथा बड़ी संख्या में तेंदूपत्ता संग्राहक परिवारों ने सहभागिता की।

इस अवसर पर वन मंत्री केदार कश्यप ने 5 तेंदूपत्ता संग्राहकों को 2-2 लाख रुपये की दर से कुल 10 लाख रुपये की सहायता राशि के चेक प्रदान किएकार्यक्रम को संबोधित करते हुए केदार कश्यप ने कहा कि तेंदूपत्ता संग्रहण से प्राप्त पारिश्रमिक और प्रोत्साहन राशि वनवासी, आदिवासी एवं ग्रामीण अंचलों के परिवारों की आर्थिक स्थिति को मजबूत करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। उन्होंने कहा, ÷हमारी सरकार का संकल्प है कि तेंदूपत्ता संग्राहक केवल वन संपदा के संग्रहणकर्ता न रहें, बल्कि आर्थिक रूप से सशक्त, सामाजिक रूप से सुरक्षित और सम्मानजनक जीवन जीने वाले परिवार बनें। संग्राहक परिवारों का आर्थिक सशक्तिकरण हमारी सर्वोच्च प्राथमिकता है। केदार कश्यप ने कहा कि राजमोहिनी देवी तेंदूपत्ता संग्राहक सामाजिक सुरक्षा योजना इसी संकल्प को धरातल पर उतारने वाली महत्वपूर्ण पहल है।

22 एवं 23 अगस्त को टाउन हॉल, जगदलपुर में होगा जूडो प्रतियोगिता का आयोजन

जगदलपुर, 12 अगस्त। ऑल बस्तर जिला जूडो संघ के तत्वावधान में आयोजित होने वाली 14वीं इंटर स्कूल जूडो प्रतियोगिता 2026 के पोस्टर का विमोचन आज दिनांक 11 अगस्त 2026 को नगर पालिक निगम जगदलपुर के महापौर माननीय श्री संजय पाण्डेय जी के करकमलों द्वारा किया गया।यह प्रतियोगिता आगामी 22 एवं 23 अगस्त 2026 को स्थानीय टाउन हॉल, जगदलपुर में आयोजित की जाएगी। प्रतियोगिता की तैयारियां आयोजक संस्था द्वारा पूर्ण कर ली गई हैं।

17 छात्राओं को मिली साइकिल, दूर-दराज से स्कूल आने वाली बेटियों को मिलेगी राहत

सरस्वती साइकिल योजना से छात्राओं के चेहरों पर दिखी खुशी

■ तरुण छत्तीसगढ़ संवाददाता

बीजापुर, 12 अगस्त। सरस्वती साइकिल योजना के तहत कन्या हाईस्कूल पोर्टाकेबिन गंगालूर में कक्षा 9वीं की 17 छात्राओं को साइकिल का वितरण किया गया। ग्राम पंचायत गंगालूर की सरपंच पायल हेमला एवं उप सरपंच नरेंद्र हेमला ने छात्राओं को साइकिल प्रदान की। साइकिल मिलते ही छात्राओं के चेहरों पर खुशी और उत्साह साफ नजर आया।

सरस्वती साइकिल योजना का उद्देश्य छात्राओं को शिक्षा से जोड़ने के साथ ही उन्हें नियमित रूप से विद्यालय आने के लिए प्रोत्साहित करना है। विशेषकर दूर-दराज और ग्रामीण क्षेत्रों से विद्यालय पहुंचने वाली छात्राओं के लिए साइकिल आवागमन का महत्वपूर्ण साधन साबित होगी। इससे छात्राओं को स्कूल आने-जाने में होने वाली परिवहन संबंधी परेशानियों से राहत मिलेगी और उनकी पढ़ाई में निरंतरता बनी रहेगी।

इस अवसर पर सरपंच पायल हेमला ने छात्राओं को मन लगाकर पढ़ाई करने, विद्यालय में अनुशासन बनाए रखने तथा अपने लक्ष्य को हासिल करने के लिए प्रेरित किया। उन्होंने कहा कि बेटियों की शिक्षा को बढ़ावा देने में सरस्वती साइकिल योजना महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है। साइकिल मिलने से छात्राओं का आत्मविश्वास बढ़ेगा और वे नियमित रूप से विद्यालय पहुंच सकेंगी।

दूर-दराज की छात्राओं के लिए मील का पत्थर

कन्या हाईस्कूल पोर्टाकेबिन की प्राचार्य नीलम कोण्डागुरला ने कहा कि आदिवासी बाहुल्य क्षेत्र में सरस्वती साइकिल योजना छात्राओं के लिए मील का पत्थर साबित हो रही है। दूर-दराज के क्षेत्रों से आने वाली कई छात्राओं को विद्यालय पहुंचने में आवागमन की परेशानी होती थी, लेकिन साइकिल मिलने से उनकी यह समस्या काफी हद तक दूर होगी।

उन्होंने कहा कि योजना से छात्राओं की विद्यालय में नियमित उपस्थिति बढ़ने के साथ उनकी शिक्षा के प्रति रुचि भी बढ़ेगी। प्राचार्य ने विद्यालय परिवार की ओर से सभी छात्राओं को उनके उज्ज्वल भविष्य और आगामी परीक्षाओं में सफलता के लिए शुभकामनाएं दीं।

तर्रेम में पुनर्वासित माओवादियों और ग्रामीणों की बैठक

■ तरुण छत्तीसगढ़ संवाददाता

बीजापुर, 12 अगस्त। थाना तर्रेम पुलिस द्वारा पुनर्वासित माओवादियों एवं ग्रामीणों के साथ बैठक आयोजित की गई। बैठक में पुनर्वासित माओवादियों को समाज की मुख्यधारा से जुड़कर शांतिपूर्ण एवं सम्मानजनक जीवन जीने के लिए प्रेरित किया गया।पुलिस ने बताया कि पुनर्वासित माओवादियों की थाना स्तर पर लगातार मॉनिटरिंग की जा रही है। उन्हें शासन की पुनर्वास एवं जनकल्याणकारी योजनाओं का लाभ लेकर आत्मनिर्भर बनने और परिवार के साथ सामान्य जीवन जीने के लिए मार्गदर्शन दिया जा रहा है।बैठक में ग्रामीणों से क्षेत्र में किसी भी संदिग्ध व्यक्ति या गतिविधि की जानकारी तत्काल पुलिस को देने की अपील की गई। साथ ही युवाओं को शिक्षा, खेल और रोजगार से जुड़ने तथा बच्चों को नियमित स्कूल भेजने के लिए प्रेरित किया गया।स्वतंत्रता दिवस को लेकर पुलिस ने आत्मसमर्पित एवं पुनर्वासित माओवादियों से 15 अगस्त को समाज के साथ मिलकर स्वतंत्रता दिवस मनाने की अपील की। पुलिस ने हिंसा का रास्ता छोड़कर लोकतांत्रिक व्यवस्था और समाज की मुख्यधारा से जुड़कर क्षेत्र के विकास में सहभागी बनने का आह्वान किया।बैठक का उद्देश्य पुलिस और ग्रामीणों के बीच विश्वास एवं सहयोग बढ़ाते हुए क्षेत्र में शांति, सुरक्षा और विकास का वातावरण मजबूत करना रहा।

छोटे भाई की हत्या के आरोप में बड़ा भाई गिरफ्तार

■ तरुण छत्तीसगढ़ संवाददाता

दुर्ग,12 अगस्त। दुर्ग शहर में रिश्तों को तार-तार कर देने वाली एक सनसनीखेज घटना सामने आई है। दुर्ग सिटी कोतवाली थाना क्षेत्र के साई नगर बघेरा में आपसी विवाद के चलते एक बड़े भाई ने अपने ही सगे छोटे भाई की कुल्हाड़ी से प्रहार कर निर्मम हत्या कर दी। घटना का मुख्य कारण च्वाइस सेंटर के संचालन और उसके हिसाब किताब को लेकर काफी दिनों से चला आ रहा पारिवारिक मनमुटाव बताया जा रहा है वारदात को सूचना मिलते ही पुलिस ने आरोपी बड़े भाई को गिरफ्तार कर लिया है दुर्ग सिटी कोतवाली पुलिस ने बताया कि साई नगर बघेरा निवासी देवेंद्र देवांगन और उसका छोटा भाई कैलाश देवांगन च्वाइस सेंटर के कारोबार से जुड़े हुए थे दोनों भाइयों के बीच पिछले कुछ दिनों से च्वाइस सेंटर के संचालन, कमाई के

मृतक

आरोपी

हिसाब किताब और पुराने च्वाइस सेंटर के अधिक चलने को लेकर लगातार विवाद चल रहा था सुबह लगभग 5 बजे जब घर के सदस्य जाग रहे थे तभी दोनों भाइयों के बीच इसी बात को लेकर एक बार फिर बहस शुरू हो गई देखते ही देखते दोनों के बीच कहासुनी इतनी बढ़ गई कि मामला हाथापाई तक पहुंच गया विवाद के चरम पर पहुंचते ही गुस्से में आकर बड़े भाई देवेंद्र देवांगन ने अपना मानसिक संतुलन खो दिया। उसने घर में रखी कुल्हाड़ी उठाई और छोटे भाई कैलाश देवांगन के सिर पर करारा प्रहार कर दिया वार इतना भीषण था कि कैलाश के सिर पर गंभीर चोट आई और कहा लूहलूहान होकर बह जाने के कारण कैलाश की मौके पर ही तड़प-तड़पकर मौत हो गई घटना के बाद परिवार में चीख-पुकार मच गई और आसपास के इलाके में दहशत का माहौल बन गया घटना की सूचना तुरंत दुर्ग सिटी कोतवाली पुलिस को दी गई। सूचना मिलते ही पुलिस टीम मौके पर पहुंची और घटना स्थल का जायजा लिया। पुलिस ने शव को पंचनामा कार्रवाई के बाद पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया गया था मामले में त्वरित कार्रवाई करते हुए दुर्ग सिटी कोतवाली थाने पुलिस ने आरोपी को गिरफ्तार है देवेंद्र देवांगन को हत्या के मामले दर्ज किया है।

बजरंग दल ने शिवलिंग पर आपत्तिजनक टिप्पणी करने वाले का किया पुतला दहन, सौंपा ज्ञापन

कोंड़ागांव, 12 अगस्त । जिले के केशकाल बजरंग दल के पदाधिकारी और कार्यकर्ता आज मंगलवार को अनुविभागीय अधिकारी कार्यालय केशकाल पहुंचे और अरुण पन्नालाल एवं हंसराज गोयल के खिलाफ शिकायत दर्ज कराते हुए निष्पक्ष जांच की मांग की है। केशकाल बजरंग दल के पदाधिकारी और कार्यकर्ताओं ने पवित्र शिवलिंग को लेकर कथित तौर पर आपत्तिजनक टिप्पणी करने वाले अरुण पन्नालाल एवं हंसराज गोयल का पुतला दहन भी किया । बजरंग दल के कार्यकर्ताओं का आरोप है कि शिवलिंग जैसे धार्मिक आस्था से जुड़े पवित्र प्रतीक को लेकर कथित रूप से अभद्र टिप्पणी की गई, जिससे हिंदू समाज की धार्मिक भावनाएं आहत हुई हैं। बजरंग दल के पूर्व जिला संयोजक नीरज अग्निहोत्री ने कहा कि धार्मिक आस्था से जुड़े विषय बेहद संवेदनशील होते हैं।

280 माताओं तक पहुंचा 'पहला दूध, पहला हक' का संदेश

■ तरुण छत्तीसगढ़ संवाददाता

बीजापुर, 12 अगस्त। विश्व स्तनपान सप्ताह के तहत महिला एवं बाल विकास विभाग और स्वास्थ्य विभाग द्वारा सांस्कृतिक भवन बीजापुर में जागरूकता कार्यक्रम आयोजित किया गया। कार्यक्रम में करीब 280 माताओं और गर्भवती महिलाओं ने हिस्सा लिया।कार्यक्रम में बीएमओ डॉ. चेलापति राव और चेरपाल के डॉ. पटेल ने माताओं को स्तनपान के महत्व की जानकारी दी। उन्होंने बताया कि बच्चे के जन्म के एक घंटे के भीतर मां का पहला पीला गाढ़ा दूध यानी कोलोस्ट्रम जरूर पिलाना चाहिए। यह बच्चे की रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाने में मदद करता है।माताओं को बताया गया कि जन्म से छह माह तक शिशु को केवल मां का दूध दिया जाना चाहिए। छह माह के बाद पूरक आहार के साथ स्तनपान जारी रखना चाहिए।कार्यक्रम में माताओं के संतुलित और पौष्टिक आहार पर भी जोर दिया गया। हरी सब्जियां, दाल, फल, दूध सहित पौष्टिक आहार लेने तथा चिकित्सकीय सलाह के अनुसार आयरन-फोलिक एसिड का सेवन करने की जानकारी दी गई।

ई-कामर्स एक्सपोर्ट सम्मिट का आयोजन 14 अगस्त को

जगदलपुर, 12 अगस्त । जिला व्यापार एवं उद्योग केन्द्र जगदलपुर द्वारा आगामी 14 अगस्त को कलेक्टोरेट के प्रेरणा कक्ष में प्रातः 10 बजे से निर्यात जागरूकता कैम्प एवं ई-कामर्स एक्सपोर्ट सम्मिट का आयोजन किया गया है। इस कार्यक्रम का उद्देश्य जिले के सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्यम, संभावित निर्यातकों को निर्यात संबंधी प्रक्रियाओं, शासन की योजनाओं और अंतरराष्ट्रीय बाजारों में उपलब्ध व्यापारिक अवसरों की जानकारी प्रदान करना है।उक्त निर्यात जागरूकता कैम्प एवं ई-कामर्स एक्सपोर्ट सम्मिट में डीजीएफटी, एक्जिम बैंक, ईसीजीसी, सिडबी, इंडिया पोस्ट, लीड बैंक, एमएसएमई डिपार्टमेंट, वॉलमार्ट और डीएचएल सहित विभिन्न संस्थाओं के विशेषज्ञों द्वारा आईईसी पंजीयन, निर्यात प्रक्रिया, ई-कॉमर्स एक्सपोर्ट, डाक निर्यात, निर्यात वित्त, एक्सपोर्ट डाक्यूमेंटेशन तथा निर्यात से संबंधित विस्तृत जानकारी एवं मार्गदर्शन प्रदान किया जाएगा।

पुलिस ने नाइजीरिया की छात्रा को पैसा वापस दिलाया

■ तरुण छत्तीसगढ़ संवाददाता

भिलाई, 12 अगस्त। नाइजीरिया की एक छात्रा को वीजा रद्द होने के बाद अपने वतन लौटने में आर्थिक परेशानी का सामना करना पड़ रहा था। उसने भिलाई के कोहका क्षेत्र में किराए पर मकान लेने के लिए मकान मालिक को एडवांस और सुरक्षा राशि के रूप में 24 हजार रुपए दिए थे। हालांकि बाद में वह मकान में रहने नहीं आई। रकम वापस नहीं मिलने पर उसने सुपेला थाने में शिकायत की। पुलिस की तत्परता से छात्रा को उसकी पूरी रकम वापस दिला दी गई नाइजीरियाई छात्रा एमई मेल ने रायपुर स्थित कलिंगा यूनिवर्सिटी से पढ़ाई करने के बाद एमटेक की पढ़ाई के लिए भिलाई के रुंगटा कॉलेज में प्रवेश लिया था। इसके लिए उसने कोहका निवासी सरोज नायक पति वीरेंद्र नायक के मकान में

रहने के लिए किराए पर मकान लिया था मकान मालिक ने उससे 12 हजार रुपए एडवांस और 12 हजार रुपए सुरक्षा राशि के रूप में लिए थे। पुलिस ने बताया कि किसी कारणवश विदेशी छात्रा एमई मेल मकान में रहने नहीं आई। इसी बीच उसका वीजा रद्द हो गया और उसे वापस नाइजीरिया लौटना था। छात्रा के पास घर लौटने के लिए पर्याप्त पैसे नहीं थे। उसने मकान मालिक से मकान के लिए दिए गए 24 हजार रुपए वापस मांगे, लेकिन रकम नहीं मिलने पर उसने पुलिस से शिकायत की।शिकायत मिलते ही पुलिस ने की कार्रवाई सुपेला पुलिस ने बताया कि नाइजीरियन छात्रा एमई मेल ने शिकायत में अपनी स्थिति से पुलिस को अवगत कराया पुलिस ने तत्काल हस्तक्षेप किया और मकान मालिक से संपर्क कर उसके द्वारा दी गई पूरी 24 हजार रुपए की रकम छात्रा को वापस दिलाई सुपेला थाने पुलिस की पहल के बाद छात्रा को आर्थिक राहत मिली है

25 किमी की कांवड़ यात्रा में गूंजा हर-हर महादेव

■ तरुण छत्तीसगढ़ संवाददाता

बीजापुर/मदेड 12 अगस्त। श्री राम मंदिर समिति मदेड के तत्वावधान में तिमेड़ से मदेड तक करीब 25 किलोमीटर की भव्य कांवड़ यात्रा निकाली गई। सुबह 10 बजे शुरू हुई यात्रा करीब 10 घंटे बाद रात 8 बजे मदेड स्थित श्री राम मंदिर पहुंचकर संपन्न हुई।यात्रा के दौरान 'हर-हर महादेव', 'बम-बम भोले' और 'जय श्रीराम' के जयघोष से पूरा क्षेत्र भक्तिमय हो गया। बड़ी संख्या में श्रद्धालुओं ने कांवड़ उठाकर पैदल यात्रा में हिस्सा लिया। महिलाओं ने कलश और कांवड़ के साथ सहभागिता की, वहीं बच्चों और युवाओं में भी खासा उत्साह नजर आया।

मुस्लिम समाज ने किया कांवड़ियों का स्वागत

यात्रा के दौरान मुस्लिम समाज के लोगों ने जगह-जगह कांवड़ियों का स्वागत किया।

कई स्थानों पर पानी और शीतल पेय की व्यवस्था कर श्रद्धालुओं की सेवा की गई। मुस्लिम समाज की इस पहल को सामाजिक सद्भाव और भाईचारे की मिसाल बताया गया।

राम मंदिर पहुंचकर हुआ जलाभिषेक

करीब 25 किलोमीटर की यात्रा पूरी कर कांवड़िए रात 8 बजे मदेड स्थित श्री राम मंदिर पहुंचे। यहां उनका पुष्पवर्षा और आतिशबाजी के साथ स्वागत किया गया। तिमेड़ से लाए गए पवित्र जल से भगवान का जलाभिषेक किया गया। इसके बाद महाआरती हुई और श्रद्धालुओं के बीच महाप्रसाद का वितरण किया गया।

कांवड़ यात्रा से एकता, सेवा और सामाजिक समरसता का संदेश

आयोजकों ने कहा कि कांवड़ यात्रा ने धार्मिक आस्था के साथ एकता, सेवा, भाईचारे और सामाजिक समरसता का संदेश दिया। समिति ने यात्रा को सफल बनाने में सहयोग करने वाले श्रद्धालुओं, ग्रामीणों, युवाओं, महिलाओं और विशेष रूप से सेवा करने वाले मुस्लिम समाज के नागरिकों का आभार जताया।

आदिवासी समाज को बांटने का प्रयास कर रही भाजपा सरकार: छविन्द्र कर्मा

■ तरुण छत्तीसगढ़ संवाददाता

दंतेवाड़ा 12 अगस्त। राजीव भवन में आज कांग्रेस कमेटी द्वारा पत्रवार्ता आयोजित किया गया। पत्रवार्ता में भाजपा सरकार पर आदिवासी समाज की उपेक्षा करने का आरोप लगाया। छबिंद्र कर्मा ने कहा कि 9 अगस्त को पूरी दुनिया में आदिवासी समाज ने विश्व आदिवासी दिवस मनाया, लेकिन भाजपा के किसी नेता, आदिवासी जनप्रतिनिधि, यहां तक कि राष्ट्रपति और मुख्यमंत्री की ओर से भी आदिवासी समाज को बधाई संदेश नहीं दिया गया। कांग्रेस ने आरोप लगाया कि वर्ष 2023 से पहले भाजपा के नेता विश्व आदिवासी दिवस पर बधाई देते रहे हैं, लेकिन सत्ता में आने के बाद भाजपा सरकार आदिवासी संस्कृति, परंपरा और अस्मिता के प्रति उदासीन रवैया अपना रही है।

कांग्रेस ने कहा कि विश्व आदिवासी दिवस केवल उत्सव मनाने का अवसर नहीं, बल्कि आदिवासी समाज के जल, जंगल, जमीन, संस्कृति और संवैधानिक अधिकारों को याद करने का दिन है।

आदिवासी समाज ने सदियों से प्रकृति और पर्यावरण के संरक्षण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। छत्तीसगढ़ की पहचान भी आदिवासी संस्कृति, परंपरा और विरासत के बिना अधूरी है।कांग्रेस ने बस्तर, सरगुजा, कांकेर, नारायणपुर, दंतेवाड़ा, बीजापुर, सुकमा, कोरबा, जशपुर, बलरामपुर और गरियाबंद सहित प्रदेश के विभिन्न आदिवासी अंचलों का उल्लेख करते हुए कहा कि यहां के आदिवासी समाज ने अपनी संस्कृति, परंपराओं और संघर्ष के माध्यम से छत्तीसगढ़ को अलग पहचान दिलाई है।कांग्रेस ने आदिवासी वीरों को नमन करते हुए कहा कि भगवान बिरसा मुंडा, शहीद वीर नारायण सिंह, गुंडाधुर सहित असंख्य आदिवासी वीरों ने अन्याय और शोषण के खिलाफ संघर्ष किया। उनके योगदान को कभी भुलाया नहीं जा सकता।छबिंद्र कर्मा ने कहा कि दंतेवाड़ा जिले में तीन स्थानों पर विश्व आदिवासी दिवस का आयोजन किया गया। उन्होंने भाजपा सरकार पर आदिवासी समाज को बांटने का प्रयास करने का आरोप लगाते हुए कहा कि आदिवासी समाज को अपने अधिकारों के लिए एकजुट होने की जरूरत है। उन्होंने कहा कि जल, जंगल और जमीन आदिवासी समाज की पहचान और जीवन का आधार हैं। इन्हें बचाने के लिए सभी आदिवासियों को एकजुट होकर संघर्ष करना होगा। उन्होंने कहा कि आदिवासी समाज अपनी संस्कृति और परंपराओं को लेकर हमेशा गौरवान्वित रहा है और आगे भी अपनी पहचान की रक्षा के लिए मजबूती से खड़ा रहेगा।

आईएसबीएम विश्वविद्यालय में विद्यार्थियों का स्वागत तिलक लगाकर,वेलकम किट देकर किया

■ तरुण छत्तीसगढ़ संवाददाता

छुरा,12 अगस्त। आईएसबीएम विश्वविद्यालय, नवापारा (कोसमी), छुरा में नव प्रवेशित विद्यार्थियों को विश्वविद्यालय के शैक्षणिक वातावरण, गतिविधियों, संसाधनों एवं विद्यार्थी जीवन से परिचित कराने के उद्देश्य से इंडक्शन प्रोग्राम फॉर न्यू एडमिटेड स्टूडेंट्स 2026-27 का आयोजन किया गया। कार्यक्रम की शुरुआत तिलक एवं वेलकम किट प्रदान कर विद्यार्थियों के स्वागत से हुई। इसके पश्चात दीप प्रज्वलन, मां सरस्वती वंदना एवं राजकीय गीत के साथ कार्यक्रम का औपचारिक शुभारंभ किया गया। विश्वविद्यालय के रजिस्ट्रार डॉ. बी.पी. भोल ने स्वागत उद्बोधन देते हुए नव प्रवेशित विद्यार्थियों को विश्वविद्यालय परिवार में शामिल होने पर शुभकामनाएं दीं।कार्यक्रम में नो योर कैंपस के माध्यम से विद्यार्थियों को विश्वविद्यालय परिसर एवं उपलब्ध सुविधाओं की जानकारी दी गई। इसके बाद डीएसडब्ल्यू डॉ. ओमप्रकाश साहू ने विद्यार्थी कल्याण एवं विश्वविद्यालय में उपलब्ध विद्यार्थी सहायता सेवाओं के संबंध में विद्यार्थियों को मार्गदर्शन प्रदान किया।विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफेसर (डां.) आनंद महलवार जी अपने संबोधन में कहा कि - इंडक्शन प्रोग्राम का मुख्य उद्देश्य नव प्रवेशित विद्यार्थियों को विश्वविद्यालय से जोड़ना, आत्मविश्वास विकसित करना, शैक्षणिक एवं करियर संबंधी मार्गदर्शन देना तथा उन्हें जिम्मेदार एवं संवेदनशील नागरिक बनने के लिए प्रेरित किया।

अकादमिक डीन एवं आईक्यूएसी निदेशक डॉ. एन. कुमार स्वामी ने विद्यार्थियों को संबोधित करते हुए शिक्षा, अनुशासन, व्यक्तित्व विकास एवं भविष्य निर्माण के लिए प्रेरित किया।ज्वाइंट रजिस्ट्रार डॉ. रानी झा ने विद्यार्थियों को संबोधित करते हुए कहां की बच्चों में स्किल डेवलपमेंट होना चाहिए, जिससे वह भारत सरकार के विभिन्न स्किल इंडिया के तहत अपने आप को विकसित कर सके। कार्यक्रम में आईएफएस श्री के.के. बिशेन द्वारा माइंडफुलनेस एवं तनाव प्रबंधन पर विशेष सत्र आयोजित किया गया। जिसमें श्री अरविंद झा (टीचर) माइंडफूलनेस और स्ट्रेस मैनेजमेंट के तहत सभी नवप्रवेशी छात्र-छात्राओं एवं आईएसबीएम विश्वविद्यालय के कर्मचारी एवं अधिकारियों को ध्यान सत्र करवाया गया जिसमें सभी कुछ पल के लिए तनाव मुक्त महसूस हुआ। विद्यार्थियों के लिए श्री हरीश प्रधान द्वारा फोटोग्राफी संबंधी सत्र भी आयोजित किया गया। कार्यक्रम का विशेष आकर्षण श्री बिरसिंह चक्रधारी जी द्वारा मिट्टी के विभिन्न आकर्षक दिया, गमला, मटका, सील , बच्चे स्वयं अपने हाथों से बनाने का प्रयास किया जो बच्चों के लिए एक अनुभवानात्मक पल रहा एलुमनी रियल टॉक पैनल रहा, जिसमें आईएसबीएम के डा. लक्ष्मीकांत सिन्हा आईएसबीएम एलुमनी अध्यक्ष ने पूर्व विद्यार्थियों से प्रश्नोत्तर एवं संवाद किया गया जिसमें पूर्व विद्यार्थियों ने अपने विश्वविद्यालयी अनुभव, करियर यात्रा एवं महत्वपूर्ण सीख नव प्रवेशित विद्यार्थियों के साथ साझा की। इसके साथ ही अतिथियों एवं एलुमनी का सम्मान, क्रिएटिव आर्ट्स-पॉटरी , इंटरैक्टिव डिपार्टमेंटल शोकेस तथा मेंटर-मेंटी संवाद जैसी गतिविधियां आयोजित की गईं। कार्यक्रम के अंत में कार्यक्रम समन्वयक श्री युगल किशोर राजपूत द्वारा वोट ऑफ थैंक्स के पश्चात विद्यार्थियों ने अपने मेंटर्स के साथ लंच में सहभागिता की।इंडक्शन प्रोग्राम का द्वितीय दिवस 13 अगस्त 2026 को आयोजित किया जाएगा, जिसमें स्थानीय क्षेत्र एवं सामाजिक भ्रमण के अंतर्गत मां जतमई मंदिर, घटारानी ऐतिहासिक विरासत स्थल तथा निकटवर्ती ग्राम/एनजीओ का भ्रमण कराया जाएगा। इस गतिविधि का उद्देश्य विद्यार्थियों को स्थानीय संस्कृति, ऐतिहासिक विरासत एवं सामाजिक जिम्मेदारी से जोड़ना है।

पावर लिफ्टिंग में दल्ली राजहरा की बेटियों ने किया शानदार प्रदर्शन

■ तरुण छत्तीसगढ़ संवाददाता

दल्ली राजहरा, 12 अगस्त। छत्तीसगढ़ की खेल राजधानी धमतरी में आयोजित तीन दिवसीय राज्य स्तरीय पावर लिफ्टिंग प्रतियोगिता में लौह नगरी दल्लीराजहरा की बेटियों ने शानदार प्रदर्शन किया।द हेल्थ प्लैनेट जिम की महिला खिलाड़ियों ने अपनी ताकत और मेहनत का लोहा मनवाते हुए 43 किलोग्राम वर्ग में 2 पदक अपने नाम किए।43 किलोग्राम वर्ग में द हेल्थ प्लैनेट जिम की माही देशमुख ने 130 किलोग्राम वजन उठाकर रजत पदक अपने नाम किया। वहीं इसी वर्ग में जिम की दूसरी खिलाड़ी किंजल निषाद ने 125 किलोग्राम वजन उठाकर कांस्य पदक प्राप्त किया।दोनों खिलाड़ियों की इस उपलब्धि में उनकी महिला कोच भुनेश्वरी निषाद की महत्वपूर्ण भूमिका रही। भुनेश्वरी ने प्रतियोगिता के दौरान खिलाड़ियों को तकनीकी मार्गदर्शन दिया।द हेल्थ प्लैनेट जिम की इस उपलब्धि पर जिम परिवार में खुशी का माहौल है। जिम के संचालक और राष्ट्रीय खिलाड़ी रितु साहू, मुख्य प्रशिक्षक दीपक साहू, प्रशिक्षक मार्तंड सिंह, सक्षम यादव, सौरभ गुप्ता, चंचल रामटेके, चंदू साहू सहित जिम के सभी सदस्यों ने माही और किंजल को बधाई दी। सभी ने उनके उज्जवल भविष्य की कामना करते हुए कहा कि बेटियों ने दल्लीराजहरा का नाम प्रदेश स्तर पर गौरवान्वित किया है।पिछले कुछ वर्षों से दल्ली राजहरा खेलों में लगातार आगे बढ़ रहा है। द हेल्थ प्लैनेट जिम से निकली खिलाड़ियां राज्य और राष्ट्रीय स्तर पर पदक जीतकर क्षेत्र का नाम रोशन कर रही हैं।जिम संचालक रितु साहू ने कहा कि हमारा लक्ष्य ग्रामीण और शहरी क्षेत्र की बेटियों को खेल से जोड़कर उन्हें आत्मनिर्भर बनाना है। आगे भी जिम से और खिलाड़ी निकलकर प्रदेश और देश का नाम रोशन करेंगे।

रायगढ़ लाईवलीहुड कॉलेज में आरपीएल के तहत निःशुल्क अल्पावधि प्रशिक्षण

रायगढ़, 12 अगस्त। प्रधानमंत्री कौशल विकास योजना के अंतर्गत आर.पी.एल. (रिकग्निशन ऑफ प्रायर लर्निंग) के तहत रायगढ़ जिले के लाईवलीहुड कॉलेज में 30 घंटे (4 से 8 दिन) का निःशुल्क एवं गैर-आवासीय अल्पावधि प्रशिक्षण प्रारंभ किया जा रहा है। इस प्रशिक्षण में पहले से इलेक्ट्रिशियन, जल वितरण संचालक (प्लंबर), सोलर पी.व्ही. इंस्टालर (सूर्यमित्र) एवं जनरल ड्यूटी असिस्टेंट के रूप में कार्य कर रहे अथवा संबंधित कार्य का अनुभव रखने वाले 18 से 59 वर्ष के हितग्राहियों को प्रशिक्षण दिया जाएगा। प्रशिक्षण पूर्ण करने के बाद हितग्राहियों को प्रमाण पत्र प्रदान किया जाएगा। प्रशिक्षण एवं प्रमाण पत्र प्राप्त करने के इच्छुक पात्र युवक-युवतियां लाईवलीहुड कॉलेज, केआईटी कॉलेज के पास, अग्रसेन आईटीआई के बगल में, उड़ीसा रोड, गढ़उमरिया, रायगढ़ में उपस्थित होकर अपना पंजीयन करा सकते हैं।

एक नजर

अतिरिक्त मुख्य अभियंता ने भाटापारा कार्यालय का निरीक्षण किया

भाटापारा,12 अगस्त (तछसं.)। के एस

भारती अतिरिक्त मुख्य अभियंता कार्यालय मुख्य अभियंता रायपुर ग्रामीण क्षेत्र रायपुर द्वारा उप संभाग भाटापारा कार्यालय निरीक्षण के दौरान उप संभाग भाटापारा भाटापारा जोन के स्टाफ का सुरक्षा उपकरणों का निरीक्षण किया गया एवं निरीक्षण के उपरांत कर्मचारियों के साथ बैठक कर विद्युत सुरक्षा के संबंध में विस्तार से चर्चा किया गया और सुरक्षा संबंधी नियमों का पालन करने संबंधी सुझाव दिए गए द्य बैठक मे होने वाली विद्युत दुर्घटना एवम दुर्घटना से बचाव के उपाय बताया गया,साथ ही साथ सुरक्षा संबंधी ड्रिल करने के उपरांत सुरक्षा शपथ लिया गया. उपरोक्त कार्यक्रम के दौरान भाटापारा संभाग से व्ही के राठिया कार्यपालन अभियंता, वासुदेव साहू सहायक अभियंता भाटापारा जोन, अवेल्सन खेस सहायक अभियंता उप संभाग भाटापारा, मुकेश देवांगन कनिष्ठ अभियंता भाटापारा ग्रामीण एवं बहुत संख्या में लाइन कर्मचारी उपस्थित रहे।

पोस्ट मैट्रिक छात्रवृत्ति के आवेदनों का 30 अगस्त तक करें निराकरण

रायगढ़, 12 अगस्त । पोस्ट मैट्रिक छात्रवृत्ति वर्ष 2026-27 की प्रगति एवं छात्रवृत्ति वितरण प्रक्रिया की समीक्षा को लेकर आज कलेक्टोरेट सभाकक्ष में बैठक आयोजित की गई। बैठक की अध्यक्षता आदिवासी विकास विभाग के सहायक आयुक्त श्री श्रीकांत दुबे द्वारा की गई। बैठक में जिले के सभी शासकीय एवं अशासकीय महाविद्यालयों के प्राचार्य एवं छात्रवृत्ति प्रभारी उपस्थित रहे। इस दौरान नवीन एवं नवीनीकरण छात्रवृत्ति आवेदनों के निराकरण, दस्तावेज सत्यापन, आधार सीडिंग, बैंक खातों की स्थिति तथा लंबित प्रकरणों सहित छात्रवृत्ति प्रक्रिया से जुड़े विभिन्न बिंदुओं पर विस्तार से चर्चा की गई।

समीक्षा बैठक में स्पष्ट किया गया कि पोस्ट मैट्रिक छात्रवृत्ति वर्ष 2026-27 के नवीन एवं नवीनीकरण आवेदनों को 30 अगस्त 2026 तक स्वीकृत किया जाना है, ताकि पात्र विद्यार्थियों को छात्रवृत्ति की राशि 18 सितंबर 2026 तक अंतरित की जा सके। जिले में छात्रवृत्ति के कम आवेदन प्राप्त होने के संबंध में शासकीय एवं अशासकीय महाविद्यालयों के प्राचार्यों तथा छात्रवृत्ति प्रभारियों से जानकारी ली गई। महाविद्यालयों द्वारा बताया गया कि कई संस्थानों में प्रवेश प्रक्रिया अभी जारी है तथा 14 अगस्त तक प्रवेश प्रक्रिया पूरी होने की संभावना है। इसके बाद छात्रवृत्ति के पात्र विद्यार्थियों द्वारा आवेदन किए जाने की संख्या में वृद्धि होने की संभावना है।

स्वतंत्रता दिवस पर रायगढ़ के शहीद कर्नल विप्लव त्रिपाठी स्टेडियम में होगा जिला स्तरीय मुख्य समारोह

रायगढ़, 12 अगस्त। स्वतंत्रता दिवस को गरिमामय एवं भव्य रूप से मनाने के लिए रायगढ़ जिला प्रशासन द्वारा तैयारियां शुरू कर दी गई हैं। आगामी 15 अगस्त को शहीद कर्नल विप्लव त्रिपाठी स्टेडियम में जिला स्तरीय मुख्य समारोह आयोजित होगा। समारोह के मुख्य अतिथि प्रदेश के वित्त मंत्री एवं रायगढ़ विधायक श्री ओपी चौधरी होंगे, जो प्रातः 9 बजे ध्वजारोहण करेंगे। वहीं 13 अगस्त को अंतिम रिहर्सल आयोजित किया जाएगा। मुख्य समारोह की तैयारियों का जायजा लेने कलेक्टर श्री मयंक चतुर्वेदी ने आज स्टेडियम का निरीक्षण किया और संबंधित अधिकारियों को आवश्यक दिशा-निर्देश दिए। कलेक्टर ने समारोह स्थल पर पहुंचकर मुख्य मंच, बैठक व्यवस्था, सुरक्षा, पार्किंग, विद्युत आपूर्ति, पेयजल सहित विभिन्न व्यवस्थाओं का बारीकी से निरीक्षण किया। उन्होंने अधिकारियों को सभी तैयारियां समय-सीमा में पूरा करने के निर्देश दिए।कलेक्टर ने कहा कि स्वतंत्रता दिवस राष्ट्रीय गौरव से जुड़ा महत्वपूर्ण पर्व है। जिला स्तरीय समारोह पूरी गरिमा, अनुशासन और उत्साह के साथ संपन्न हो, इसके लिए सभी अधिकारी अपने दायित्वों का गंभीरता से निर्वहन करें। स्वतंत्रता दिवस समारोह को पूरी तरह व्यवस्थित एवं गरिमापूर्ण बनाने के लिए 13 अगस्त को अंतिम रिहर्सल आयोजित किया जाएगा। इस दौरान ध्वजारोहण, परेड, मार्चपास्ट, सलामी, सांस्कृतिक कार्यक्रमों तथा समारोह से जुड़ी अन्य व्यवस्थाओं का पूर्वाभ्यास किया जाएगा।

जिले में 650.9 मि.मी.औसत वर्षा दर्ज

रायगढ़, 12 अगस्त। रायगढ़ जिले में 11 अगस्त तक 650.9 मि.मी.औसत वर्षा दर्ज की गई है। बीते 24 घंटे में जिले में 2.1 मिली मीटर औसत वर्षा हुई है। भू-अभिलेख शाखा से प्राप्त जानकारी के अनुसार 1 जून 2026 से अब तक जिले के रायगढ़ तहसील में 811.6 मिली मीटर, पुसौर में 676.8, खरसिया में 567.1, घरघोड़ा में 469.3, तमनार में 884.5, लैलूंगा में 532.8, मुकडेगा में 519.3, धरमजयगढ़ में 437.2, छाल में 733.5 एवं कापू में 877.3 मिली मीटर वर्षा दर्ज की गई है।

छुरा-गरियाबंद मुख्य मार्ग को चौड़ा एवं मजबतू करने के लिए 164.09 करोड़ की राशि का प्रावधान किया

■ तरुण छत्तीसगढ़ संवाददाता

छुरा, 12 अगस्त। छुरा से गरियाबंद मुख्य सड़क मार्ग के चौड़ीकरण एवं मजबूतीकरण की दिशा में महत्वपूर्ण पहल सामने आई है। लोक निर्माण विभाग, संभाग गरियाबंद द्वारा जारी पत्र के अनुसार गरियाबंद-छुरा-कोमाखान राज्य मार्ग के 41.00 किलोमीटर मार्ग के मजबूतीकरण एवं चौड़ीकरण कार्य को वर्ष 2026-27 के बजट में शामिल किया गया है।

विभागीय पत्र में बताया गया है कि उक्त कार्य के लिए ?16,409.28 लाख (लगभग ?164.09 करोड़) की राशि का विस्तृत प्राक्कलन तैयार कर प्रशासकीय स्वीकृति के लिए लोक निर्माण विभाग के उच्च कार्यालय को भेजा गया है। वर्तमान में इसकी प्रशासकीय स्वीकृति अपेक्षित है। स्वीकृति प्राप्त होने के उपरांत निर्माण कार्य शीघ्र प्रारंभ किए जाने की बात विभाग ने कही है।

यह जानकारी छुरा से गरियाबंद मुख्य मार्ग के चौड़ीकरण की मांग को लेकर नगर पंचायत छुरा की अध्यक्ष लुकेश्वरी थानसिंग निषाद द्वारा किए गए प्रयासों के संदर्भ में सामने आई है। उन्होंने इस महत्वपूर्ण कार्य के लिए लोक निर्माण विभाग, जिला गरियाबंद के प्रति हार्दिक धन्यवाद एवं आभार व्यक्त किया है। नगर पंचायत अध्यक्ष ने कहा कि छुरा-गरियाबंद मुख्य सड़क मार्ग का चौड़ीकरण एवं मजबूतीकरण क्षेत्र के विकास, बेहतर आवागमन और सड़क सुरक्षा की दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण है। उन्होंने इस मांग को शासन-प्रशासन तक पहुंचाने तथा कार्य को गति देने में सहयोग के लिए राजिम विधानसभा क्षेत्र के विधायक रोहित साहू का भी विशेष आभार व्यक्त किया।नगर पंचायत अध्यक्ष लुकेश्वरी थानसिंग निषाद ने कहा कि ÷छुरा के विकास के लिए हमारा प्रयास निरंतर जारी रहेगा। विकसित, स्वच्छ एवं सुंदर छुरा हमारा संकल्प है। इस सड़क के चौड़ीकरण एवं मजबूतीकरण से छुरा क्षेत्र के लोगों को आवागमन में सुविधा मिलने के साथ-साथ सड़क दुर्घटनाओं में कमी और क्षेत्र के आर्थिक एवं व्यावसायिक विकास को भी गति मिलने की उम्मीद है।

सिकल सेल मरीजों को एक ही मंच पर जांच उपचार और सामाजिक सुरक्षा का मिला सहारा

■ तरुण छत्तीसगढ़ संवाददाता

रायगढ़, 12 अगस्त । सिकल सेल रोग से प्रभावित बच्चों एवं मरीजों को समय पर जांच, विशेषज्ञ चिकित्सकीय परामर्श, उपचार तथा सामाजिक सुरक्षा योजनाओं से जोड़ने के उद्देश्य से जिला चिकित्सालय रायगढ़ में विशेष सिकल सेल स्वास्थ्य जांच एवं सामाजिक कल्याण शिविर का आयोजन किया गया। जिला स्वास्थ्य विभाग रायगढ़ द्वारा यूनिसेफ छत्तीसगढ़ एवं एमसीसीआर ट्रस्ट के सहयोग से आयोजित इस शिविर में मरीजों को स्वास्थ्य एवं सामाजिक कल्याण से जुड़ी विभिन्न सेवाएं एक ही मंच पर उपलब्ध कराई गईं। शिविर में 1 से 18 वर्ष आयु वर्ग के बच्चों सहित कुल 42 मरीजों की जांच की गई, जबकि 34 पात्र मरीजों को दिव्यांगता प्रमाण पत्र प्रदान किए गए।स्क्रीनिंग में सिकल सेल रोग एवं वाहक की हुई पहचान, मरीजों को दिया गया आवश्यक परामर्शशिविर में सिकल सेल रोग एवं वाहक की पहचान के लिए आवश्यक स्क्रीनिंग की गई।

जल जीवन मिशन के कार्यों में लाएं तेजी, लापरवाही पर होगी सख्त कार्रवाई : कलेक्टर

■ तरुण छत्तीसगढ़ संवाददाता

रायगढ़, 12 अगस्त । कलेक्टर श्री मयंक चतुर्वेदी की अध्यक्षता में आज कलेक्टोरेट सभाकक्ष में जिला जल एवं स्वच्छता मिशन (डीडब्ल्यूएसएम) की समीक्षा बैठक आयोजित हुई। बैठक में जिले में जल जीवन मिशन के अंतर्गत संचालित विभिन्न योजनाओं की प्रगति, लंबित कार्यों, पूर्ण हो चुकी योजनाओं तथा आगामी कार्ययोजना की विस्तृत समीक्षा की गई। कलेक्टर ने जल जीवन मिशन के कार्यों को शासन की प्राथमिकता बताते हुए सभी संबंधित अधिकारियों को आपसी समन्वय के साथ कार्य करने और निर्धारित समय-सीमा में योजनाओं को पूर्ण कराने के निर्देश दिए। बैठक में जिला पंचायत के मुख्य कार्यपालन अधिकारी श्री अभिजीत बबन पठारे, सहायक कलेक्टर श्री गोकुल आर.के., लोक स्वास्थ्य यांत्रिकी विभाग की कार्यपालन अभियंता श्रीमती प्रतिभा नवरतन, सहायक अभियंता, उप अभियंता सहित जिला जल एवं स्वच्छता मिशन के अन्य सदस्य उपस्थित रहे।

कलेक्टर ने समूह नल जल योजनाओं के लंबित कार्यों की विस्तार से जानकारी ली। उन्होंने कहा कि जिन योजनाओं के कार्य प्रगति पर हैं, उन्हें निर्धारित समय-सीमा के भीतर गुणवत्तापूर्वक पूरा किया जाए, ताकि ग्रामीण क्षेत्रों में लोगों को नियमित एवं पर्याप्त मात्रा में पेयजल की सुविधा उपलब्ध हो सके। कलेक्टर ने जल जीवन मिशन के कार्यों में रुचि नहीं लेने तथा लंबे समय से कार्य बंद रखकर योजनाओं की प्रगति में बाधा उत्पन्न करने वाले ठेकेदार मेसर्स आदिशक्ति इंटरप्राइजेस, रायगढ़ के विरुद्ध सख्त कानूनी कार्रवाई किए जाने के निर्देश दिए। उन्होंने अधिकारियों को कार्यों की लगातार निगरानी करने तथा लापरवाही पाए जाने पर संबंधित एजेंसी के विरुद्ध नियमानुसार कार्रवाई सुनिश्चित करने को कहा। उन्होंने स्पष्ट किया कि जल जीवन मिशन के अंतर्गत स्वीकृत योजनाओं का उद्देश्य ग्रामीण परिवारों तक नल के माध्यम से सुरक्षित एवं नियमित पेयजल पहुंचाना है। इसलिए निर्माण कार्यों में गुणवत्ता, समय-सीमा और निर्धारित तकनीकी मानकों से किसी भी प्रकार का समझौता नहीं किया जाना चाहिए।

बैठक में जल जीवन मिशन 2.0 के अंतर्गत स्वीकृत कार्यों की अद्यतन प्रगति एवं उनकी वास्तविक जमीनी स्थिति की समीक्षा की गई।

खरीफ फसलों की सुरक्षा के लिए 14 अगस्त तक कराएं बीमा

■ तरुण छत्तीसगढ़ संवाददाता

रायगढ़, 12 अगस्त। खरीफ वर्ष 2026 में प्राकृतिक आपदाओं एवं मौसम की अनिश्चितता से फसलों को होने वाले नुकसान से किसानों को आर्थिक सुरक्षा प्रदान करने के उद्देश्य से प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना का जिले में व्यापक रूप से क्रियान्वयन किया जा रहा है। खरीफ फसलों का बीमा कराने की अंतिम तिथि 14 अगस्त 2026 निर्धारित है। कृषि विभाग ने जिले के किसानों से अपील की है कि अंतिम तिथि का इंतजार किए बिना समय रहते अपनी धान एवं अन्य अधिसूचित फसलों का बीमा अवश्य कराएं। मौसम में संभावित बदलाव एवं अनियमित वर्षा जैसी परिस्थितियों को देखते हुए किसानों के लिए फसल बीमा कराना महत्वपूर्ण है। कृषि विभाग ने किसानों से आग्रह किया है कि वे प्राकृतिक आपदाओं, सूखा, असमान वर्षा सहित मौसम संबंधी जोखिमों से अपनी फसल को आर्थिक सुरक्षा देने के लिए प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना का लाभ लें।

बैंकों में पहुंचकर बीमा प्रक्रिया की ली जानकारी

फसल बीमा योजना के सुचारू संचालन एवं किसानों को सुविधा उपलब्ध कराने के उद्देश्य से एग्रीकल्चर इंश्योरेंस कंपनी ऑफ इंडिया लिमिटेड के क्षेत्रीय कार्यालय रायपुर से प्रबंधक श्री आशीष टोप्पो एवं जिला समन्वयक श्री संजीव साहू द्वारा जिले के विभिन्न बैंक शाखाओं का दौरा किया गया। इस दौरान फसल बीमा से संबंधित प्रक्रियाओं की समीक्षा की गई तथा बैंक अधिकारियों से किसानों के बीमा प्रस्ताव समय पर पोर्टल पर दर्ज करने का आग्रह किया गया।

विफल एवं लंबित बीमा दावा राशि के भुगतान के लिए विशेष अभियान

प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना एवं पुनर्गठित मौसम आधारित फसल बीमा योजना के अंतर्गत विगत वर्षों की विफल अथवा लंबित दावा राशि के भुगतान के लिए भी विशेष अभियान चलाया जा रहा है। ऐसे बीमित किसान जिनकी दावा राशि बैंक खाता बंद होने, नाम में अंतर, निष्क्रिय बैंक खाता अथवा बैंक खाते से आधार लिंक नहीं होने जैसे कारणों से भुगतान नहीं हो सकी है, वे अपने नवीनतम बैंक खाते की जानकारी उपलब्ध कराएं तथा खाते को आधार से सीडिंग्धलिंकिंग कराएं। इससे लंबित दावा राशि प्राप्त करने में सहायता मिलेगी।

बैंक, सीएससी या अधिकृत बीमा प्रतिनिधि से कराएं फसल का बीमा

कृषि विभाग रायगढ़ ने किसानों से अपील की है कि वे 14 अगस्त 2026 तक अपने नजदीकी बैंक शाखा, लोक सेवा केंद्र (सीएससी) अथवा अधिकृत बीमा प्रतिनिधि से संपर्क कर धान एवं अन्य अधिसूचित खरीफ फसलों का बीमा जरूर कराएं। कृषि विभाग ने कहा है कि प्राकृतिक आपदाओं एवं मौसम की अनिश्चितता से होने वाले फसल नुकसान की स्थिति में आर्थिक सुरक्षा प्राप्त करने के लिए प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना किसानों के लिए महत्वपूर्ण सुरक्षा कवच है।

शिविर

घरघोड़ा में बच्चों के लिए गैर-संचारी रोग स्वास्थ्य जांच शिविर आयोजित

रायगढ़, 12 अगस्त । जिला स्वास्थ्य विभाग द्वारा यूनिसेफ छत्तीसगढ़ एवं एमसीसीआर ट्रस्ट के सहयोग से घरघोड़ा विकासखंड में बच्चों के लिए विशेष गैर-संचारी रोग स्वास्थ्य जांच शिविर आयोजित किया गया। शिविर में 1 से 18 वर्ष आयु वर्ग के 50 से अधिक बच्चों की स्वास्थ्य जांच की गई। जांच के दौरान 11 बच्चे सिकल सेल वाहक (एएस पॉजिटिव) तथा 6 बच्चे सिकल सेल रोग (एसएस पॉजिटिव) पाए गए। सभी चिन्हित बच्चों को आवश्यक जांच, चिकित्सकीय परामर्श एवं उपचार के लिए संबंधित स्वास्थ्य संस्थानों में रेफर किया गया।

डीएमएफ और विभागीय योजनाओं की मदद से लैलूंगा में सुगंधित जवाफूल की खेती को मिल रहा विस्तार

रायगढ़, 12 अगस्त। लैलूंगा क्षेत्र की पहचान बन चुके सुगंधित जवाफूल धान की खेती को विस्तार देने के लिए जिला प्रशासन द्वारा किसानों को निरंतर सहयोग प्रदान किया जा रहा है। डीएमएफ मद और विभागीय योजनाओं के माध्यम से किसानों को हरी खाद के लिए ढैंचा बीज, जैविक तरल खाद तैयार करने के ड्रम, पैडी ट्रांसप्लांटर, माइक्रो न्यूट्रिएंट सहित विभिन्न कृषि आदान अनुदान पर उपलब्ध कराए जा रहे हैं। इससे क्षेत्र में जवाफूल की खेती का रकबा बढ़ने के साथ किसानों को बेहतर बाजार और मूल्य की संभावनाएं मिल रही हैं।जिला प्रशासन द्वारा जवाफूल की खेती के विस्तार के लिए इस वर्ष डीएमएफ मद से लगभग 48 लाख रुपये की सहायता स्वीकृत की गई है। इसके माध्यम से करीब 1200 किसानों को सुगंधित जवाफूल की खेती के लिए हरी खाद के रूप में ढैंचा बीज वितरित किया गया है। इसके साथ ही विभागीय योजनाओं के तहत आवश्यक कृषि आदान भी उपलब्ध कराए जा रहे हैं। इस पहल का उद्देश्य लैलूंगा की पारंपरिक सुगंधित धान किस्म को संरक्षित करते हुए अधिक से अधिक किसानों को इससे जोड़ना और उनकी आय के नए अवसर विकसित करना है। लैलूंगा निवासी मुक्तेश्वर प्रधान बताते हैं कि वे इस वर्ष करीब दो एकड़ में सुगंधित जवाफूल धान की खेती कर रहे हैं।

समाचार संक्षेप

रायगढ़ रेलवे स्टेशन पर 8 महत्वपूर्ण ट्रेनों के ठहराव की मांग, रेलवे बोर्ड चेयरमैन से सांसद देवेन्द्र प्रताप सिंह ने की मुलाकात

■ तरुण छत्तीसगढ़ संवाददाता

रायगढ़, 12 अगस्त । रायगढ़वासियों की वर्षों पुरानी मांग एवं यात्रियों की सुविधा को ध्यान में रखते हुए राज्यसभा सांसद श्री देवेन्द्र प्रताप सिंह ने नई दिल्ली में रेलवे बोर्ड के चेयरमैन श्री सतीश कुमार से मुलाकात कर रायगढ़ रेलवे स्टेशन पर महत्वपूर्ण ट्रेनों के ठहराव की मांग को लेकर विस्तृत चर्चा की।सांसद श्री सिंह ने रेलवे बोर्ड चेयरमैन को सौंपे मांग-पत्र में पुणे हमसफर, वास्को डिगामा सहित 8 महत्वपूर्ण ट्रेनों का रायगढ़ रेलवे स्टेशन पर ठहराव सुनिश्चित करने की मांग रखी। उन्होंने कहा कि रायगढ़ छत्तीसगढ़ का एक महत्वपूर्ण औद्योगिक एवं व्यावसायिक केंद्र है। बड़ी संख्या में लोग रोजगार, व्यापार, शिक्षा एवं स्वास्थ्य संबंधी कार्यों के लिए रायगढ़ से देश के विभिन्न हिस्सों की यात्रा करते हैं। ऐसे में प्रमुख ट्रेनों के ठहराव से क्षेत्र के हजारों यात्रियों को सीधा लाभ मिलेगा।सांसद श्री सिंह ने कहा कि रायगढ़ का रेलवे से संबंध केवल यातायात सुविधा तक सीमित नहीं है, बल्कि इसके पीछे क्षेत्र के विकास और जनसहयोग की ऐतिहासिक विरासत भी जुड़ी हुई है। रायगढ़ के विकास एवं रेल सुविधा के विस्तार के लिए क्षेत्र के पूर्वजों द्वारा अपनी भूमि तक दान किए जाने का उल्लेख करते हुए उन्होंने कहा कि आज रायगढ़वासियों की रेल सुविधाओं से जुड़ी मांगों को प्राथमिकता मिलना जनहित की दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण है। उन्होंने विश्वास व्यक्त किया कि रेलवे बोर्ड रायगढ़वासियों की इस महत्वपूर्ण मांग पर शीघ्र सकारात्मक एवं जनहितकारी निर्णय लेगा। उन्होंने कहा कि रायगढ़ की रेल सुविधाओं का विस्तार क्षेत्र के आर्थिक, औद्योगिक एवं सामाजिक विकास को और गति प्रदान करेगा। इस अवसर पर सांसद श्री सिंह ने सांसद श्री जगदंबिका पाल से भी सौजन्य भेंट की। इस दौरान विभिन्न महत्वपूर्ण विषयों पर सकारात्मक चर्चा एवं विचार-विमर्श हुआ। सांसद श्री सिंह ने कहा कि रायगढ़ की सुविधा और रायगढ़ का विकास उनकी प्राथमिकता है तथा क्षेत्रवासियों की मूलभूत सुविधाओं से जुड़े विषयों को वे निरंतर संसद एवं संबंधित मंत्रालयों के समक्ष उठाते रहेंगे।

एक नजर

स्वतंत्रता दिवस पर सीआरपीएफ बैंड दे रहा है देशभक्ति का संदेश

रायपुर,12 अगस्त। स्वतंत्रता दिवस की 80वीं पावन वर्षगांठ के सुअवसर पर राजधानी रायपुर का कोना-कोना 'वंदे मातरम्' और 'आजादी का महोत्सव' के संगीतमय स्वरों से सराबोर होने जा रहा है। गृह मंत्रालय, भारत सरकार और केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल महानिदेशालय के दिशा-निर्देशों के तहत ग्रुप केन्द्र सीआरपीएफ, रायपुर द्वारा शहर के प्रमुख सार्वजनिक स्थानों, शैक्षणिक संस्थानों और मॉल में एक भव्य एवं आकर्षक 'बैंड डिस्प्ले' कार्यक्रम की श्रृंखला आयोजित की जा रही है। 7 अगस्त से शुरू हुआ यह देशभक्ति पूर्ण संगीतमय सफर 15 अगस्त तक शहरवासियों को राष्ट्रीय भावना के अनूठे रंग में रंगता रहेगा। जवानों के उत्कृष्ट बैंड दस्ते द्वारा प्रस्तुत की जा रही मनमोहक धुनों के माध्यम से जहाँ एक ओर देश के वीरों के शौर्य और बलिदान को नमन किया जा रहा है, वहीं दूसरी ओर आम जनता में देशभक्ति के प्रति एक नया उत्साह फूंकने का प्रयास हो रहा है। कार्यक्रम की रूपरेखा इस तरह तय की गई है कि शहर के अधिक से अधिक लोग इस गौरवमयी आयोजन के साक्षी बन सकें। सेरीखेड़ी में 12 अगस्त को जोरा मॉल में शाम 4 से 5 बजे तक खरीदारी और मनोरंजन के लिए आए परिवारों को देशप्रेम के गानों से मंत्रमुग्ध किया जाएगा। मोंटेसरी स्कूल जीसी में 13 अगस्त को सुबह 10 से 10:30 बजे तक विशेष बैंड प्रदर्शन का आयोजन किया जाएगा। इसी तरह ?14 एवं 15 अगस्त स्वतंत्रता दिवस की पूर्व संध्या तथा मुख्य पर्व पर अटल नगर स्थित बालको मेडिकल सेंटर में शाम 4 से 5 बजे तक राष्ट्रभक्ति धुनों का भव्य समापन होगा। ग्रुप केन्द्र सीआरपीएफरायपुर के कमान्डेंट आशीष यादव ने राजधानी की समस्त प्रबुद्ध जनता, युवाओं, महिलाओं एवं बच्चों से इस गरिमामयी आयोजन में भारी संख्या में शामिल होकर जवानों का उत्साहवर्धन करने और स्वतंत्रता के इस पावन पर्व को एक साथ मिलकर यादगार बनाने का आह्वान किया है।

सुखलाल का पक्का आशियाना का सपना हुआ साकार

रायपुर, 12 अगस्त। मौसम की मार झेलते जर्जर कच्चे मकान की छत, बारिश में टपकता पानी और हर पल बनी रहने वाली अनहोनी की आशंका–यह नारायणपुर जिले की ग्राम पंचायत बावड़ी निवासी श्री सुखलाल और उनके परिवार का रोजाना का संघर्ष था। आर्थिक तंगी के कारण एक मजबूत और पक्का घर बनाना उनके लिए किसी सपने से कम नहीं था, लेकिन केंद्र सरकार की प्रधानमंत्री आवास योजना-ग्रामीण ने सुखलाल के परिवार के इस वर्षों पुराने सपने को हकीकत में बदल दिया है। सुखलाल का परिवार वर्षों से एक ऐसे कच्चे मकान में रहने को विवश था, जहां हर बदलता मौसम नई चुनौतियां लेकर आता था। विशेष रूप से मानसून के दौरान छत से पानी टपकने के कारण पूरे परिवार की रातें जागकर बीतती थीं। आर्थिक सीमाएं आड़े आने के कारण पक्का निर्माण असंभव सा लगता था। ऐसे विषम परिस्थितियों में 'प्रधानमंत्री आवास योजना-ग्रामीण' परिवार के लिए एक संबल बनकर आई। योजना के तहत पारदर्शी प्रक्रिया से सुखलाल के परिवार का चयन हुआ और वित्तीय सहायता राशि सीधे उनके बैंक खाते में हस्तांतरित की गई। शासन की इस सहायता और परिवार के समर्पण से पुराने कच्चे ढांचे की जगह एक मजबूत, सुरक्षित और पक्का आशियाना खड़ा हो गया। नए पक्के घर के निर्माण ने न केवल प्राकृतिक आपदाओं से सुरक्षा प्रदान की है, बल्कि परिवार के सामाजिक और मानसिक जीवन में भी बड़ा बदलाव लाया है। अब बारिश में छत से पानी टपकने या ठंड और गर्मी के प्रकोप का भय समाप्त हो चुका है। पहले जहां मौसम की अनिश्चितताओं के बीच पढ़ाई बाधित होती थी, वहीं अब सुरक्षित और शांत माहौल मिलने से बच्चे पूरी एकाग्रता के साथ अपनी पढ़ाई पर ध्यान केंद्रित कर पा रहे हैं।पक्के मकान ने परिवार को सामाजिक प्रतिष्ठा और आत्म-सम्मान की नई पहचान दी है। श्री सुखलाल ने कहा कि यह पक्का घर हमारे लिए सिर्फईंट और सीमेंट की चार दीवारें नहीं हैं।

निधन

सुशीला मालू

रायपुर 8 मई। रायपुर। मेरी माताजी श्रीमती सुशीला मालू(धर्मपत्नी स्व सुधीर चंद जी मालू) का आज निधन हो गया है। अंतिम यात्रा निवास स्थान जग्गी कॉम्पेक्स नेहरू नगर से आज शाम 4 बजे बजे मारवाड़ी श्मशान के लिए निकलेगी। वे शरद मालू की भाभी, शैलेन्द्र मालू की माता थी।

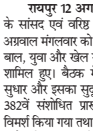

लक्ष्मी नारायण तिवारी

रायपुर। धमतरी निवासी लक्ष्मी नारायण तिवारी (दादू) का निधन हो गया वे स्वर्गीय सुरेन्द्र तिवारी के अनुज, अभिषेक, शंकर, वर्षा के पिता थे । उनकी अंतिम यात्रा उनके निज निवास दानीटोला धमतरी से आज दोपहर निकली।

सीएम हेल्पलाइन के आवेदनों का गुणवत्तापूर्ण निराकरण करें:सीईओ

- 9 से 17 अगस्त तक हर घर तिरंगा कार्यक्रम का आयोजन
- कलेक्टर सभा कक्ष में हुई साप्ताहिक समय सीमा की बैठक
- 14 अगस्त को स्वतंत्रता दौड़ का आयोजन

■ तरुण छत्तीसगढ़ संवाददाता

राजनांदगांव 12 अगस्त। मुख्य कार्यपालन अधिकारी जिला पंचायत श्री दुर्गा प्रसाद अधिकारी ने आज कलेक्टोरेट सभाकक्ष में साप्ताहिक समय-सीमा की बैठक ली। सीईओ जिला पंचायत श्री दुर्गा प्रसाद अधिकारी कहा कि शासन के निर्देशानुसार 9 से 17 अगस्त 2026 तक तीन चरणों में हर घर तिरंगा, हर घर स्वच्छता, स्वतंत्रता का उत्सव, स्वच्छता के संग थीम पर हर घर तिरंगा कार्यक्रम का आयोजन किया जा रहा है। उन्होंने इसके लिए अधिकारियों को आवश्यक तैयारी करने के निर्देश दिए। उन्होंने कहा कि सीएम हेल्पलाईन अंतर्गत निराकरण में जिला अग्रिम रहा है। आगे भी सीएम हेल्पलाईन के आवेदनों का गुणवत्तापूर्ण निराकरण करने के लिए कहा। उन्होंने कहा कि सभी विभाग ई-फाईल में लंबित प्रकरणों का प्राथमिकता से निराकरण करें। जिला पंचायत सीईओ ने कहा कि 18 अगस्त को नशा मुक्त भारत अंतर्गत राष्ट्रीय नशा विरोधी शपथ एवं अन्य कार्यक्रमों का आयोजन किया जाएगा। इसके लिए विद्यार्थियों एवं युवाओं को ई-शपथ के लिए प्रोत्साहित करें। उन्होंने कहा कि 14 अगस्त को अंतर्राष्ट्रीय हॉकी स्टेडियम से स्वतंत्रता दौड़ का आयोजन किया जाएगा। इसके लिए आवश्यक तैयारी करने के लिए कहा। जिला पंचायत सीईओ ने सीएम जनदर्शन, कलेक्टर जनदर्शन, सुशासन तिहार, पीजी एवं पीजीएन पोर्टल के लंबित प्रकरणों का शीघ्र निराकरण करने के निर्देश दिए।

सीईओ जिला पंचायत श्री दुर्गा प्रसाद अधिकारी ने किसानों को प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना से अधिक से अधिक लाभान्वित करें। एग्रीस्टेक ने किसानों का पंजीयन बढ़ाने के लिए कहा। हाई रिस्क वाली गर्भवती माताओं की सोनोग्राफी निजी डायग्नोस्टिक सोनोग्राफी कराने कहा तथा समय पर रिपोर्ट देने के लिए कहा। उन्होंने कहा कि घुमका ब्लाक को 24 दिसम्बर तक टीबी मुक्त करने की दिशा में प्राथमिकता से कार्य करें और प्रगति लाएं। हाई कोर्ट के लंबित प्रकरणों का समय पर निराकरण करने के लिए कहा। उन्होंने एचपीवी टीकाकरण, यूवीन पोर्टल, पोषण ट्रेकर, प्रधानमंत्री स्वनिधि योजना सहित शासन की विभिन्न योजनाओं के प्रगति की समीक्षा की। बैठक में अपर कलेक्टर श्री सीएल मारकण्डेय, अपर कलेक्टर श्री प्रेमप्रकाश शर्मा, नगर निगम आयुक्त श्री जीआर मरकाम, एसडीएम राजनांदगांव श्री गौतम पाटिल, एसडीएम डोंगरगांव श्री अनिकेत साहू, एसडीएम डोंगरगढ़ श्री विश्वास कुमार सहित जिला स्तरीय अधिकारी उपस्थित थे।

महतारी वंदन की 30वीं किस्त से इंदरानी की रक्षाबंधन की खुशियां हुई खास

- 30वीं किस्त मिलने पर बोलीं इंदरानी-हमारे विष्णु भइया ने तिहार से पहले दिया उपहार

रायपुर, 12 अगस्त। रक्षाबंधन का त्यौहार भाई-बहन के स्नेह और विश्वास का पर्व है। बहनें जहां अपने भाइयों की कलाई पर प्रेम और विश्वास की राखी बांधने की तैयारी करती हैं, वहीं इस बार कबीरधाम जिले की महिलाओं के लिए महतारी वंदन योजना की 30वीं किस्त भी खुशियों का एक खास उपहार लेकर आई है। रक्षाबंधन से ठीक पहले खाते में पहुंची एक हजार रुपये की राशि ने ग्राम राजानवागांव की इंदरानी मरकाम के चेहरे पर मुस्कान ला दी है। महतारी वंदन योजना की 30वीं किस्त मिलने की खुशी जाहिर करते हुए इंदरानी मरकाम मुख्यमंत्री श्री विष्णुदेव साय को आत्मीयता से 'विष्णु भइया' कहती हैं। वे कहती हैं कि हमारे विष्णु भइया ने रक्षाबंधन तिहार के पहले ही महतारी वंदन योजना की 30वीं किस्त हमारे खाते में डालकर हम बहनों को तोहफा दिया है। इसके लिए मैं मुख्यमंत्री श्री विष्णु देव साय जी को धन्यवाद देती हूं। इंदरानी के लिए यह राशि सिर्फ बैंक खाते में आई एक हजार रुपये की रकम नहीं, बल्कि अपनी छोटी-छोटी जरूरतें बिना किसी से मदद मांगे पूरी करने का भरोसा है। वे बताती हैं कि घर का जरूरी सामान लेना हो, बच्चों की छोटी जरूरतें पूरी करनी हों या अचानक कोई घरेलू खर्च सामने आए, महतारी वंदन की राशि काफी मददगार होती है। वे कहती हैं कि पहले छोटी-छोटी जरूरतों के लिए भी किसी से पैसे मांगने पड़ते थे। अब हर महीने खाते में राशि आ जाती है, तो अपने जरूरी सामान के लिए किसी के सामने हाथ फैलाने की जरूरत नहीं पड़ती।

रक्षाबंधन से पहले राशि मिलने से इंदरानी की खुशी और बढ़ गई है। वे कहती हैं कि अब किसी खास दिन या त्यौहार का इंतजार नहीं करना पड़ता। हर महीने राशि आती है, इसलिए जरूरत के समय उसका उपयोग कर लेती हूं। अब तो हर महीना ही तिहार जैसा लगता है। महतारी वंदन योजना के तहत पात्र विवाहित महिलाओं को प्रतिमाह एक हजार रुपये की आर्थिक सहायता सीधे बैंक खातों में दी जाती है। नियमित आर्थिक सहयोग से महिलाएं अपनी व्यक्तिगत जरूरतों के साथ परिवार की आवश्यकताओं में भी योगदान दे पा रही हैं और उनमें आत्मविश्वास बढ़ रहा है।

एनएसएम पब्लिक स्कूल अंबागढ़ चौकी में बच्चे टिफिन में हरी सामग्री लेकर आए

■ तरुण छत्तीसगढ़ संवाददाता

राजनांदगांव , 12 अगस्त। छत्तीसगढ़ के प्रथम पर्व हरेली की पूर्व संध्या पर एन एस एम पब्लिक स्कूल अंबागढ़ चौकी के बच्चों ने पर्व को ग्रीन - डे के रूप में परिवर्तित कर अपनी भावनाओं का प्रकृति अनुरूप प्रदर्शन किया । बच्चों ने आज विशेष रूप से अपने टिफिन में भी ग्रीन खाद्य सामग्री को स्थान दिया । अपने लंच पीरियड में बच्चों ने अपनी शिक्षिकाओं को लाई गई ग्रीन सामग्री दिखाकर चेहरे के हाव - भाव प्रकट किए । एन एस एम पब्लिक स्कूल अंबागढ़ चौकी की शिक्षिका श्रीमती आँचल योगी के मार्गदर्शन में श्रीमती माहेश्वरी देवी बाघमारे , झावेद निषाद सर , गार्गी शंकर मिश्रा सर , आबिद अहमद खान सर , श्रीमती आशनी दामले , सुश्री रचना साहू , सुश्री देविका जनेंद्र , सुश्री रोमा राजपूत , श्रीमती नजमा बेग तथा श्रीमती ज्योति नंदेश्वर ने बच्चों को व्यवस्थित तरीके से बैठाकर लंच कराया । शिक्षकों ने बच्चों को आज के पर्व की महत्ता भी बताई । उन्हें बताया गया कि सावन मास में चारों ओर हरियाली के साथ हरेली पर्व कृषकों को आनंद विभोर कर देता है । इस दिन कृषि उपकरणों की उपयोगिता भी बच्चों को बताई गई । प्री - प्राइमरी कक्षाओं में लगे बड़े स्मार्ट टी वी में बच्चों को हरेली पर्व के शानदार दृश्य भी दिखाए गए ।

दाऊदी बोहरा समाज के धर्मगुरु सैयदना मुफद्दल सैफुद्दीन ने रायपुर में समाज को दिया ईमानदार आजीविका का संदेश

■ तरुण छत्तीसगढ़ संवाददाता

रायपुर 12 अगस्त। दाऊदी बोहरा समाज के 53वें धर्मगुरु परम पावन सैयदना मुफद्दल सैफुद्दीन साहब ने मंगलवार, 11 अगस्त को आमानाका स्थित नवनिर्मित हसनी मस्जिद में रायपुर में एकत्रित करीब छह हजार दाऊदी बोहरा समाज के लोगों को संबोधित किया।

अपने प्रवचन में सैयदना साहब ने शहर के नाम रायपुर का उल्लेख करते हुए कहा कि गुजराती भाषा में 'राई' का अर्थ सरसों के छोटे से बीज से है। उन्होंने राई के उदाहरण के माध्यम से विनम्रता के साथ निरंतर और छोटे-छोटे प्रयास करते हुए आगे बढ़ने का महत्व समझाया।

उन्होंने क्षेत्र में उगाई और उत्पादित होने वाली चावल और लोहे की विशेषताओं का भी उल्लेख किया। इन उदाहरणों के माध्यम से सैयदना साहब ने मेहनत, धैर्य और दृढ़ता के मूल्यों पर जोर दिया। उन्होंने समाज के सदस्यों से शिक्षा के क्षेत्र में उत्कृष्टता हासिल करने तथा ईमानदार आजीविका अर्जित करने के लिए निरंतर प्रयास करते रहने का आह्वान किया।

देशभर के 100 से अधिक शहरों, कस्बों और गांवों से दाऊदी बोहरा समाज के लोग सैयदना साहब का प्रवचन सुनने के लिए रायपुर पहुंचे। अपने संबोधन में उन्होंने धार्मिक जीवन से जुड़े विषयों के साथ-साथ परिवार, व्यवसाय, समाज और व्यापक समाज के प्रति व्यक्ति की जिम्मेदारियों पर भी मार्गदर्शन दिया।

सैयदना साहब सोमवार, 10 अगस्त को मुंबई से रायपुर पहुंचे। यह पिछले 10 वर्षों में उनका रायपुर का पहला दौरा है।

रायपुर में दाऊदी बोहरा समाज के करीब 400 परिवार निवास करते हैं। इनमें से कई परिवार हार्डवेयर, कपड़ा और पावर टूल्स सहित विभिन्न क्षेत्रों में व्यवसाय से जुड़े हैं। समाज के सदस्य शहर में सामाजिक कल्याण से जुड़ी गतिविधियों में भी सक्रिय रूप से भाग लेते हैं, जिनमें खाद्य एवं पोषण सहायता के साथ-साथ पर्यावरण संरक्षण से जुड़े कार्यक्रम शामिल हैं।

प्रदेश में लक्ष्य की 94 प्रतिशत बोनी पूर्ण

रायपुर, 12 अगस्त। प्रदेश में खेती किसानी का कार्य जोरों पर हैं। राज्य में 11 अगस्त की स्थिति में राज्य के 45.62 लाख हेक्टेयर क्षेत्रों में लक्ष्य का 94 प्रतिशत बोनी पूर्ण हो चुकी है। इस खरीफ सीजन में 48.69 लाख हेक्टेयर क्षेत्र में बोनी का लक्ष्य निर्धारित किया गया है। मुख्यमंत्री श्री विष्णु देव साय ने किसानों को खेती-किसानी में सहुलियतें प्रदान करने के लिए सभी आवश्यक सहयोग करने संबंधित अधिकारियों निर्देशित किए गए हैं। उन्होंने किसानों को उनकी मांग के अनुसार सुगमता के साथ प्रमाणित खाद-बीज का वितरण करने को कहा हैं। खाद-बीज वितरण व्यवस्था में किसी भी प्रकार की लापरवाही पर कड़ी कार्यवाही करने के भी निर्देश दिए हैं। साथ ही सोसायटियों में पर्याप्त खाद-बीज का भण्डारण कर सतत निगरानी करने को कहा गया है। कृषि विकास एवं किसान कल्याण मंत्री श्री रामविचार नेताम के मार्गदर्शन में कृषि विभाग के अधिकारियों द्वारा इन पर निरंतर निगरानी रखी जा रही है। कृषि विभाग के अधिकारियों ने बताया कि प्रदेश के किसानों को अब तक 11.23 लाख मीट्रिक टन खाद और 4.55 लाख क्विंटल प्रमाणित बीज का वितरण किया जा चुका है। कृषि विभाग के अधिकारियों ने बताया कि प्रदेश में मानसून की बौछारों के साथ शुरू हुए खेती-किसानी में बोनी का रकबा भी निरंतर बढ़ते जा रहा है। राज्य में अब तक 45.62 लाख हेक्टेयर क्षेत्र में विभिन्न फसलों जैसे धान, मक्का, कोदो, कुटकी, अरहर, मूंग, मूंगफली, रामतिल आदि की बोनी हो चुकी है।

केंद्रीय पर्यटन परियोजनाओं को समय–सीमा में पूरा करना सर्वोच्च प्राथमिकता : डॉ. एस. भारतीदासन

रायपुर, 12 अगस्त। मंत्रालय महानदी भवन में आज पर्यटन विभाग के सचिव डॉ. एस. भारतीदासन ने राज्य में भारत सरकार द्वारा स्वीकृत केंद्रीय पर्यटन परियोजनाओं के निर्माण कार्यों की विस्तृत समीक्षा की। बैठक में स्वदेश दर्शन योजना 2.0, चैलेंज बेस्ड डेस्टिनेशन डेवलपमेंट (सीबीडीडी), स्पेशल असिस्टेंस स्कीम फॉर कैपिटल इन्वेस्टमेंट (एसएएससीआई) तथा प्रसाद योजना के अंतर्गत संचालित विभिन्न परियोजनाओं की कार्य प्रगति, पूर्णता की समय-सीमा, लंबित तकनीकी प्रक्रियाओं तथा निर्माण कार्यों की गुणवत्ता की विस्तार से समीक्षा की गई। सचिव पर्यटन डॉ. एस. भारतीदासन ने सभी परियोजनाओं को निर्धारित समय-सीमा में पूर्ण करने के निर्देश देते हुए कहा कि पर्यटन परियोजनाओं के निर्माण में अनावश्यक विलंब स्वीकार्य नहीं होगा। उन्होंने परियोजनावार कार्य प्रगति की नियमित निगरानी, प्रत्येक कार्य की पूर्णता की समय-सीमा निर्धारित करने तथा लंबित कार्यों के शीघ्र निराकरण के निर्देश दिए। उन्होंने कहा कि जिन परियोजनाओं में कार्य निर्धारित समय-सीमा से पीछे चल रहे हैं, उनके विलंब के कारणों की स्पष्ट समीक्षा की जाए तथा सुधारात्मक कार्ययोजना तैयार कर प्रत्येक कार्य घटक के लिए स्पष्ट समय-सारणी निर्धारित की जाए। निर्माण एजेंसियों द्वारा कार्य में अनावश्यक विलंब पाए जाने पर संबंधित एजेंसी की जवाबदेही तय करते हुए अनुबंधीय प्रावधानों के अनुसार आवश्यक कार्रवाई सुनिश्चित करने के निर्देश भी दिए। बैठक में तकनीकी स्वीकृति, स्ट्रक्चर वेटिंग सहित अन्य तकनीकी प्रक्रियाओं से संबंधित लंबित प्रकरणों की भी समीक्षा की गई। सचिव पर्यटन ने संबंधित विभागों से समन्वय स्थापित कर इन प्रकरणों का प्राथमिकता के आधार पर शीघ्र निराकरण कराने के निर्देश दिए, ताकि तकनीकी प्रक्रियाओं के कारण निर्माण कार्य प्रभावित न हों।

प्रसाद योजना के अंतर्गत डोंगरगढ़ में चल रहे कार्यों की समीक्षा करते हुए डॉ. भारतीदासन ने परियोजना को पूर्णता के निकट देखते हुए शेष कार्यों को शीघ्र पूरा कराने के निर्देश दिए। उन्होंने संबंधित क्रियान्वयन एजेंसियों को शेष कार्यों के लिए समयबद्ध कार्ययोजना तैयार कर निर्धारित अवधि में कार्य पूर्ण करने को कहा। बैठक में जशपुर जिले के बगीचा स्थित मयाली पर्यटन परियोजना तथा भोरमदेव कॉरिडोर पर्यटन परियोजना की प्रगति की भी समीक्षा की गई। सचिव पर्यटन ने इन परियोजनाओं में स्ट्रक्चर वेटिंग एवं तकनीकी स्वीकृति की प्रक्रिया प्राथमिकता से पूर्ण कराने के निर्देश दिए। उन्होंने स्थल पर किए गए प्रारंभिक कार्यों का तकनीकी परीक्षण कर उसकी रिपोर्ट प्रस्तुत करने को भी कहा, ताकि आगे के निर्माण कार्यों को निर्धारित तकनीकी मानकों एवं स्वीकृत कार्ययोजना के अनुरूप तेजी से आगे बढ़ाया जा सके।

घर-घर आन-बान और शान से फहराएं तिरंगा: मंत्री टंकराम वर्मा

रायपुर,12 अगस्त। देशभक्ति की भावना को जन-जन तक पहुंचाने और स्वच्छता के प्रति जनचेतना को सशक्त बनाने के लिए तिरंगा रैली में नागरिक बढ़-चढ़ कर हिस्सा ले रहे है। उच्च शिक्षा मंत्री श्री टंक राम वर्मा की अगुवाई में आज सारंगढ़ में भव्य तिरंगा यात्रा का आयोजन किया गया। भारत माता की पूजा-अर्चना के साथ शुरू हुई यह यात्रा भारत माता चौक, नंदा चौक और अटल परिसर से होते हुए रानी लक्ष्मी बाई कॉम्प्लेक्स पहुंचकर संपन्न हुई। यात्रा के दौरान हजारों स्कूली बच्चों के 'भारत माता की जय' और 'जय जवान, जय किसान' के ओजस्वी नारों से पूरा शहर देशभक्ति के रंग में रंग गया। तिरंगा यात्रा के समापन अवसर पर उच्च शिक्षा मंत्री श्री टंक राम वर्मा ने नागरिकों से अपने-अपने घरों पर शान से तिरंगा लहराने का आह्वान किया। उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में देशभर में तिरंगा यात्रा का आयोजन किया जा रहा है। तिरंगा हमारा राष्ट्रीय स्वाभिमान है, जिसकी रक्षा के लिए लाखों देशभक्तों ने अपना सर्वस्व न्योछावर कर दिया। इसका चक्र हमारे देश और प्रदेश की निरंतर प्रगति का प्रतीक है। जब बात तिरंगे की आती है, तो हम सभी जाति, पात और धर्म से ऊपर उठकर एक हो जाते हैं। उन्होंने झांसी की रानी, मंगल पांडे और भगत सिंह जैसे अमर बलिदानियों को नमन करते हुए उनके पदचिह्नों पर चलने की प्रेरणा दी।कार्यक्रम में जिला पंचायत अध्यक्ष और उपाध्यक्ष,पूर्व विधायक श्रीमती केराबाई मनहर, पूर्व सैनिकगण, जनप्रतिनिधि, कलेक्टर,पुलिस अधीक्षक,गणमान्य नागरिक और भारी संख्या में स्कूली बच्चे उपस्थित थे।

राष्ट्रीय परीक्षा एजेंसी को अधिक पारदर्शी, जवाबदेह और विश्वसनीय बनाने की जरूरत : बृजमोहन अग्रवाल

रायपुर 12 अगस्त। रायपुर लोकसभा क्षेत्र के सांसद एवं वरिष्ठ भाजपा नेता श्री बृजमोहन अग्रवाल मंगलवार को नई दिल्ली में शिक्षा, महिला, बाल, युवा और खेल संबंधी समिति की बैठक में शामिल हुए। बैठक में राष्ट्रीय परीक्षा एजेंसी में सुधार और इसका सुदृढ़ीकरण विषय से संबंधित 382वें संशोधित प्रारूप प्रतिवेदन पर विचार-विमर्श किया गया तथा प्रतिवेदन को स्वीकार किए जाने की प्रक्रिया पूरी की गई। बैठक में राष्ट्रीय परीक्षा एजेंसी (ह्ल्ञ्ज) की कार्यप्रणाली, परीक्षा व्यवस्था में सुधार, पारदर्शिता, जवाबदेही और अभ्यर्थियों के हितों से जुड़े विभिन्न महत्वपूर्ण पहलुओं पर चर्चा हुई। सांसद श्री बृजमोहन अग्रवाल ने कहा कि देश के लाखों विद्यार्थी और युवा अपने भविष्य की उम्मीद लेकर राष्ट्रीय स्तर की प्रतियोगी परीक्षाओं में शामिल होते हैं। ऐसे में परीक्षा प्रणाली का निष्पक्ष, पारदर्शी, सुरक्षित और भरोसेमंद होना अत्यंत आवश्यक है। किसी भी स्तर पर होने वाली छोटी सी कमी भी विद्यार्थियों की मेहनत और उनके भविष्य को प्रभावित कर सकती है। उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में केंद्र सरकार देश की शिक्षा व्यवस्था को आधुनिक, पारदर्शी और विद्यार्थी केंद्रित बनाने की दिशा में लगातार काम कर रही है। राष्ट्रीय परीक्षा एजेंसी को भी बदलते समय की आवश्यकताओं के अनुरूप और अधिक सक्षम बनाया जाना चाहिए। श्री अग्रवाल ने कहा कि तकनीक के इस दौर में परीक्षा प्रणाली को सुरक्षित बनाने के लिए अत्याधुनिक तकनीकी संसाधनों, मजबूत साइबर सुरक्षा, बेहतर परीक्षा प्रबंधन और प्रभावी शिकायत निवारण व्यवस्था पर विशेष ध्यान देने की आवश्यकता है। साथ ही, विद्यार्थियों की समस्याओं और उनकी वास्तविक परिस्थितियों को समझते हुए परीक्षा प्रक्रिया को अधिक संवेदनशील एवं सुगम बनाया जाना चाहिए। उन्होंने कहा कि हमारा उद्देश्य केवल परीक्षाएं आयोजित करना नहीं, बल्कि ऐसी विश्वसनीय व्यवस्था तैयार करना है जिस पर देश का हर विद्यार्थी और अभिभावक विश्वास कर सके।

पुस्तकालय हैं, ज्ञान के महासागर

रायपुर ,12 अगस्त। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के तहत नवप्रवेशी छात्र–छात्राओं के लिए ग्रंथालय विभाग द्वारा एक दिवसीय 'ग्रंथालय उन्मुखीकरण कार्यक्रम' का आयोजन शासकीय स्वामी आत्मानंद स्नातकोत्तर महाविद्यालय, नारायणपुर में किया गया। इस कार्यक्रम की मुख्य थीम पुस्तकालय होते हैं, ज्ञान के महासागर रखी गई थी, जिसका उद्देश्य विद्यार्थियों में अध्ययन की संस्कृति विकसित करना और उन्हें आधुनिक ग्रंथालय व्यवस्था से जोड़ना था। कार्यक्रम में महाविद्यालय के प्राचार्य डॉ. एस.आर. कुंजाम ने विद्यार्थियों को अपने संबोधन में पुस्तकालय के अधिकतम उपयोग और पुस्तकों से प्रगाढ़ संबंध बनाने पर बल दिया।

नाम परिवर्तन

सर्वसाधारण को सूचित किया जाता हैं कि मैं मुकेश मंडावी पिता जितेन्द्र मंडावी निवासी ग्राम कुम्हडाटोला पोष्ट-अंडी थाना-डोंगरगढ़, तहसील लाल बहादुर नगर जिला-राजनांदगांव छ.ग. का निवासी हूं मेरी पुत्री के आधार कार्ड में नाम यस कुमारी मांडवी YAS KUMARI MANDAVI पिता मुकेश कुमार मांडवी MUKESH KUMAR MANDAVI अंकित हैं एवं मैं अपनी पुत्री का नया नाम परिवर्तन कर नाम एस कुमारी मंडावी पिता मुकेश मंडावी AISH KUMARI MANDAVI D/O MUKESH MANDAVI के नाम से जाना एवं पहचाना जावे । सूचना जाने ।

भवदीय
(मुकेश मंडावी)

कार्यालय राजस्व निरीक्षक मण्डल रायपुर-3 तहसील रायपुर, जिला रायपुर

आम सूचना

एतद् द्वारा सर्व साधरण को सूचित किया जाता है कि ग्राम डूमरतालाब प.ह.न. 53 रा.नि.मं. रायपुर-2 तहसील व जिला रायपुर(छ.ग.) स्थित भूमि के संबंध में आवेदक शिखा पाण्डेय पति वैभव पाण्डेय निवासी रायपुर के द्वारा धारित भूमिस्वामी हक की भूमि खसरा नंबर 231/10 रकबा 0.0370 हे. का सीमांकन हेतु आवेदन न्यायालय नायब तहसीलदार रायपुर के समक्ष प्रस्तुत किये जाने के उपरान्त न्यायालय नायब तहसीलदार रायपुर के आदेश दिनांक 06/07/2026 के परिपालन में दिनांक 25/8/2026 को 2.00 बजे पश्चात किया जाना नियत है। अतएव उक्त भूमि के सभी बंटाकनधारी भूमिस्वामियों को सूचना दी जाती है कि उक्त तिथि व समय पर हल्का पटवारी कार्यालय में उपस्थित होकर उक्त खसरा नंबर के संबंध में जो भी उजर दावा अथवा आपत्ति हो तो समक्ष प्रस्तुत करें। आपकी अनुपस्थिति में सीमांकन कार्य किया जा सकता है। सीमांकन उपरांत किसी प्रकार की कोई आपत्ति मान्य नहीं होगा।

सो सूचना जाने।

राजस्व निरीक्षक
रायपुर-3 कोटा
तहसील व जिला रायपुर(छ.ग)

कार्यालय राजस्व निरीक्षक मण्डल रायपुर-3 तहसील रायपुर, जिला रायपुर

आम सूचना

एतद् द्वारा सर्व साधरण को सूचित किया जाता है कि ग्राम डूमरतालाब प.ह.न. 53 रा.नि.मं. रायपुर-2 तहसील व जिला रायपुर(छ.ग.) स्थित भूमि के संबंध में आवेदक सीमा मिश्रा पति विनोद मिश्रा निवासी अनुपम नगर रायपुर के द्वारा धारित भूमिस्वामी हक की भूमि खसरा नंबर 232/9 रकबा 0.0370 हे. का सीमांकन हेतु आवेदन न्यायालय नायब तहसीलदार रायपुर के समक्ष प्रस्तुत किये जाने के उपरान्त न्यायालय नायब तहसीलदार रायपुर के आदेश दिनांक 06/07/2026 के परिपालन में दिनांक 25/8/2026 को 1.00 बजे पश्चात किया जाना नियत है। अतएव उक्त भूमि के सभी बंटाकनधारी भूमिस्वामियों को सूचना दी जाती है कि उक्त तिथि व समय पर हल्का पटवारी कार्यालय में उपस्थित होकर उक्त खसरा नंबर के संबंध में जो भी उजर दावा अथवा आपत्ति हो तो समक्ष प्रस्तुत करें। आपकी अनुपस्थिति में सीमांकन कार्य किया जा सकता है। सीमांकन उपरांत किसी प्रकार की कोई आपत्ति मान्य नहीं होगा।

सो सूचना जाने।

राजस्व निरीक्षक
रायपुर-3 कोटा
तहसील व जिला रायपुर(छ.ग)

श्री विष्णु देव साय
माननीय मुख्यमंत्री, छत्तीसगढ़

श्री नरेन्द्र मोदी
माननीय प्रधानमंत्री

हमर छत्तीसगढ़ के पहिली लोक परब

हरेली तिहार

12 अगस्त 2026

के गाड़ा-गाड़ा बधाई

कृषकों का आर्थिक सशक्तीकरण

- ढाई वर्षों में विभिन्न योजनाओं के अंतर्गत किसानों के खाते में **₹1.50 लाख करोड़** से अधिक अंतरित
- **प्रधानमंत्री किसान सम्मान निधि :** **25 लाख** से अधिक किसानों को **₹11,277 करोड़** का भुगतान

दीनदयाल उपाध्याय भूमिहीन कृषि मजदूर कल्याण योजना

- भूमिहीन कृषि मजदूरों को प्रतिवर्ष **₹10,000** की आर्थिक सहायता

कृषि का आधुनिकीकरण

- जीएसटी 2.0 लागू होने से **कृषि उपकरण हुए सस्ते**

कृषक उन्नति योजना

- **₹3,100 प्रति क्विंटल** की दर से प्रति एकड़ **21 क्विंटल** धान खरीदी

फसल विविधीकरण को प्रोत्साहन

- धान के अतिरिक्त अन्य खरीफ फसलों की खेती पर प्रति एकड़ **₹15,000** की आदान सहायता

आसान ऋण सुविधा

- खाद- बीज की खरीदी के लिए **ब्याज मुक्त ऋण**

हरियर धरती, खुशहाल किसान
समृद्धि और जनकल्याण, सुशासन की पहचान

छत्तीसगढ़ संवाद आर. ओ.-48731/104

छत्तीसगढ़ जनसंपर्क | Visit us : /ChhattisgarhCMO /DPRChhattisgarh www.dprcg.gov.in

कौशल किशोर मिश्र प्रकाशक, मुद्रक, स्वामी की ओर से तरुण छत्तीसगढ़, तरुण छत्तीसगढ़ प्रेस टॉवर, प्रेस काम्पलेक्स, रजबंधा मैदान, रायपुर (छ.ग.) से मुद्रित एवं प्रकाशित प्रधान संपादक- कौशल किशोर मिश्र, पंजी. क्रं. 45088/85 डाक पं.छ.ग./रायपुर संभाग/33/2024-26